॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

वार्षिक विवरण

१९७८-१९७९

मनाथ सहगल
सभा मन्त्री

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा

मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली

डी० ए० वी० आन्दोलन के प्रणेता

...ा करके देश भर
...नों का

प्राक्कथन

इस वर्ष के विवरण प्रकाशन क्रमांश आदि में कुछ परिवर्तन किये गये हैं ताकि विवरण को अधिक संगत युक्त विस्तारपूर्वक ज्ञानवर्धक बनायी जा सके।

गत वर्ष सभा कार्य में कुछ कठिनाएं भी रही हैं। वेद प्रचार कार्य में कुछ तीव्रता आई है। उपदेशकों के अतिरिक्त सभा अधिकारियों और विशेषकर सभा प्रधान लाला सूरजभान जी का इसमें बहुत योगदान रहा है। इसी प्रकार उप सभाओं के विवरण से भी आपको ज्ञात होगा कि सम्बन्धित उप-सभा अधिकारियों ने भी प्रचार के लिए विशेष प्रयत्न किये हैं। उनके विवरण पृथक दिये गये हैं।

साप्ताहिक आर्य जगत तथा साहित्य विभाग ने भी अपना कार्य क्षेत्र बढ़ाया है। यह तथ्य उनकी इस वर्ष की आय से आपको विदित होगा।

इस वर्ष दो स्मारक निधियाँ—महात्मा आनन्द स्वामी स्मारक निधि एवं श्री रामसरन दास स्मारक निधि स्थापित की गई है जिनसे आगामी वर्षों में वेद प्रचार और सेवा कार्यों की और वृद्धि होगी।

हम आशा करते हैं कि सभा से सम्बन्धित आर्य समाजें इन कार्यों में अपनी जनशक्ति भी आगामी वर्ष में इसी अनुपात से बढ़ायेंगी तथा वेद प्रचार और सभा कार्य को समूचे रूप से प्रगति देंगे।

सभा का संक्षिप्त इतिहास

१८९४ में आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की स्थापना हुई और १९७८ वर्ष के साथ सभा स्थापना के ८५ वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। यह एक हर्ष और संतोष का विषय है कि जिन लक्ष्यों और भावों के लिए यह सभा बनाई गई, वे पूर्णतया सिद्ध और सफल हुए हैं। १८९४ से लेकर अब तक सभा के वार्षिक निर्वाचन सर्वसम्मति और सद्भावना से सम्पन्न हुए, और सभा कार्य संचालन में किसी प्रकार का मतभेद अथवा संघर्ष नहीं हुआ। जिन-जिन महानुभावों को जो-जो कार्यभार सौंपे गए, उन्होंने अपना कर्त्तव्य समझकर सामूहिक रूप से इसे निभाया। सभा का शिक्षा प्रसार कार्य भी डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्तृ सभा द्वारा भलीभाँति चला और सभा को इस बात का गर्व है कि आज देश के कोने-कोने में इतनी डी० ए० वी० संस्थाएं अपूर्व सेवा कार्य कर रही हैं जितनी किसी अन्य सभा या संस्था की नहीं। इन संस्थाओं ने भी न केवल शिक्षा के रूप में, वरन् बाढ़, भूकम्प, अकाल अथवा सूखा और आर्य आंदोलनों में भी सभा को अपना पूर्ण योगदान देकर सभा का मान बढ़ाया है। इन संस्थाओं में निर्मित शिक्षकों और छात्रों ने दीक्षित अथवा सेवा मुक्त होकर महात्मा हंसराज जी का अनुसरण किया और अपना जीवन सभा एवं डी० ए० वी० कालेज कमेटी के कार्यों में लगाया। सभा को गर्व है कि उसके अधिकांश कार्यकर्त्ता इसकी अपनी संस्थाओं की ही उपज हैं। सभा की कार्यदक्षता और कार्य प्रणाली को देखकर अनेकों संस्थाएं और ट्रस्ट इस सभा के साथ सम्पर्क और सम्बन्ध रखना अपना गौरव समझते हैं। **दयानन्द फाउन्डेशन, महात्मा आनन्द स्वामी स्मारक निधि समिति, श्री रामशरण स्मारक निधि समिति, दयानन्द हस्पताल करनाल तथा वैदिक मोहन आश्रम**, हरिद्वार आदि संस्थाओं के नाम उल्लेखनीय हैं।

प्रारम्भ में यह सभा, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब सिन्ध बिलोचिस्तान के नाम से ज्ञात थी, क्योंकि इसका कार्यक्षेत्र अविभाजित भारत में इन प्रांतों में विशेषतया बहुत होता था। समय के साथ विशेषतया देश में अकाल और अन्य विपत्तियों में देश सेवा कार्यों के कारण सभा का कार्यक्षेत्र और प्रभाव बढ़ा और इसकी सम्बन्धित संस्थाएं अथवा आर्य समाजें अन्य प्रांतों और सुदूर दक्षिण में भी खुल गई। मालाबार में मोपलाविद्रोह के समय से लेकर अब तक कालीकट में सभा की शाखा चली आ रही है और सभा की वहाँ पर सम्पत्ति भी है। ब्रिटिश ईस्ट अफ्रीका (आधु-

निक कीनिया) में भी सभा ने प्रचारक भेजे और अब भी वहाँ की सभा सम्पत्ति हिंदू धर्म प्रचार में काम आ रही है।

१९४४ में जब लाला खुशहालचन्द खुरसन्द सन्यास नाम महात्मा आनन्द स्वामी जी सभा प्रधान थे, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की स्वर्ण जयन्ती (50 वर्षीय) लाहौर में मनाई गई। इसमें सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं के नेताओं ने, जिनमें महात्मा नारायण स्वामी जी प्रधान सार्वदेशिक सभा, श्री गंगाप्रसाद जी जज टेहरी गढ़वाल, श्री मेहरचन्द जी धीमान प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल, कलकत्ता, स्वामी अभेदानन्द जी, प्रधान बिहार तथा अन्य अनेक आर्य नेतागण उपस्थित हुए थे। इस अवसर पर महात्मा हंसराज जी को जिनका निधन हो चुका था श्रद्धांजलियाँ दीं तथा सभा की उपलब्धियों की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

1947 से देश विभाजन से सभा कार्य को बड़ा धक्का लगा और सभा की करोड़ों रुपयों की सम्पत्ति पाकिस्तान में रह गई। अन्त समय तक सभा ने अपने स्कूलों तथा कालेजों और आर्य समाज में निराश्रितों को आश्रय देकर, अपूर्व सहायता सेवा कार्य किया और इस संत वाणी को सिद्ध कर दिया—

संत—आग लगी इस वृक्ष को, जले वृक्ष के पात।
तुम क्यों जलते पक्षियो, जब पंख तुम्हारे साथ ॥

उत्तर—फल खाए इस वृक्ष के, गंदे कीने पात।
यही हमारा धर्म है, जलें जो इसके साथ ॥

विभाजन पश्चात निर्वासित आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का कार्यालय कई वर्ष जालंधर में रहा। वहाँ भी सभा निराश्रितों को ढाढस बंधाते रहे और प्रचार कार्य करते रहे। तत्पश्चात् देश और जनता के पलटा खाने पर डी० ए० वी० प्रबंध-कर्तृ सभा कार्यालय के देहली आ जाने पर इस सभा का कार्यालय भी आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली में आ गया। सभा और इस समाज का सदैव दामन चोली का साथ रहा है। और एकही भवन में कार्य चल रहा है। गत वर्ष सभा कार्य में वृद्धि और अन्य राज्यों के आर्य प्रतिनिधियों के अनुरोध पर सभा कार्य के विस्तार के लिए निम्नलिखित उप-सभाएं बनाई गईं—

1. पंजाब, चण्डीगढ़ एवं काश्मीर
2. हिमाचल प्रदेश
3. हरियाणा
4. दिल्ली
5. केरल

इसके अतिरिक्त उड़ीसा, बिहार, नागालैंड, मनीपुर, महाराष्ट्र तथा केरल में

भी डी० ए० वी० संस्थाओं और आर्य समाजों के अधिकारियों द्वारा वहाँ सभा कार्यों में बहुत सहयोग मिलता है। सभा का सम्पूर्ण विस्तृत इतिहास श्री महात्मा अमर स्वामी जी ने तैयार करके सभा को दे दिया है। हम इस वर्ष इसे प्रकाशित करने की आशा रखते हैं। इस कार्य के लिए स्वामी जी ने अनथक प्रयत्न किया है। एतदर्थ हम इनके आभारी हैं।

दुखद देहावसान

1978-79 का सभा विवरण प्रारम्भ करते ही हमारा ध्यान उन कर्मठ समाजसेवी आत्माओं की ओर जाता है, जिन्होंने आर्य समाज, विशेषकर आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के कार्यों में हमें सहयोग दिया और इस वर्ष हमसे विदा हो गए हैं। वे हमारे लिए आर्य समाज में निष्ठा और कार्य प्रणाली का एक आदर्श छोड़ गए हैं। हम परमपिता परमात्मा से उनकी आत्माओं की सद्गति की प्रार्थना करते हैं तथा उनके परिवारों और संबंधित आर्य समाजों से इस क्षति पर सहानुभूति प्रकट करते हैं।

दिवंगत महानुभावों के नाम :—

1. श्री गुरुप्रसाद जी, अलावलपुर
2. श्री करतारचन्दजी इंगल
3. श्री एन० एन० कपूर जी, दिल्ली
4. प्रिंसिपल ए० एन० सरीन जी, अमृतसर
5. श्री गंडाराम मेहता जी, बम्बई
6. श्री फतेहचन्द जी शर्मा आराधक, दिल्ली
7. श्री बिहारीलाल जी, करतारपुर
8. श्रीमती आज्ञावती जी चावला, होशियारपुर
9. श्री खजानचन्द चान्दना जी, निजामुद्दीन दिल्ली
10. स्वामी धर्मानन्द जी, ज्वालापुर
11. प्रिंसिपल कृष्णचन्द्र जी, दिल्ली
12. सेठानी सत्यवती देवी जी, देहरादून
13. श्री हुकुमचन्द जी, करतारपुर
14. महाशय मदनजीत जी, फिरोजपुर
15. श्री गोपालदास जी सोनी, दिल्ली
16. श्री प्रवीण गोयल, गोहाटी (आसाम)
17. श्री मोहनलाल जी गावा, दिल्ली
18. डा० विद्यासागरजी

हमें यह अनुभव करके और भी दुःख होता है कि हमारे पुराने योग्य तथा कर्मठ कार्यकर्त्ता एक-एक करके हमसे विदा हो रहे हैं और उनकी स्थान पूर्ति के लिए हमें उतनी संख्या में वैसे युवक प्राप्त नहीं हो रहे हैं। जीवन काल का कुछ पता नहीं। हमारी अपने सहयोगियों से प्रार्थना है कि वे अपने जीवन काल में ही हमें अपने जैसे न्यून से न्यून एक वंशज अथवा अन्य कार्यकर्त्ता सभा को योगदान के लिए प्रदान करें।

कार्यवाही सभा वार्षिक अधिवेशन, 1978

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली के ४4वें वार्षिक अधिवेशन की कार्यवाही जो दिनांक 7 मई, 1978 को प्रातः 11 बजे आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली में सभा प्रधान लाला सूरजभान जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस अधिवेशन में दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश के निम्नलिखित प्रतिनिधिगण उपस्थित थे :—

उपस्थिति

1. श्री सूरजभान जी अध्यक्ष, नई दिल्ली
2. श्री मुलखराज भल्ला आर्य समाज, अनारकली नई दिल्ली
3. श्री प्रभुदत्त जी आर्य समाज, वस्ती हरफूलसिंह, नई दिल्ली
4. श्री शांतिप्रकाश जी आर्य समाज, ग्रेटर कैलाश नई दिल्ली
5. श्री किशनचन्द रल्हन आर्य समाज, साउथ एक्स० नई दिल्ली
6. श्री एच०आर० मल्होत्रा आर्य समाज, अनारकली नई दिल्ली
7. श्री रामदास खोसला आर्य समाज, अनारकली नई दिल्ली
8. श्री देशराज जुनेजा आर्य समाज, मालवीय नगर नई दिल्ली
9. श्री मोहनलाल आर्य समाज, अनारकली नई दिल्ली
10. श्री दयाराम शास्त्री आर्य समाज, अनारकली नई दिल्ली
11. श्री गोपालकृष्ण दत्ता आर्य समाज, अनारकली नई दिल्ली
12. श्री दरबारीलाल जी आर्य समाज, अनारकली नई दिल्ली
13. श्री दुर्गादास जी वस्ती हरफूलसिंह नई दिल्ली
14. श्रीमती सूरजभान जी आर्य समाज, अनारकली नई दिल्ली
15. श्री गंगाराम जी आर्य समाज, कीर्ति नगर नई दिल्ली
16. श्री सोहनलाल जी आर्य समाज, अनारकली नई दिल्ली
17. श्री धर्मपाल सेठ आर्य समाज, अनारकली नई दिल्ली
18. श्री गिरीश खोसला आर्य समाज, अशोक विहार नई दिल्ली
19. श्री राजकुमार शास्त्री आर्य समाज, पहाड़गंज नई दिल्ली
20. श्री हरीशचन्द थापर आर्य समाज, ग्रीन पार्क नई दिल्ली
21. श्री जगदीशचन्द्र शर्मा आर्य समाज, अलीगंज, नई दिल्ली

22. श्री रामशरणदास जी आर्य समाज, पटेल नगर, नई दिल्ली
23. श्री कृष्णगोपाल आर्य समाज, दरियागंज, नई दिल्ली
24. श्री वानाराम जी, आर्य समाज, साउथ एक्स०, नई दिल्ली
25. श्री एस० आर० कन्सील, आर्य समाज, अनारकली, नई दिल्ली
26. श्री वीरेन्द्रकुमार जी शर्मा, आर्य समाज, वज़ीरपुर गाँव, नई दिल्ली
27. श्री वेदरत्न जी बजाज, आर्य समाज, अनारकली, नई दिल्ली
28. श्री खेमचन्द जी महता, आर्य समाज, निजामुद्दीन, नई दिल्ली
29. श्री तिलकराज जी, आर्य समाज, वस्ती हरफूलसिंह, नई दिल्ली
30. डा० तीर्थराज जी शास्त्री, आर्य समाज, मालवीय नगर, नई दिल्ली
31. श्रीमती रुकमणीदेवी, आर्य समाज, मालवीय नगर, नई दिल्ली
32. श्रीमती सन्तोष जी धवन, आर्य समाज, मालवीय नगर, नई दिल्ली
33. श्री किशोरीलाल बहल, आर्य समाज, आर०के०पुरम्, नई दिल्ली
34. श्री विश्वमित्र जी, आर्य समाज, आर० के० पुरम्, नई दिल्ली
35. श्री सालिगराम जी गौतम, आर्य समाज, पूर्वी कैलाश, नई दिल्ली
36. श्रीमती ज्ञानदेवी चौधरी, आर्य समाज, पुल बंगश. दिल्ली
37. श्रीमती रामप्यारी जी धवन, आर्य समाज, पुल बंगश, दिल्ली
38. श्री सुदेशकुमार जी, आर्य समाज, पुल बंगश, दिल्ली
39. श्री नन्दलाल जी, आर्य समाज, पुल बंगश, दिल्ली
40. श्री अशोक जी कल्सी, आर्य समाज, ग्रीन पार्क, नई दिल्ली
41. श्रीमती मंजू कल्सी, आर्य समाज, ग्रीन पार्क, नई दिल्ली
42. श्री रामशरणदास जी आर्य, आर्य समाज, जंगपुरा विस्तार, नई दिल्ली
43. श्री तीर्थराम जी तुली, आर्य समाज, जंगपुरा विस्तार, नई दिल्ली
44. श्री आत्मानन्द जी, आर्य समाज, डिफैन्स कालोनी, नई दिल्ली
45. श्री नरेन्द्र जी अवस्थी, आर्य समाज, श्रीनिवासपुरी, नई दिल्ली
46. श्री सूरज सक्सेना, आर्य समाज, मालवीय नगर, नई दिल्ली
47. श्री ओमवीरसिंह निर्भय, नई दिल्ली
38. श्रीमती सत्या शर्मा, नई दिल्ली
49. श्री बखशी जी खुशहाल, आर्य समाज, झण्डेवालान, नई दिल्ली
50. श्री शाँतिस्वरूप जी, आर्य समाज, मालवीय नगर, नई दिल्ली
51. श्री रुद्रदत्त जी शर्मा, आर्य समाज, लक्ष्मणसर, अमृतसर
52. श्री भूषणकुमार जी केसर, आर्य समाज, लोहगढ़, अमृतसर
53. श्री विद्यासागर वैद्य, आर्य समाज, लारेन्सरोड, अमृतसर
54. श्री आर०एन० मेहता, आर्य समाज, लौहगढ़, अमृतसर
55. श्री ला० गंगाराम जी मैनी, आर्य समाज, लौहगढ़, अमृतसर

56. श्री कोषराज जी मलिक, आर्य समाज, लौहगढ़, अमृतसर
57. श्री हरीचन्द जी, आर्या समाज, लौहगढ़, अमृतसर
58. श्री एम० एल० तनेजा, आर्या समाज, लौहगढ़, अमृतसर
59. श्री भगतराम जी, आर्या समाज, लौहगढ़, अमृतसर
60. श्री युगलकिशोर लूथरा, आर्या समाज, लारेन्स रोड, अमृतसर
61. श्री चमनलाल जी अरोड़ा, आर्या समाज, किला, जालंधर
62. श्री वेद प्रकाश जी मल्होत्रा, आर्या समाज, माडल टाउन, जालंधर
63. श्रीमती विद्याआनन्द जी, आर्या समाज, विक्रमपुरा, जालंधर
64. श्री ब्रह्मदत्तशर्मा, आर्या समाज, कालेज विभाग फिरोजपुर शहर
65. श्री सिया बिहारीशरण, आर्य समाज, विक्रमपुरा, जालंधर
66. श्री रामदेव जी गुप्ता, आर्या समाज, कालेज विभाग फिरोजपुर शहर
67. श्री रामचन्द जी आर्य, आर्य समाज, कालेज विभाग फिरोजपुर छावनी
68. श्री गजेन्द्रसिंह, आर्या अनाथालय, फिरोजपुर छावनी
69 श्री जसवन्तराय कुमार, आर्या समाज, फिरोजपुर शहर
70. श्री हंसराज कड़वल, आर्या समाज, पानीपत
71. श्री चमनलाल जी, आर्या समाज, अशोक विहार नई दिल्ली
72. श्री मनीषी देव जी शास्त्री, आर्य समाज, माडल टाउन, पानीपत
73. श्री कृष्ण जी आर्य, आर्य समाज, सेक्टर-17, चण्डीगढ़
74. श्री अशोक जी शर्मा, आर्या समाज, सेक्टर-16, चण्डीगढ़
75. श्री जी०डी० जिंदल, आर्या समाज, सेक्टर-16, चण्डीगढ़
76. श्री जगदीश जी ग्रोवर, आर्या समाज, सेक्टर-7 बी, चण्डीगढ़
77. श्रीमती ईश्वरदेवी, आर्या समाज, सेक्टर-7 बी, चण्डीगढ़
78. श्री ब्रजभूषण जी गक्खड़, आर्या समाज, सेक्टर-7 बी, चण्डीगढ़
79. श्री हंसस्वरूप, आर्या समाज, सेक्टर-7, चण्डीगढ़
80. डा० कृष्णकुमार जी धवन, आर्या समाज, सेटक्र-16 चण्डीगढ़
81. श्री रवीन्द्र तलवाड़, आर्य समाज, सेक्टर-7, चण्डीगढ़
82. श्री प्रकाशचन्द्र जी, आर्य समाज, सेक्टर-7, चण्डीगढ़
83. श्री चमनलाल जी सेठ, आर्य समाज माडल टाउन, यमुनानगर
84. श्री एच० सी० भगत, आर्य समाज, माडल टाउन, यमुनानगर
85. श्री जगन्नाथ कपूर, आर्य समाज, माडल टाउन, यमुनानगर
86. श्री बी० डी० शैदा, आर्य समाज, माडल टाउन, अम्बाला
87. श्री अमरसिंह जी उपदेशक, आर्या समाज, माडल टाउन, अम्बाला
88. श्री रमेशचन्द्र जी कपिला, आर्य समाज, पंजाबी मोहल्ला, अम्बाला

89. श्री राजकुमार जी भारद्वाज, आर्य समाज, पंजाबी मोहल्ला, अम्बाला
90. श्री कृष्णकुमार गुप्ता, आर्य समाज, पंजाबी मोहल्ला, अम्बाला
91. श्री पं० प्रभुदयाल जी आर्य उपदेशक, आर्य समाज, पौली जीन्द
92. श्री प्यारेलाल झा, आर्य समाज, नाभा
9 . श्री सुरेन्द्रनाथ गुप्ता, आर्य समाज, हिसार
94. श्री सीताराम जी आर्य, आर्य समाज, हिसार
95. श्री मदनलाल जी, आर्य समाज, अबोहर
96. श्रीमती पुष्पादेवी, आर्य समाज, अबोहर
97. श्री के. आर. नारंग, आर्य समाज, गुड़गांवा
98. श्री महेशदयाल लूथड़ा, आर्य समाज, माडन टाउन, गुड़गांवा
99. श्री निहालचन्द जी गुगनानी, आर्य समाज, प्रधाना मोहल्ला, रोहतक
100. श्री भवानीदास जी, आर्य समाज, प्रधाना मोहल्ला, रोहतक
101. श्री धर्मवीर जी, आर्य समाज, प्रधाना मोहल्ला, सोनीपत
102. श्री भीमसेन जी, आर्य समाज, शान्तीनगर, सोनीपत
103. श्री वेदप्रकाश जी आर्य, आर्य समाज, शांतीनगर, सोनीपत
104. श्री रमेशचन्द्र जी, आर्य समाज, शांतिनगर, सौगल
105. श्री मामचन्द जी आर्य, आर्य समाज, दयालपुरा, करनाल
106. श्री गणेशदास जी आर्य, आर्य समाज, दयालयुरा, करनाल
107. श्री रा०व० चौ० प्रतापसिंह, आर्य समाज, दयालपुरा, करनाल
108. श्री वेदसुमन जी, आर्य समाज, दयालपुरा, करनाल
109. श्री अमरनाथ जी, आर्य समाज, दयालपुरा, करनाल
110. श्री मेलाराम जी वर्क, आर्य समाज, दयालपुरा, करनाल
111. श्री अमरनाथ जी, आर्य समाज, दयालपुरा, करनाल
112. श्री इन्दरसिंह जी, आर्य समाज, तरावड़ी, करनाल
113. श्री कंवरभान जी, आर्य समाज, तरावड़ी, करनाल
114. श्री साधूराम, आर्य समाज, तरावड़ी, भटिण्डा
115. श्री अक्षरकुमार गुप्ता, आर्य समाज, तरावड़ी, भटिण्डा
116. श्री बैजनाथ जी मल्ला, आर्य समाज, तरावड़ी, अमृतसर
117. श्री रामनाथ जी सहगल, आर्य समाज, बस्ती हरफूलसिंह सभा मन्त्री, नई दिल्ली

अधिवेशन का प्रारम्भ गायत्री मंत्र के पवित्र उच्चारण के साथ प्रारम्भ किया गया।

उसके पश्चात सभा मंत्री जी ने विगत वर्ष में दिवंगत हुए निम्नलिखित आर्य नेताओं एवं कार्यकर्त्ताओं के विषय में सदन को अवगत कराया :—

(1) महात्मा आनन्द स्वामी जी सरस्वती
(2) पंडित प्रकाशवीर जी शास्त्री
(3) श्री बालमुकुन्द जी मुंजाल
(4) प्रि० भगवानदास जी
(5) श्री राजकुमार जी नन्दा
(6) श्री घृतराम जी खोसला
(7) श्रीमती पूर्णदेवी धर्मपत्नी श्री बूटाराम
(8) पं० भूराराम जी वानप्रस्थी
(9) श्री सर्वसेन जी मित्र तथा उनकी धर्मपत्नी
(10) पं० दौलतराम जी शास्त्री
(11) चौधरी कंवरभान जी चण्डीगढ़
(12) ज्ञानी पिण्डीदास जी
(13) श्री मेहरचन्द जौली
(14) श्री भागमल सहदेव
(15) श्री बृजलाल जी शास्त्री
(16) श्री अमृतलाल पुरी
(17) श्री धर्मवीर जी सिद्धान्त शास्त्री
(18) डा० सेवकराम जी शास्त्री (स्वामी ओंकारानन्द)
(19) श्री गुरुप्रसाद जी
(20) डा० जगदीश मित्र

सभा मंत्री ने बतलाया कि यूं तो उपरोक्त सभी आर्य बन्धुओं की मृत्यु, आर्य समाज एवं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के लिए अपूरणीय क्षति है, लेकिन महात्मा आनन्द स्वामी एवं पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री का निधन, प्रादेशिक सभा के लिए इस वर्ष की सबसे अधिक दुर्भाग्यपूर्ण घटना है। सभी उपस्थित सदस्यों ने दो मिनट का मौन धारण कर दिवंगत आत्माओं के प्रति अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की तथा गायत्री मंत्र का उच्चारण कर परम पिता परमात्मा से प्रार्थना की कि वह दिवंगत आत्माओं को सद्गति तथा उनके शोक संतप्त परिवारों के इस असहनीय दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

यह भी निश्चय किया गया कि इस प्रस्ताव की एक-एक प्रति समस्त शोक ग्रस्त परिवारों को भेजी जावे।

पं० रुद्रदत्त जी शर्मा ने शोक प्रकट करने के लिए खड़े होने की परिपाटी का विरोध किया। उन्होंने बताया कि आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की यह परिपाटी

नहीं है, जो आगे के लिए नोट की गई।

1. सभा मंत्री द्वारा गत अधिवेशन दिनांक 1-5-77 की कार्यवाही सदन के समक्ष पढ़कर सुनाई, जिसकी सर्वसम्मति से पुष्टि की गई।

2. वार्षिक विवरण 1977-78 की सम्पुष्टि:—सभा मंत्री ने सदन को बताया कि आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के वर्ष 1977-78 का कार्य विवरण समस्त सदस्यों की सेवा में प्रेषित किया जा चुका है। विवरण पुस्तिका के प्रारम्भ में जो धन्यवाद का प्रकरण छपने से रह गया था, वह सदन के समक्ष पढ़ कर सुनाया, जिसमें उन्होंने गत वर्ष में जिन-जिन लोगों ने सभा के कार्य संचालन में अपना सहयोग प्रदान किया, उन सभी के प्रति अपना हार्दिक आभार प्रकट किया। इस धन्यवाद की भी एक-एक प्रति समस्त उपस्थित सदस्यों में वितरित की गई। मंत्री जी ने गत वर्ष का कार्य विवरण भी सभा के समक्ष कुछ संक्षेप रूप में रखा, जिसकी समस्त उपस्थित सदस्यों ने प्रशंसा की। मंत्री महोदय ने आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के द्वारा स्थानीय बोट क्लब पर प्रतिदिन दिन के समय किए जाने वाले प्रचार कार्य के सम्बन्ध में भी सदन को अवगत कराया जो कि वार्षिक विवरण में प्रकाशित होने से रह गया था। समस्त उपस्थित सदस्यों ने इस कार्य की भी मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की।

उसके पश्चात सभा प्रधान लाला सूरजभान जी ने सभा के कार्यों को और अधिक लोकोपयोगी बनाने तथा महर्षि के मिशन को और अधिक तीव्र गति से चलाने के लिए सदन के समक्ष अपने बहुमूल्य विचार प्रस्तुत किए। इस अवसर पर अन्य जिन जिन महानुभावों ने सदन के समक्ष अपने-अपने विचार सुझावों के रूप में प्रस्तुत किए उनका संक्षिप्त में विवरण इस प्रकार है:—

1. **लाला सूरजभान** (सभा प्रधान)—ने सदन का ध्यान 'आर्य जगत' साप्ताहिक में हो रहे निरन्तर घाटे की ओर आकृष्ट किया। उन्होंने बताया कि सभा प्रति वर्ष हजारों रुपयों का घाटा सहन कर इस साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन कर रही है। इस घाटे की पूर्ति के लिए हमें इस वर्ष अधिक प्रयास करना है ताकि इस पत्र का प्रकाशन और अधिक सुन्दर ढंग से किया जा सके। इसके लिए सभा प्रधान जी ने 'आर्य जगत' में प्रकाशनार्थी अधिक से अधिक विज्ञापन प्राप्त करने तथा ग्राहकों की संख्या में वृद्धि करने पर बल दिया।

सभा प्रधान जी ने स्वर्गीय महात्मा आनन्द स्वामी जी सरस्वती की पुण्य स्मृति को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए सम्पूर्ण आर्य जगत से उनकी एक स्थिर निधि के रूप में स्थापित करने का सुझाव प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि आर्य समाज के दानी महानुभाव इस स्थिर निधि को स्थापित करने के लिए एक निश्चित धनराशि

दान के रूप में प्रदान करें ताकि 5 लाख रुपये से स्वामी जी के नाम से यह स्थिर निधि स्थापित की जा सके। इस निधि के ब्याज से होने वाली आय से स्वामी जी के साहित्य का प्रकाशन करा कर उसे वितरित किया जाए तथा शेष धनराशि वेद प्रचार आदि के कार्यों में व्यय की जाये। सभा प्रधान जी के इस सुझाव का समस्त सदस्यों ने करतल ध्वनि से स्वागत किया तथा इस पुनीत कार्य में अपना पूरा-पूरा सहयोग प्रदान करने का आश्वासन दिया।

2. **श्री मेलाराम बर्क**—आर्य जगत साप्ताहिक के घाटे के सम्बन्ध में श्री मेलाराम बर्क ने बतलाया कि कोई भी पत्र केवल ग्राहकों द्वारा प्राप्त वार्षिक शुल्क के आधार पर नहीं चल सकता। पत्र को चलाने के लिए उसमें विज्ञापनों का मिलना अत्यावश्यक है। अत: हमें आर्य जगत साप्ताहिक के लिए अधिक से अधिक विज्ञापन प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिए। इसके साथ ही ग्राहकों की संख्या में वृद्धि हेतु भी हर सम्भव प्रयत्न करने चाहिए।

उन्होंने कहा कि रामलाल कपूर ट्रस्ट, जो कि वैदिक साहित्य के प्रकाशन में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है, इस ट्रस्ट को महात्मा हंसराज जी ने श्री रामलाल कपूर के द्वारा स्थापित कराया था। इस ट्रस्ट के द्वारा प्रकाशित साहित्य अपनी डी० ए० वी० संस्थाओं के माध्यम से विक्रय किए जाने की व्यवस्था की जानी चाहिए उन्होंने यह भी बतलाया कि महात्मा अमर स्वामी जी के पास आर्य सिद्धान्तों से संबंधित साहित्य का प्रचुर भण्डार है। सभा इस साहित्य को प्रकाशित करने की योजना बनाए। उन्होंने इस बात पर गहरा दु:ख प्रकट किया कि इस समय प्रचार कार्य के लिए उपदेशकों का बहुत बड़ा अभाव है।

3. **श्री तीर्थराज शास्त्री**—ने लाला सूरजभान जी तथा डा० जी० एल० दत्ता जी के दीर्घायु तथा स्वस्थ रहने की कामना की एवं समस्त पदाधिकारियों को धन्यवाद दिया। उन्होंने माननीय लाला जी के इस सुझाव का स्वागत किया कि महात्मा आनंद स्वामी जी महाराज की पुण्य स्मृति को अक्षुण्ण बनाए रखने हेतु उनका एक स्मारक बनाया जाये। इसके लिए उन्होंने समस्त आर्य जगत से अधिक से अधिक सहायता की अपील की। उन्होंने सुझाव दिया कि आर्य जगत में वैदिक विद्वानों के जीवन चरित्र प्रकाशित करने की श्रृंखला चालू की जानी चाहिए। ताकि आर्य संसार अपने वैदिक विद्वानों से परिचित हो सके। इसी प्रकार आर्य समाज के समस्त कार्यों में युवकों को अधिक से अधिक प्रतिनिधित्व दिया जाना चाहिए ताकि युवा शक्ति आर्य समाज के प्रचार एवं प्रसार में अपनी गहरी रुचि ले सके। उन्होंने सुझाव दिया कि आर्य जगत के मंच से संस्कृत भाषा के पठन-पाठन की भी व्यवस्था की जानी चाहिए। आर्य जगत

के अधिक से अधिक ग्राहक बनाने के लिए भी उन्होंने अपना सुझाव सदन के समक्ष प्रस्तुत किया।

4. **श्री सीताराम आर्य** (हिसार)—ने सुझाव दिया कि ग्रामीणअंचलों में वैदिक धर्म के प्रचारार्थ उपदेशकों के स्थान पर भजनोपदेशकों की भी व्यवस्था की जानी चाहिए। इसके लिए उन्होंने एक भजनोपदेशक विद्यालय प्रारम्भ करने पर बल दिया।

5 **श्री मामचन्द जी आर्य** (करनाल) ने कहा कि समस्त सभासदों तथा आर्य समाजों के लिए अपना-अपना दशाँश-दीपावली एवं शिवरात्रि फण्ड सही समय पर बिना किसी प्रकार के स्मरण कराए नियमित रूप से केन्द्र के पास भेज देना चाहिए ताकि केन्द्र की आर्थिक स्थिति मजबूत हो सके। उन्होंने महात्मा हंसराज दिवस सही तिथि अर्थात प्रति वर्ष 19 अप्रैल को ही मनाने का सुझाव दिया। इसके साथ ही उन्होंने वेद तथा वैदिक धर्म के प्रचारार्थ ग्रामीण क्षेत्रों की समस्याओं की ओर विशेष ध्यान देने के लिए अपना सुझाव दिया।

6 **श्री महेश्वरदयाल लूथरा** (गुड़गांव)- ने अनुभव किया कि सभा में प्रचारादि कार्यों के लिए उपदेशकों का अभाव है जिसे अविलम्ब दूर किया जाना चाहिए। उन्होंने सुझाव दिया कि प्रचार कार्य आकाशवाणी तथा दूरदर्शन के माध्यम से भी कराया जाना चाहिए।

7 **श्री दयाराम शास्त्री** (नई दिल्ली) ने हिमाचल प्रदेश में आर्य समाज के प्रचार कार्य को तीव्र गति से करने के लिए सुझाव दिया।

8 **श्री जुगल किशोर लूथरा** (अमृतसर)—ने सुझाव दिया कि आर्य समाज में सेवा भावना को और अधिक बढ़ाया जाना चाहिए तथा वैदिक धर्म के प्रचार के लिए वैदिक साहित्य साधारण जनता में कम से कम दामों में दिए जाने की व्यवस्था की जानी चाहिए।

9 **श्री चमनलाल पालीवाल**—ने कहा कि समस्त वैदिक धर्मावलम्बियों को पूर्ण रूपेण शाकाहारी तथा आर्य समाज के नियम एवं सिद्धान्तों के अनुरूप ही अपनी दिनचर्या बनानी चाहिए। समाज में व्याप्त विविध प्रकार की कुरीतियां, कुप्रथाएं तथा रूढ़िवादिता अविलम्ब दूर की जानी चाहिए।

10 **श्री जगन्नाथ कपूर** (यमुना नगर)—ने सुझाव दिया कि कम से कम 50 हजार रुपये की धनराशि से महात्मा आनन्द स्वामी स्मारक निधि की स्थापना की जानी चाहिए। इस निधि के ब्याज से पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी सरस्वती द्वारा लिखित उनका समस्त साहित्य प्रकाशित किया जाना चाहिए। उससाहित्य को साधारण जनता के लिए कम से कम मूल्य पर उपलब्ध कराने की व्यवस्था की जानी चाहिए।

इस कार्य के लिए उन्होंने अपनी आर्य समाज की ओर से 21 सौ रुपये देने की घोषणा की। आर्य जगत साप्ताहिक पत्र को और अधिक शक्तिशाली बनाने के लिए उन्होंने सुझाव दिया कि इसमें प्रकाशनार्थ देश-विदेश के समस्त वैदिक विद्वानों के लेखों को समय-समय पर आमंत्रित किया जाना चाहिए।

11 **राय बहादुर चौधरी प्रताप सिंह** (करनाल) – ने सुझाव दिया कि पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी सरस्वती स्मारक निधि के लिए कम से कम 5 लाख रुपये की व्यवस्था की जानी चाहिए। ताकि उससे प्राप्त होने वाली आय से आर्य समाज के प्रत्येक कार्यों में सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वानों की सेवाओं का लाभ उठाया जा सके। इस निधि के लिए उन्होंने अपनी ओर से 5 सौ रुपये देने की घोषणा की।

12 **डा० गणेशदास आर्य** (करनाल)—ने कहा कि सभा द्वारा संचालित दयानन्द ब्राह्म महा विद्यालय में शिक्षा प्राप्त करने वाले समस्त शिक्षार्थियों को हमारे कार्यकर्त्ताओं के साथ 2-2, 3-3 मास का क्रियात्मक प्रशिक्षण प्रदान कराने की योजना बनाई जाए। उन्होंने सुझाव दिया कि सभा का वार्षिक अधिवेशन प्रति वर्ष मार्च अथवा अप्रैल में रखा जाना चाहिए ताकि ग्रामीण क्षेत्रों के प्रतिनिधिगण भी इस अधिवेशन में अधिक से अधिक संख्या में भाग ले सकें। केन्द्र के उपदेशकों तथा उप-केन्द्र के उपदेशकों का आपस में आदान-प्रदान किया जाना चाहिए ताकि प्रत्येक उप-देशक हर प्रकार के वातावरण में रहना तथा कार्य करना सीख जाए। इसके साथ ही उन्होंने नवयुवकों को अधिक से अधिक संख्या में लाने पर भी बल दिया। इस कार्य के लिए उन्होंने आर्य समाज के प्रचारादि कार्यों में कुछ आकर्षण पैदा करने पर बल दिया। आजकल जो आर्य समाज का प्रचार कार्य चल रहा है वह नीरस है जिसे आज का युवक पसन्द नहीं करता। लेकिन प्रचार कार्य आर्य समाज के सिद्धान्तों एवं नियमों के अनुरूप ही होना चाहिए। उन्होंने सुझाव दिया कि वर्तमान समय में प्रचलित मद्य पान-धूम्रपान-मांस-भक्षण तथा अन्य सामाजिक बुराइयों को अविलम्ब दूर किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि समस्त उप समाजों के लिए उस क्षेत्र में आने वाली शिक्षण संस्थाओं से दान आदि प्राप्त करने की भी व्यवस्था की जानी चाहिए।

13 **श्री हंसराज कड़वल** (पानीपत) - ने सुझाव दिया कि आजकल लड़कों के स्थान पर लड़कियों को सुसंस्कृत बनाने की ओर अधिक ध्यान देना चाहिए। आर्य समाज का प्रचार आकाशवाणी तथा दूरदर्शन के माध्यम से किया जाना चाहिए। आर्य समाजों तथा स्त्री आर्य समाजों का अधिक से अधिक प्रचार किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि कालेजों तथा स्कूलों की वेशभूषा वैदिक संस्कृति के अनुकूल होनी चाहिए।

14. **पं० आत्मानन्द जी (नई दिल्ली)**—ने बताया कि आज आर्य समाज के प्रचार कार्य में तीव्रता न आ सकने का मूल कारण यह है कि हम निराकार भक्ति के उत्तम भजनों की ओर अपना ध्यानाकर्षित नहीं करते और न ही हम उन लोगों की याद करते हैं जिन्होंने स्वामी जी के साथ कार्य किया। उन्होंने बताया कि आज आवश्यकता इस बात की है कि हमारा जो पुराना वैदिक इतिहास है उसकी खोज की जानी चाहिए। उन्होंने इस बात पर अपना दुःख प्रकट किया कि आज आर्य समाज का प्रचार तथा प्रसार केवल शहरी क्षेत्रों तक ही सीमित है। ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी प्रचार आदि की न कोई व्यवस्था है और न ही किसी समाज के द्वारा इस ओर ध्यान ही दिया गया है जिसके कारण आज हमारा प्रचार कार्य अधूरा है।

15. **श्री अमरनाथ जी (करनाल)**—ने सुझाव दिया कि आज हमारा व्यावहारिक जीवन हिन्दी से निरन्तर दूर होता चला जा रहा है। यही हमारे आर्य समाज के प्रचार तथा प्रसार में सबसे अधिक बाधक बन रहा है। उन्होंने कहा कि हमें अपने प्रत्येक कार्य तथा व्यवहार में अपनी मातृ भाषा हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिए।

16. **पं० रुद्रदत्त शर्मा (अमृतसर)**—ने सुझाव दिया कि हमें अपना कोई लक्ष्य निर्धारित करने के पश्चात ही कार्य करना चाहिए। आज हमारे सामने कोई लक्ष्य न होने से हम दिशाहीन होकर कार्य कर रहे हैं जिससे हमें अपेक्षित सफलता प्राप्त नहीं हो रही है। यही कारण है कि जैसा आर्य समाज का प्रचार तथा प्रसार उसके प्रारम्भिक काल में हुआ वैसा आज तक नहीं हो पाया। उन्होंने बताया कि हमें अपनी शिक्षण संस्थाओं के माध्यम से वैदिक धर्म का अधिक से अधिक प्रचार करने के लिए व्यवस्था करनी चाहिए।

17. **पं० प्रभु दयाल जी उपदेशक (उप सभा हरियाणा)**—ने कहा कि हमें मात्र सुझाव ही नहीं देना चाहिए बल्कि वर्तमान परिस्थितियों, साधन तथा वातावरण को ध्यान में रखकर कार्य भी करना चाहिए। इसके साथ ही हमें अपने उपदेशकों को समुचित मान सम्मान भी देना चाहिए।

18. **श्री ब्रह्मदत्त शर्मा (फिरोजपुर)**—ने सदन को आर्य अनाथालय फिरोज-पुर के विषय में अवगत कराया।

19. **श्री मलिक बोधराज**—ने सुझाव प्रस्तुत किया कि वैदिक सिद्धान्तों तथा आदर्शों के सम्बन्ध में अनेकानेक प्रतियोगिताओं का आयोजन समाज के अन्दर करना चाहिए। ग्रीष्मावकाशों में अपनी शिक्षण संस्थाओं के अन्तर्गत आध्यात्मिक

शिविरों का आयोजन किया जाना चाहिए। सदस्यता शुल्क 25 पैसे के स्थान पर 1 रुपया कर देना चाहिए।

20. **श्री तिलकराज कोहली (दिल्ली)**—ने सुझाव दिया कि महात्मा हंसराज साहित्य विभाग द्वारा प्रकाशित पुस्तकें कम से कम दामों पर साधारण जनता के लिए उपलब्ध कराने की व्यवस्था की जानी चाहिए। पुस्तकों का प्रचार आर्य जगत साप्ताहिक के माध्यम से अधिक से अधिक करना चाहिए।

21. **श्री अमरजीत सिंह उपदेशक (हरियाणा)**—ने कहा कि हमें अपने उपदेशकों के लिए केन्द्र की ओर से निःशुल्क साहित्य की व्यवस्था करनी चाहिए, ताकि वे उस साहित्य को जहां भी वह जायें जनता में वितरित कर सकें।

22. **श्री एस० आर गौतम (नई दिल्ली)**—ने भी आर्य समाज के अधिक से अधिक प्रचार तथा प्रसार करने के ऊपर बल दिया।

23. **श्री नरेन्द्र अवस्थी (नई दिल्ली)**—ने सुझाव दिया कि आर्य समाज का अधिक से अधिक प्रचार तथा प्रसार करने के लिए हमें धन की भी व्यवस्था करनी चाहिए।

24. **प्रो० वेद सुमन जी (करनाल)**—ने कहा कि हमें अपने कालेजों में वेद संगोष्ठियों का आयोजन करना चाहिए। इसके साथ ही जिन जिन कालेजों में सुविधाएं हैं वहाँ वहाँ पर वैदिक साहित्य में शोध करने की व्यवस्था करनी चाहिए। शोध कार्य में सहायता करने के लिए इन कालेजों में प्राध्यापकों के रूप में वैदिक विद्वानों की नियुक्ति करनी चाहिए। हमें अपने दयानन्द ब्रह्म महा विद्यालय का भी स्तर और उच्च बनाना चाहिए।

25. **श्री हरिश्चन्द्र जी (थापर नई दिल्ली)**—ने बताया कि हमें सबसे प्रथम अपने को सुधारने का प्रयास करना चाहिए। केवल कुछ को ही नहीं अपितु समस्त आर्य समाजियों को अच्छा उपदेशक बनने का प्रयास करना चाहिए।

26. **कु० विद्या आनन्द (नई दिल्ली)**—ने सुझाव दिया कि आध्यात्मिक शिविर केवल बड़े बड़े कालेजों में ही नहीं अपितु अपने स्कूलों में भी आयोजित करने चाहिए। इन आध्यात्मिक शिविरों में भाग लेने वालों के लिए महर्षि दयानन्द तथा अपनी वैदिक संस्कृति पर भाषण आदि करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। प्रत्येक कालेज तथा स्कूल में साल भर में कम से कम एक बार तो अवश्य ही आध्यात्मिक शिविर लगाने की व्यवस्था करना चाहिए।

27. **प्रि० सी० एल० अरोड़ा (जालन्धर)**—ने सदन के लिए जालन्धर स्थित सभा की भूमि के विक्रय करने के सम्बन्ध में अवगत कराया। उन्होंने सुझाव

दिया कि सभा इस भूमि को तीन तीन टुकड़ों में विभक्त करवाए । भूमि को नीलाम करने के लिए भी अपनी ओर से व्यक्तिगत प्रयास किया जाना चाहिए ।

उपरोक्त सज्जनों के सुझाव, विचार-विमर्श के पश्चात सभा का विवरण नोट किया गया और सभा अधिकारियों ने विश्वास दिलाया कि आगामी वर्ष में उपरोक्त सभी सुझावों को कार्यान्वित करने का प्रयास किया जावेगा ।

3. सर्व सम्मति से वर्ष 1978-79 के बजट को स्वीकृत किया गया ।

4. आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रधान पद के लिए श्री जगन्नाथ कपूर (यमुना नगर) ने लाला सूरजभान जी का नाम प्रस्तावित किया । इस प्रस्ताव का समर्थन डा० गणेशदास जी तथा महाशय किशनचन्द जी ने किया । इस प्रकार सर्व सम्मति से लाला सूरजभान जी प्रधान पद के लिए निर्वाचित किए गए । कार्यकारिणी के शेष अधिकारियों, प्रतिष्ठित तथा अन्य अन्तरंग सदस्यों को चुनने का अधिकार सभा प्रधान लाला सूरजभान जी के लिए प्रदान किया गया ।

5. महात्मा हंसराज साहित्य विभाग की ओर से सदन को अवगत कराया गया कि इस वर्ष प्रि० दीवानचन्द तथा लाल सूरजभान जी द्वारा लिखित पुस्तकों का प्रकाशन सभा ने 30 हजार रुपये की लागत से कराया है । यह पुस्तकें समस्त डी० ए० वी संस्थाओं के लिए पर्याप्त संख्या में भेजी जा चुकी हैं । इन पुस्तकों के पुनः प्रकाशन से वैदिक धर्म के प्रचार तथा प्रसार में आशातीत वृद्धि हुई है ।

अधिवेशन के अन्त में सभा प्रधान लाला सूरजभान जी ने उपस्थित समस्त आर्य बन्धुओं के प्रति अपना हार्दिक आभार व्यक्त किया । सभा के कार्य में विशेष सहायता करने वाले कुछ अधिकारियों के प्रति उन्होंने अपना हार्दिक आभार व्यक्त किया, जिनके अहर्निश प्रयत्नों से सभा का समस्त कार्य इस वर्ष अत्यन्त तीव्र गति से चला । अन्य जिन लोगों ने सभा के कार्य संचालन में सहायता प्रदान की, उनके प्रति भी सभा प्रधान जी ने अपना आभार प्रकट किया । उन्होंने अपने भाषण में कहा कि आर्य समाज का क्षेत्र बहुत विशाल है तथा हमारे सामने अभी कई कार्यक्रम हैं, कई चुनौतियां हैं जिनके लिए हमें अभी प्रयत्न करना है ।

माननीय सभा प्रधान जी ने बताया कि जो उत्तरदायित्व आप लोगों ने मेरे इन कमजोर कन्धों पर डाला है, मैं उसे मना नहीं कर सकता । यह तो मेरा कर्तव्य है कि मैं महर्षि के मिशन को पूरा करने में अपना कुछ योगदान कर सकूं । मेरा काम इस को प्राप्त कर किसी पर सत्ता जमाने का नहीं है । मुझे तो आप सभी बन्धुओं को संगठित्र कर आर्य समाज का काम लेना है । इस विशाल कार्य को पूरा करने केग लिए म अकेला कर ही क्या सकता हूं । इस कार्य में हमें आप सभी बन्धुअ ों का सहयो

चाहिए। आशा है कि गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी आप सभी लोगों का पूरा पूरा सहयोग हमें प्राप्त होता रहेगा। आप सभी बन्धुओं ने जो बहुमूल्य सुझाव मेरे समक्ष रक्खे हैं, उनसे मैं बहुत ही प्रसन्न हूं। मैं इन सुझावों को कार्यान्वित करने का पूरा पूरा प्रयास करूंगा। इस अवसर पर जो सामूहिक रूप से विचार विमर्श हुआ है—यह आर्य समाज के लिए बहुत ही लाभप्रद सिद्ध होगा। मैं इन सुझावों के लिए आप सभी का आभारी हूं।

कालेज पार्टी या गुरुकुल पार्टी जैसी दलबन्दी पर कुठाराघात करते हुए उन्होंने बताया कि इसे कोरा ढकोसला समझता हूं। इस प्रकार की भावनाएँ उन्हीं लोगों की हैं जो आर्य समाज पर अपनी सत्ता जमाए रखना चाहते हैं। मुझे इस प्रकार की दलबन्दी में बिलकुल विश्वास नहीं है।

सभा प्रधान जी ने कालेजों तथा स्कूलों में धार्मिक शिक्षा प्रदान करने के सम्बन्ध में आने वाली वैधानिक कठिनाईयों के विषय में भी सदन को अवगत कराया कि आज धर्म दासी बन गया है और राजनीति रानी बन गई है लेकिन पूर्व में ऐसा नहीं था। सभा प्रधान जी ने कहा कि हमें कठिनाइयों का सामना एक आर्य समाजी होने के नाते अवश्य ही करना चाहिए।

6. इस बैठक में यह भी निश्चित किया गया कि सभी बैंकों के एकाउन्ट्स को सभा प्रधान श्री सूरजभान जी, उप प्रधान—श्री दरबारी लाल जी, श्री शान्तिनारायण जी, तीनों में से एक तथा सभा मंत्री श्री रामनाथ जी सहगल या श्री रामदास जी खोसला, सभा कोषाध्यक्ष—दोनों में से एक आपरेट करेंगे।

अधिकारी तथा अन्तरंग सदस्य, (1978-1979)

प्रधान— लाला सूरजभान, सी-27, डिफेन्स कालोनी, नई दिल्ली-110024

उप-प्रधान 1. श्री शान्तिनारायण, मंत्री, डी० ए० वी० कालेज कमेटी, नई दिल्ली-52
2. प्रि० श्री चमनलाल अरोड़ा, डी० ए० वी० कालेज, जालन्धर शहर
3. श्री जे० एन० कपूर, ए-116, माडल टाउन, यमुनानगर, अम्बाला
4. प्रि० श्री आर० एन० मेहता, डी० ए० वी० कालेज, अमृतसर
5. श्री चौ० रा० सा० प्रतापसिंह, ५७-एल, माडल टाउन, करनाल
6. श्री दरबारीलाल, जी-12, अशोक विहार, दिल्ली-110052
7. श्री कुमारी वि० आनन्द, एन-66, पंचशील पार्क, नई दिल्ली-110017
8. श्री अमृतलाल पुरी, प्रिंटिंग प्रेस, धर्मशाला, कांगड़ा (हिमाचल प्रदेश)

सभा-मंत्री श्री रामनाथ सहगल, ए-419, डिफेंस कालोनी, नई दिल्ली-110024

सह-मंत्री श्री खेमचन्द मेहता, सी-39. निजामुद्दीन ईस्ट, नई दिल्ली

उप-मंत्री 1. श्री वैद्य विद्यासागर, आर्य समाज, लारेंस रोड, अमृतसर (पंजाब)
2. श्री गणेशदास आर्य, 123, माडल टाउन, करनाल (हरियाणा)
3. श्री प्रि० रमेशचन्द जीवन, डी० ए० वी० कालेज, कांगड़ा (हि० प्र०)
4. श्री गिरीशचन्द्र खोसला, एफ-67, अशोक विहार, दिल्ली-110052

कोषाध्यक्ष श्री रामदास खोसला, डी-25, हौज खास, नई दिल्ली

क्षेत्रीय उप-सभाओं के अधिकारी

दिल्ली

श्री दरबारीलाल — प्रधान
श्री गिरीशचन्द्र खोसला — मंत्री

पंजाब

प्रि० श्री आर० एन० मेहता — प्रधान
श्री वैद्य विद्यासागर — मंत्री

हरियाणा

श्री चौ० राय० सा० प्रतापसिंह — प्रधान
श्री डा० गणेशदास (करनाल) — मंत्री

हिमाचल प्रदेश

श्री अमृतलाल पुरी — प्रधान
प्रि० श्री रमेशचन्द्र जीवन — मंत्री

केरल

श्रीमती सुगन्धी बाई, आर्य समाज राम मोहन रोड, कालीकट — अधिष्ठात्री

प्रतिष्ठित सदस्य

1. श्री अमर स्वामी सरस्वती, दयानन्द नगर, गाजियाबाद (उ० प्र०)
2. श्री डा० जी० एल० दत्त: 42/44, पंजाबी बाग, नई दिल्ली-110026
3. श्री मुल्कराज भल्ला, 1780/81, हरध्यान सिंह रोड, करोल बाग, नई दिल्ली
4. श्री जस्टिस जीवनलाल कपूर, 12, अशोक रोड, नई दिल्ली-110001
5. डा० धर्मवीर, 54 आनन्द लोक, नई दिल्ली-49
6. श्री जस्टिस टेकचन्द कोठी नं० 32, सेक्टर 4, चण्डीगढ़
7. श्री यश, सम्पादक, 'दैनिक मिलाप', जालन्धर शहर
8. श्री ओमप्रकाश गोयल, 35, निजामुद्दीन ईस्ट, नई दिल्ली

9. श्री प्रिं० वी० एस० बहल, कोठी नं० 590, सेक्टर 18-बी, चण्डीगढ़
10. श्री प्यारेलाल, प्रिंसिपल, साईंदास ए० एस० हा० से० स्कूल, जालन्धर शहर
11. श्री भीमसेन बांस बाजार, जालन्धर शहर
12. श्री पं० पद्मदेव, ग्राम पोस्ट सुमेरकोट, तहसील रोहर, जिला महासू (हि० प्र०)
13. श्री रणवीर, सम्पादक, 'दैनिक मिलाप', नई दिल्ली
14. श्री स्वामी प्रकाशानन्द सरस्वती, वैदिक साधन आश्रम, निकट रेलवे स्टेशन, गुरदासपुर (पंजाब)
15. प्रिं० श्रीमती एस० राय, मेहरचन्द महाजन डी० ए० वी० महिला कालेज, चण्डीगढ़
16. श्रीमती सूर्यभानु, सी-27, डिफेन्स कालोनी, नई दिल्ली-110024
17. श्री सन्तराम सैनी, नं० 308, सेक्टर 9 डी०, चण्डीगढ़
18. डा० जे० एन० सेखडी, 3 सी/46, नेहरु नगर, गाजियाबाद (उ० प्र०)
19. श्री कर्मचन्द महाजन, बी/61, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली
20. श्री जगन्नाथ ग्रोवर, डी० ए० वी० हा० से० स्कूल, चण्डीगढ़
21. श्री धर्मपाल सेठ, ई-223, ग्रेटर कैलाश, नं० 2, नई दिल्ली-48

अन्तरंग सदस्य

1. प्रिं० श्री तिलकराज गुप्ता, हंसराज माडल स्कूल, नई दिल्ली-26
2. श्री रामधन मुंजाल, डी-41, कालका-जी, नई दिल्ली
3. श्री महाशय किशनचन्द, जे० 35, साउथ एक्सटेंशन, पार्ट-', नई दिल्ली
4. श्री न्यादरमल गुप्ता, 1104, हरजसमल बाजार सीताराम, दिल्ली-110006
5. पं० दयाराम शास्त्री, नं०/6590, गली नं० 3, ब्लाक नं० 9, देव नगर, नई दिल्ली-5
6. पं० पृथ्वीनाथ शास्त्री, 3:6, रानी बाग, दिल्ली-34
7. प्रिं० श्री मोहनलाल, ई/18?, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली
8. श्री दुर्गादास, सम्पादक, 'आर्य गजट साप्ताहिक', पटौदी हाउस, नई दिल्ली
9. श्री शान्ती प्रकाश बहल, ई-90, ग्रेटर कैलाश, नई दिल्ली-48
10. श्री जे० एन० चौधरी, ई/25, बसन्त विहार, नई दिल्ली
11. श्री रामशरण दास आहूजा, 35/30, वेस्ट पटेल नगर, नई दिल्ली
12. श्री ईश्वर चन्द आर्य, 3/51, पंजाबी बाग, नई दिल्ली-26
13. श्री जी० पी० चोपड़ा, हंसराज कालेज, दिल्ली-7
14. श्री एस० आर० गौतम, ए-46, ईस्ट आफ कैलाश, नई दिल्ली-48

15. श्री राज कुमार सेठ, बी/32, पंचशील इन्क्लेव, निकट चिराग दिल्ली, नई दिल्ली
16. प्रि० श्री राजेन्द्र पराशर, डी० ए० वी० हा० से० स्कूल, दरियागंज, नई दिल्ली-2
17. श्री नन्द किशोर भाटिया, जे 6/12, राजोरी, गार्डन, नई दिल्ली
18. श्री चमनलाल, एच० 64, अशोक विहार, दिल्ली-52
19. श्री मामचन्द रिवारिया, 1748, चौक भाई मुबारिक, कूचा पातीराम, दिल्ली-6

पंजाब

1. श्री ब्रह्मदत्त शर्मा, हीरा मण्डी, फिरोजपुर शहर (पंजाब)
2. श्री वेद प्रकाश मल्होत्रा, एल/280, माडल टाउन, जालन्धर
3. श्री सत्यानन्द मुंजाल, आर्य समाज, माडल टाउन, लुधियाना (पंजाब)
4. श्री इन्द्रजीत तलवाड़, डी० ए० वी० हा० से० स्कूल, चण्डीगढ़
5. प्रि० श्री० पी० डी० चौधरी, डी० ए० वी० कालेज, दसुआ, होशियारपुर
6. श्री वेदव्रत मेहरा, डी० ए० वी० कालेज, जालन्धर शहर (पंजाब)
7. प्रि० कुमारी कमला खन्ना, हंसराज महिला महाविद्यालय, जालन्धर शहर

हरियाणा

1. प्रि० श्री मेलाराम, डी० ए० वी० कालेज, करनाल (हरियाणा)
2. श्री हरिराम, हैडमास्टर, अम्बाला शहर
3. श्री मामचन्द, आर्य समाज, करनाल (हरियाणा)
4. पं० सत्यप्रिय आचार्य, दयानन्द उपदेशक ब्रह्म महा विद्यालय, हिसार
5. श्री एच० सी० भगत, डी० ए० वी० हा० से० स्कूल, यमुना नगर, अम्बाला
6. प्रि० श्री वी० के० कोहली, सोहनलाल कालेज आफ एजूकेशन, अम्बाला (हरि०)
7. प्रि० श्री पी० के० बन्सल, डी० ए० वी० कालेज, नन्योला, अम्बाला
8. प्रि० श्री नारायण दास ग्रोवर, दयानन्द कालेज, हिसार, अम्बाला
9. श्री हंसराज कड़वल, 76 आर०, माडल टाउन, पानीपत (हरियाणा)

हिमाचल प्रदेश

1. श्री मुरारी लाल आर्य, 115/6, मण्डी, (हिमाचल प्रदेश)
2. श्री भीमसैन मेहरा, डी० ए० वी० हाई स्कूल, शिमला (हि० प्र०)

चण्डीगढ़

1. प्रि० श्री त्रिलोकी नाथ, डी० ए० वी० कालेज, चण्डीगढ़
2. प्रि० श्री हंस स्वरूप, आर/577, सेक्टर 18 बी, ,,
3. प्रो० कृष्ण आर्य, नं० 1125, सेक्टर 15 बी, ,,

4. प्रि० श्री वी० वी० गक्खड़, डी० ए० वी० हा० से० स्कूल, चण्डीगढ़
5. प्रो० जिन्दल डी० ए० वी० कालेज, चण्डीगढ

महाराष्ट्र

प्रि० श्री देवराज गुप्ता, दयानन्द कालेज, शोलापुर (महाराष्ट्र)

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली के अधीन कार्य करने वाले उपदेशकों और कर्मचारियों की सूची:—

(क) सभा कार्यालय

1. पं० मगनानन्द जी [illegible] कार्यालयाध्यक्ष
2. श्री साधूराम जी — लिपिक
3. श्री चिरंजीलाल जी, पार्ट टाईम एकाउण्टेण्ट
4. श्री सोहनलाल जी, पार्ट टाईम टाइपिस्ट
5. श्री गजेन्द्र प्रसाद — सेवक
6. श्री राकेश प्रसाद — सेवक
7. श्री मती कान्ता — सफाई कर्मचारी

(ख) प्रचारक मण्डल—केन्द्र एवं उप-सभा, दिल्ली

1. आचार्य पुरुषोत्तम जी एम० ए०, वेद प्रचार अधिष्ठाता
2. पं० सत्य प्रकाश जी, महोपदेशक
3. श्री मनोहर लाल जी, भजनोपदेशक
4. श्री हरि दत्त जी, भजनोपदेशक
5. श्री वेद व्यास जी आर्य, भजनोपदेशक

(ग) उप-सभा पंजाब एवं चण्डीगढ़

1. पं० त्रिलोक चन्द्र जी शास्त्री — महोपदेशक
2. श्री मदन मोहन जी — भजनोपदेशक
3. श्री मेलाराम जी — भजनोपदेशक
4. श्री हजारीलाल जी — भजनोपदेशक
5. श्री भूषण कुमार जी — पार्ट-टाईम लिपिक

(घ, उप-सभा हरियाणा

1. श्री अमर सिंह जी — वेद प्रचार अधिष्ठाता
2. पं० प्रभु दयाल जी — उपदेशक
3. श्री ठाकुर दुर्गा सिंह जी तूफान — भजनोपदेशक

4. श्री जगतराम जी	भजनोपदेशक
5. श्री वस्तीराम जी	,,
६. श्री सुमेर सिंह जी	,,
7. श्री नत्थूराम जी	,,
8. श्री जीतराम जी	ढोलक वादक
9. प्रो० वेद सुमन जी	अधिष्ठाता-अवैतनिक
10. श्री मुंशीराम जी	भजनोपदेशक

(ङ) उप-सभा हिमाचल प्रदेश

पं० श्यामनारायण जी	उपदेशक

(च) केरल सेन्टर

श्रीमती सुगन्धी बाई आर्या, कालीकट	अवैतनिक अधिष्ठात्री

(छ) महात्मा आनन्द स्वामी निधि स्मारक

आचार्य भगवान देव जी	संयोजक

(ज) आर्य अनाथालय फिरोजपुर कैन्ट

1. श्री रामचन्द्र आर्य	अधिष्ठाता-अवैतनिक
2. श्री वी० डी० महाजन	सहायक अधिष्ठाता
3. श्री गजेन्द्र सिंह जादों	स्टोर-कीपर एवं जनरल लिपिक
4. श्री रामलोट जी	सेवक
5. श्री राजवली जी	चौकीदार
6. श्री रतीपाल जी	माली
7. श्रीमती कमला जी	सफाई कर्मचारी
8. श्री हरबंस लाल जी	सफाई सेवक
9. श्रीमती लाजवन्ती जी	रसोईयन
10. श्री दाताराम	सेवक एवं चौकीदार
11. श्री सूरजराय जी	ग्वाला
12. श्री राम अधार	चौकीदार

कार्यकारिणी सभा की बैठकें

इस वर्ष कार्यकारिणी सभा की तीन बैठकें हुई—

पहली अन्तरंग सभा 23-4-78 को आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली में सभा प्रधान श्री सूरजभान जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इसमें दिल्ली, यमुना नगर, करनाल तथा चण्डीगढ़ से पधारे 18 अन्तरंग सदस्यों ने भाग लिया। इस बैठक में निम्नलिखित कार्यवाही हुई—

(1) अन्तरंग सभा की गत बैठक दिनाँक 20-3-78 की कार्यवाही की सम्पुष्टि की गई।

(2) श्री रामदास खोसला, कोषाध्यक्ष ने 1978-79 का बजट प्रस्तुत किया। आवश्यक पूछताछ और निर्देशों के पश्चात इसे वार्षिक अधिवेशन में प्रस्तुत करने की सहमति प्रदान की गई।

(3) वार्षिक रिपोर्ट की रूपरेखा से अवगत कराया गया।

(4) डा० गोवर्धनलाल जी दत्त ने आर्य जगत (साप्ताहिक) में प्रकाशित 'वेदों में भौगोलिक इतिहास तथा संस्कृति' के एक लेख की ओर ध्यान दिलाया और उसकी आलोचना की। सभा मंत्री ने इस लेख से कुछ भ्रम फैलने का सम्भावना से विश्वास दिलाया कि महात्मा अमर स्वामी जी की ओर से इस लेख पर वह अपने विचार प्रकट करके भ्रम निवारण करेंगे। तथा सम्पादक जी को भविष्य में सावधानी बरतने को कहा गया।

(5) सार्वदेशिक सभा के 2-4-78 के पत्र पर विचार हुआ। प्रादेशिक सभा की बैठक में डा० गोवर्धनलाल जी दत्त की सदस्यता के विषय में शंका पर कुछ सभासदों के दृष्टिकोण की भर्त्सना की गई और भविष्य में सार्वदेशिक सभा से आर्य प्रतिनिधि सभा को ऐसे विषय पर पहले से ही सावधान रहने की प्रार्थना की गई। सार्वदेशिक सभा का ध्यान इस ओर भी दिलाया गया कि वह भविष्य में प्रादेशिक सभा के प्रधान जी की स्वीकृति के बिना स्वयं किसी को इस सभा की ओर से प्रतिनिधि न बनाए।

(1) महात्मा आनन्द स्वामी स्मारक निधि तदर्थ समिति का गठन किया गया और निश्चय हुआ कि—

(क) श्री रणवीर जी से प्रार्थना की जाये कि महात्मा जी की पुस्तकों के प्रकाशन का अधिकार इस समिति को प्रदान करें एवं धन से इस समिति की विशेष सहायता करें।

(ख) इस निधि के लिए प्रधान जी एक उप समिति का गठन करें।

(ग) प्रधान की इस समिति के लिए एक योग्य संयोजक को नियुक्त करें।

(घ) महात्मा जी के जन्म दिवस पर सरकार से डाक टिकट निकालने की प्रार्थना की जाये।

(ङ) मन्दिर मार्ग का नाम 'महात्मा आनन्द स्वामी मार्ग' रक्खा जाये।

(2) आगामी वर्ष आर्य अनाथालय फिरोजपुर की शताब्दी मनाई जाये।

(3) निश्चय हुआ कि समस्त आर्य समाजों की रजिस्ट्रियाँ पड़ताल करके सम्बन्धित उप सभाओं में रक्खी जावें ताकि समय पर काम आ सकें।

(4) श्री जगदीशचन्द्र जी पुरी द्वारा आर्य अनाथालय, फिरोजपुर को 3500 रुपये का दान उनकी शर्तों के आधार पर स्वीकार किया गया।

(5) निश्चय किया गया कि महात्मा हंसराज दिवस 19 अप्रैल के स्थान पर 15-10-78 को मनाया जाये।

(6) कुमारी विद्यावती जी आनन्द को महात्मा हंसराज साहित्य विभाग का अधिष्ठाता नियुक्त किया गया।

(7) निश्चय हुआ कि सभा को हांसी स्थित भूमि के विक्रय से जो धन प्राप्त हो उससे श्री रामशरण दास स्मारक निधि बनाई जाये जो जिला हिसार में वेद प्रचार हेतु व्यय की जावे तथा इस निधि के संचालन के लिए एक उप समिति का गठन किया गया।

(8) निश्चय हुआ कि सभा सम्बन्धित आर्य समाजों और संस्थाओं के हिसाब-किताब की जांच पड़ताल के लिए एक इण्टरनल आडीटर की नियुक्ति करे।

शेष वची हुई धन राशि अनाथालय के कार्यों में व्यय की जावे। सभा का, हांसी स्थित भूमि के सम्बन्ध में श्री प्रकाशचन्द जी अग्रवाल के पत्र कि श्री रामशरण दास फण्ड के स्थान पर 'निधि' परिवर्तित किया जाये, पर विचार किया गया तथा सर्व-सम्मति से निश्चय किया गया कि फण्ड के स्थान पर 'निधि' परिवर्तित कर लिया जाये। श्री प्रकाशचन्द जी अग्रवाल ने वतलाया कि इस निधि के सदस्यों में उनके एक बड़े भाई जो वम्बई में रहते हैं उनका नाम भी इसमें सम्मिलित कर लिया जाये, जिसे सर्व सम्मति से स्वीकार कर लिया गया। उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि यदि श्री वी० डी० गक्खड़, प्रिंसिपल को जिनके नाम सभा ने पावर आफ अटार्नी दी हुई

है, यदि उन्हें इस भूमि का रुपया सरकार से प्राप्त करने में कोई परेशानी हो रही हो तो यह पावर आफ अटार्नी उनके नाम कर दी जावे ताकि वह यह रुपया सरलता तथा शीघ्रता से सरकार से प्राप्त कर सकें। इस सम्बन्ध में निश्चय किया गया कि सर्वप्रथम पत्र व्यवहार करके श्रीगक्खड़ जी से इस सम्बन्ध में वस्तुस्थिति की जानकारी प्राप्त की जावे तथा तभी इस सम्बन्ध में आवश्यक कार्यवाही की जावे।

वेद प्रचार

सभा का मुख्य उद्देश्य वेद प्रचार एवं शिक्षा का प्रसार करना है। यह लक्ष्य निम्नलिखित साधनों और माध्यमों द्वारा पूरा किया जाता है—

(क) उपदेशकों द्वारा
(ख) साहित्य द्वारा
(ग) विचार गोष्ठियों द्वारा
(घ) सभा के मुख पत्र 'आर्य जगत्' साप्ताहिक द्वारा
(ङ) डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्तृ सभा की संस्थाओं के द्वारा।

(क) उपदेशकों द्वारा वेद प्रचार

इस कार्य के लिए सभा कार्यालय में वेद प्रचार विभाग खुला हुआ है जिसके मुख्य अधिष्ठाता और प्रबन्धक आचार्य पुरुषोत्तम जी एम० ए० हैं। वह प्रति मास विभिन्न आर्य समाजों और संस्थाओं के साप्ताहिक सत्सगों एवं विशेष अवसरों तथा समारोहों के लिए प्रचार कार्यक्रम बनाते हैं। प्रायः प्रत्येक उप सभा के अन्तर्गत क्षेत्र का प्रचार कार्य सम्बन्धित उप सभा ही करती है। परन्तु विशेष अवसरों एवं आयोजनों पर सभा के दिल्ली स्थित मुख्य कार्यालय से उपदेशक एवं भजनीक भी भेज दिए जाते हैं तथा उप सभाओं का पारस्परिक आदान प्रदान भी होता है। यह उपदेशक महानुभाव तीन श्रेणियों में विभक्त हैं—

(1) सभा अधिकारी
(2) अवैतनिक विद्वान महानुभाव
(3) वैतनिक सभा उपदेशक तथा भजनीकगण।
(4) विशेष आमंत्रित महानुभावों द्वारा प्रचार

सभा अधिकारियों द्वारा वेद प्रचार

सभा अधिकारियों में प्रचार कार्य का मुख्य भार सभा प्रधान लाला सूरजभान जी पर ही रहा। मास का कोई ही सप्ताह होगा जबकि वे प्रचार कार्य हेतु कहीं न कहीं आमंत्रित न हों। कई बार तो सप्ताह में लगातार कई दिन और दिनमें भी एक से अधिक बार प्रवचनों के लिए उनको जाना पड़ा। प्रधान जी को न केवल स्थानीय रूप में दिल्ली में ही वरन् उप सभाओं के क्षेत्रों—पंजाब, चण्डीगढ़, हरियाणा तथा हिमाचल

प्रदेश में भी जाना पड़ा। इसके साथ वह अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, नैरोबी में भाग लेने के लिए उनके नियंत्रण पर भी वहां गए। इन आयोजनों में उनको कई स्थानों पर थैलियाँ भी भेंट की गई जिन्हें वे सर्वदा वेद प्रचारार्थ सभा अथवा सम्बन्धित उप सभाओं को या समाजों को ही प्रदान करते रहे। इस वर्ष प्रधान जी ने निम्नलिखित आर्य समाजों तथा संस्थाओं में अपने प्रवचन किए—

अम्बाला तथा इस जिले के नन्योला, मटेहड़ी, शेखा चौड़, मस्तपुर, इस्माइलपुर, पलौरवाहपुर, पंजोला, खरचनपुर तथा उदयपुर आदि ग्रामों में प्रचार किया। अम्बाला में प्रधान जी को 5100 रुपये, नन्योला में 3100 रुपये तथा उदयपुर में 1100 रुपये की थैलियां भेंट की गई। आर्य समाज, माडल टाउन, गुड़गावां, आर्य समाज, वाजार सीताराम, अशोक विहार, ग्रेटर कैलाश, महात्माहंसराज दिवस, ऋषि बोधोत्सव, बोट क्लब समारोह, आर्य कन्या सदन, सूरजकुण्ड वार्षिकोत्सव, नैरोबी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन। इसके अतिरिक्त वह अनगिनत अन्य समारोहों में भी पधारे।

प्रधान जी के साथ प्रायः श्री दरबारी लाल जी, उप प्रधान तथा सभा मंत्री श्री रामनाथ जी सहगल भी जाते रहे। इसके अतिरिक्त सभा के मंत्री श्री रामनाथ सहगल जी अकेले भी कई समारोहों में भाग लेने गए। जिनमें मेरठ आर्य शताब्दी तथा टंकारा में ऋषिबोधोत्सव, बोट क्लब प्रचार केन्द्र, दिल्ली, राजगढ़ (हिमाचल प्रदेश) आदि स्थानों के उत्सव उल्लेखनीय हैं।

सभा के सह मंत्री श्री खेमचन्द जी मेहता ने भी कई स्थानीय और अन्य समाजों में प्रवचन दिए, जिनमें प्रमुख आर्य समाजें निम्नलिखित हैं :—

आर्य समाज ग्रीन पार्क, दिल्ली, साउथ एक्सटेन्शन, नई दिल्ली, फिरोजपुर नगर तथा वैदिक मोहन आश्रम हरिद्वार तथा आर्य अनाथालय फिरोजपुर।

सभा के अवैतनिक विद्वान प्रचारकों द्वारा प्रचार

निम्नलिखित विद्वानों ने इस वर्ष दिल्ली एवं दिल्ली से वाहर जाकर वेद प्रचार में भाग लिया :—

1. प्रि० तिलकराज गुप्ता
2. श्री विक्रम सिंह जी शास्त्री
3. प्रिंसिपल श्री कृष्ण चन्द्र जी
4. श्री दयाराम जी शास्त्री
5. श्री जैमिनी शास्त्री
6. आचार्य भगवान देव

सभा इन सभी महानुभावों की आभारी है।

विशेष आमंत्रित उच्च कोटि के वक्ता :—

1. श्री पं० शिव कुमार जी शास्त्री
2. श्री ओम् प्रकाश जी त्यागी
3. श्री उत्तम चन्द जी शरर
4. श्री मेला राम जी वर्क
5. स्वामी सत्यप्रकाश जी
6. प्रिं० मोहन लाल जी
7. महात्मा अमर स्वामी जी

ठाकुर विक्रम सिंह जी शास्त्री एम० ए० यद्यपि सभा के वैतनिक उपदेशक नहीं है तथापि विगत वर्ष सभा को वेद प्रचार कार्य में उनसे अत्यधिक सहयोग प्राप्त हुँआ। जहां भी, जब भी प्रचार की आवश्यकता पड़ी है, उन्होंने उस प्रचार कार्य को सहर्ष स्वीकार किया है। दिल्ली तथा दिल्ली से बाहर भी शास्त्री जी ने पहुंच कर वेद के संदेश को प्रसारित किया है। वैदिक सत्संग बोट क्लब पर भी उन्होंने. कई महीनों प्रचार कार्य सम्भाला है।

प्रिंसिपल कृष्णचन्द्र शास्त्री जी के देहावसान से हमने एक कर्मठ, निष्ठावान, विद्वान व्यक्ति खो दिया। प्रिंसिपल कृष्ण चन्द्र जी बड़ी योग्यता के साथ 'आर्य जगत' का सम्पादन कार्य करते थे। उनका अध्ययन विशाल था और अनुभव प्रगाढ़। साप्ताहिक सत्संगों में तथा कथाओं के द्वारा उनके विद्वत्तापूर्ण विचारों का लाभ आर्य जनता को प्राप्त होता था। दिल्ली की प्रायः समस्त आर्य समाजों में जाकर वैदिक विचारों को जन-जन तक पहुंचाने का आजीवन प्रयत्न करते रहे। सभा उपरोक्त सब विद्वानों की आभारी है।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा दिल्ली

प्रादेशिक सभा का मुख्य कार्यालय दिल्ली में होने से उप सभा का कार्य अत्यधिक महत्वपूर्ण, उत्तरदायी हो जाता है। सभा द्वारा संरक्षित प्रत्येक कार्य में दिल्ली उप सभा के अधिकारी ही विशेष सक्रिय रहते हैं। प्रौढ़ शिक्षा, नशाबन्दी, गो रक्षा, स्थानीय सभी समारोह आदि के अतिरिक्त राजधानी की सरकारी गैर सरकारी, धार्मिक सामाजिक तथा अन्य संस्थाओं से सम्पर्क का कार्य दिल्ली उप सभा के माध्यम से ही किया जाता है। विगत वर्ष हमारे मुख्य कार्य इस प्रकार रहे —

आर्य स्त्री समाज निजामुद्दीन

दक्षिण दिल्ली स्थित निजामुद्दीन की आर्य स्त्री समाज विगत 18 वर्षों से सत्संग भवन के लिये भूमि हेतु प्रयत्न शील थी। समाज की अधिकारिणी भूमि प्राप्त न होने से अत्यन्त निराश व क्षुब्ध थीं। सत्संग तथा अन्य कार्यों के लिये भवन की अत्यन्त आवश्यकता थी। हमारे सहमंत्री श्री खेमचन्द जी मेहता के सुझावानुसार समाज की अधिकारियों ने उप सभा के प्रधान श्री दरबारी लाल जी से सम्पर्क स्थापित कर अपनी संरक्षणता देने की प्रार्थना की। फल स्वरूप पश्चिमी निजामुद्दीन में भूमि लेकर उप सभा के संरक्षण में एक सुन्दर सत्संग भवन का निर्माण किया गया। जिसका उद्घाटन हमारे उप सभा के प्रधान द्वारा किया गया समारीह में स्थानीय निगम व महानगर पार्षद के अतिरिक्त सभी समाजों के प्रनिनिधि उपस्थित थे तत्पश्चात् उपदेशकों की गोष्ठी भी हुई। राजधानी, भारत अथवा विश्व भर में किसी भी स्त्री समाज के पास अपना निजी भवन नहीं है। यह उप सभा के लिए अत्यन्त हर्ष पूर्ण वात है।

आर्य समाज जहांगीरपुरी

गत 1977 में आई भीषण बाढ़ में सभा ने बाढ़ पीड़ित राहत कार्य किया वह सर्वत्र प्रशंसनीय है। सभा द्वारा जहाँगीरपुरी में लगाये गए एक मासिक राहत शिविर से स्थानीय नागरिक अत्यन्त प्रभावित थे। इस वर्ष 16 अप्रैल को जहांगीरपुरी में आर्य समाज की विधिवत स्थापना कर दी गई थी। वहां हमारे उपदेशक नियमित रूप से जाकर प्रसार आदि का कार्य करते रहे हैं।

स्थानीय समाजों में प्रधानजी का अभिनन्दन

सभा द्वारा किये जा रहे प्रचार व्यय की पूर्ति के लिए विगत दिनों निश्चय किया गया कि स्थानीय समाजें अपने यहां सभा प्रधान जी को आमन्त्रित कर उनका अभिनन्दन करें तथा उन्हें वेद प्रचार हेतु एकत्रित थैली भेंट करें। इस कार्यक्रम की श्रृंखला का शुभारम्भ उप सभा के उप मुख्यालय आर्य समाज अशोक विहार से किया गया। कुलाची हंसराज माडल स्कूल के प्रागण में आयोजित कार्यक्रम में श्री सूरजभान जी का भव्य स्वागत किया गया। प्रधान जी के विद्वता पूर्ण ओजस्वी व्याख्यान रूपी ज्ञान गंगा से स्थानीय नागरिकों ने अमृत पान किया। उन्हें वेद प्रचारार्थ 5100रु. की थैली भेंट की गई। तत्पश्चात् प्रीतिभोज का भी आयोजन था। इसी प्रकार आर्य समाज बाजार सीताराम में भी सभा प्रधान जी का अभिनन्दन किया गया तथा 501रु. की थैली भेंट की गई।

वेद प्रचार गोष्ठी

गत वर्ष उप सभा ने जन साधारण तक आर्य समाज के सन्देश को पहुंचाने तथा वेद प्रचार की मूलभूत समस्याओं से समाधान के निराकरण तथा प्रचार को सुदृढ़ बनाने हेतु विविध स्थानों पर आर्य समाज के अधिकारियों तथा उपदेशकों की सम्मिलित गोष्ठियों का कार्यक्रम प्रारम्भ किया था। जिसका अनुकरण दिल्ली की अन्य संस्थाओं ने किया। इस वर्ष सभा द्वारा आयोजित मुख्य गोष्ठी 23 जुलाई 1978 को आचार्य आत्मानन्द जी की अध्यक्षता में आयोजित की गई। गोष्ठी में प्रिन्सिपल लक्ष्मी दत्त दीक्षित, डा० कृष्ण लाल, श्री देशराज चौधरी आदि महानुभावों के अतिरिक्त वैदिक विद्वान् उपदेशक तथा अधिकारी भारी संख्या में उपस्थित थे। सभी वक्ताओं ने वर्तमान कार्यक्रम प्रणाली को बदलने पर बल दिया। इसी अवसर पर दिल्ली विश्वविद्यालय ने स्नातकोत्तर (एम० ए०) के विद्यार्थियों को वेद विषय लेने पर 50) रु० मासिक की छात्रवृत्तियों की उत्साहवर्धक घोषणा की गई।

बोट क्लब में महात्मा हंसराज दिवस

सभा द्वारा स्थापित तथा संचालित संस्था "वैदिक सत्संग बोट क्लब" द्वारा 17 अक्टूबर को मध्याह्न महात्मा हंसराज दिवस सभा प्रधान श्री सूरजभान जी की अध्यक्षता में मनाया गया। भारी संख्या में उपस्थित सरकारी कर्मचारियों ने प्रधान जी का सन्देश मंत्र मुग्ध होकर सुना। इस अबसर पर स्वामी अग्निवेश, स्वामी इन्द्रवेश आदि कई नेता उपस्थित थे।

आर्य प्रादेशिक उप-सभा दिल्ली का अवैतनिक उपदेशक मण्डल

दिल्ली देश की राजधानी है। दिल्ली में आर्य समाज मन्दिरों का चारों ओर जाल सा फैला हुआ है। प्रति रविवार को प्रत्येक आर्य समाज मन्दिर में आर्य जनता श्रद्धा, भक्ति एवं प्रेम से सत्संग में सम्मिलित होती है। आर्य विद्वान् भिन्न-भिन्न आर्य समाज मन्दिरों में पहुंच कर आर्य सत्संग में उपस्थित धर्मपिपासु जनता को अपने स्पष्ट एवं सुलझे विचारों से लाभान्वित करते हैं।

यह हमारे लिए गौरव की बात है कि आर्य प्रादेशिक उप-सभा दिल्ली के पास अत्यन्त अनुभवी उपदेशक मण्डल है। यह विद्वान् उपदेशक महानुभाव सर्दी, गर्मी, वर्षा आदि की किसी प्रकार की भी चिन्ता न करते हुए अनेक प्रकार की असुविधा के बावजूद आर्य समाज मन्दिरों में समय पर पहुंच कर ऋषि-ऋण को उतारने के भाव से दिल्ली जैसे वैविध्यपूर्ण विचारधाराओं से ओतप्रोत जनता में वैदिक धर्म एवं संस्कृति का प्रसार-प्रचार करने में संलग्न हैं।

इस कार्यक्रम को सुचारु रूप से चलाने के लिए आर्य समाज मन्दिरों के मंत्रियों तथा प्रधानों का सहयोग भी पर्याप्त रूप से प्राप्त होता रहा। हम उनके हृदय से आभारी हैं।

निम्नलिखित आर्य विद्वानों से हमें वर्ष भर प्यार भरा सहयोग प्राप्त होता रहा :—

1. श्री परमेश्वरी दास जी भाटिया
2. श्री वेदमूर्ति जी
3. श्री पृथ्वीराज जी शास्त्री
4. श्री ईश्वरदत्त जी एम० ए०
5. श्री ओम्वीर सिंह जी एम० ए०
6. श्री हर प्रकाश जी वन्धु
7. श्री प्रेमचन्द जी श्रीधर
8. श्री देवीचरण जी वंसल
9. श्री चमनलाल जी
10. श्री सत्यदेव जी शास्त्री
11. श्री राम सुभग जी
12. श्री नरेन्द्रजी अवस्थी
13. श्री कैलाश चन्द्र जी
14. श्री शिव कुमार जी

15. श्री गजेन्द्र जी मालवीय
16. श्री सुबोध आर्य
17. श्री आचार्य लक्ष्मीदत्त जी दीक्षित
18. श्री राजकुमार जी शास्त्री
19. श्री ब्रह्मशंकर जी शास्त्री
20. श्री मेधावी शास्त्री
21. श्री देवराज जी शास्त्री
22. श्री गोपाल शरण जी विद्यार्थी
23. श्री किशन चन्द जी
24. श्री बलराम जी आर्य
25. श्री सत्य भूषण जी वेदालंकार
26. श्री मेघश्याम जी वेदालंकार

सभा के वैतनिक प्रचारक महानुभावों का प्रचार कार्य

आर्य प्रादेशिक सभा की केन्द्र तथा उप-सभा के अन्तर्गत निम्न उपदेशक तथा भजनोपदेशक बड़ी योग्यता तथा कर्त्तव्यमयता के साथ वेदों के संदेश को तथा महर्षि के मिशन को प्रचारित तथा प्रसारित करने में संलग्न हैं :—

1. आचार्य पुरुषोत्तम जी एम० ए०	वेद प्रचार अधिष्ठाता
2. पं० सत्य प्रकाश जी शास्त्री	महोपदेशक
3. श्री हरिदत्त जी	संगीताचार्य
4. श्री वेद व्यास जी आर्य	संगीताचार्य
5. श्री मनोहर लाल जी ऋषि	संगीताचार्य

इनके अतिरिक्त दिल्ली तथादिल्ली से बाहर प्रचार कार्य में प्रि० कृष्णचन्द्र जी शास्त्री (जिनका विगत वर्ष देहावसान हो गया) तथा ठाकुर विक्रम सिंह जी शास्त्री एम० ए० का सभा को पर्याप्त सहयोग प्राप्त हुआ।

आचार्य पुरुषोत्तम जी वेद प्रचार अधिष्ठाता की उनके तर्क संगत व्याख्यानों और अपनी विशेष शैली के कारण बहुत अधिक मांग रहती है जिसकी पूर्ति कभी-कभी असंभव हो जाती है। इस वर्ष आचार्य जी ने निम्नलिखित आर्य समाजों के उत्सवों पर वेद कथा एवं प्रचार कार्य सम्पन्न किया : —

आर्य समाज, अनारकली दिल्ली	आर्य समाज ईस्ट आफ कैलाश दिल्ली
आर्य समाज, ग्रेटर कैलाश दिल्ली	आर्य समाज, दरियागंज दिल्ली
आर्य समाज, अर्जुन नगर, गुड़गाँव	आर्य समाज, माडल टाउन, गुड़गांव
आर्य समाज, कालकाजी दिल्ली	आर्य समाज, मालवीय नगर दिल्ली

आर्य समाज, डिफेंस कालोनी दिल्ली
आर्य समाज, राजेन्द्र नगर दिल्ली
आर्य समाज, टैगोर गार्डन दिल्ली
आर्य समाज, राजौरी गार्डन दिल्ली
आर्य समाज, साउथ एक्सटेंशन दिल्ली
आर्य समाज, वेस्ट पटेल नगर दिल्ली
आर्य समाज, अशोक विहार दिल्ली
आर्या समाज, नया बांस दिल्ली
वैदिक सत्संग—वोट क्लब दिल्ली
आर्य समाज, रामकृष्णपुरम दिल्ली
आर्य समाज, गांधी नगर दिल्ली
आर्य समाज, महावीर नगर दिल्ली
आर्य समाज, कीर्ति नगर दिल्ली
अशोक होटल, लायन्स क्लब दिल्ली
आर्य समाज, बाजार सीताराम दिल्ली
आर्या समाज, ग्रीन पार्क दिल्ली
आर्या युवक सभा, चण्डीगढ़

पं० सत प्रकाश जी शास्त्री की नियुक्ति गतवर्ष 1978 में हुई। पंडित जी ने वेद के संदेश को निम्न स्थानों पर सुनाकर जन-जन को आर्य समाज की ओर आकर्षित करने में सफलता प्राप्त की :—

आर्य समाज, चीड़ी
आर्य समाज, दयालपुरा, करनाल
आर्य समाज, अशोक विहार, दिल्ली
आर्य समाज, पुलवंगश, दिल्ली
आर्य समाज, बस्ती हरफूल सिंह, दिल्ली
आर्य समाज, रामकृष्णपुरम, दिल्ली
आर्य समाज, कुंजपुरा, करनाल
आर्य समाज, पावर हाऊस, पंजाबी बाग, दिल्ली
आर्य समाज, निजामुद्दीन, दिल्ली
मुल्तान डी० ए० वी० हाई स्कूल नई दिल्ली

इसके अतिरिक्त पं० सत्यप्रकाश जी शास्त्री ने अनेक संस्कार भी सम्पन्न कराये।

श्री हरिदत्त जी, संगीताचार्य ने निम्नलिखित आर्या समाजों में पहुंच कर अपने सुमधुर भजनों द्वारा आर्या जनता को गद्गद किया :—

गुरुकुल गदपुरी, दिल्ली
फरूखाबाद (शुद्धि के लिए)
आर्या समाज, धनबाद (बिहार)
आर्या समाज, रोहतास नगर
आर्या समाज, दरियागंज, दिल्ली
आर्या समाज, एटा
गुरुकुल, सिकन्दराबाद
आर्या समाज, चीड़ी
आर्या समाज, राजगढ़ (बिहार)
आर्या समाज, अनारकली
सन्यास आश्रम, गाजियाबाद
आर्या समाज, पटेल नगर, दिल्ली

आर्य समाज, राजौरी गार्डन, दिल्ली
आर्य समाज, मालवीय नगर, दिल्ली
आर्य समाज, गाजियाबाद (उ. प्र.)
आर्य समाज, यमुना नगर
आर्य समाज, इन्द्री
आर्य समाज, अर्बन इस्टेट, गुड़गाँव
आर्य समाज; अर्जुन नगर (गुड़गांव)
आर्य समाज, भीम नगर, गुड़गांव
वैदिक सत्संग-बोट क्लब, दिल्ली
आर्य समाज, बिरला लाइन्स, दिल्ली

श्री मनोहर लाल जी ने अपने भजन संगीत से वेद के संदेश को निम्न स्थानों में जनता तक बड़ी योग्यता से पहुंचाया :—

आर्य समाज, रामाकृष्णपुरम
आर्य समाज, अर्जुन नगर (गुड़गांव)
आर्य समाज, सीमण
आर्य समाज, विक्रमपुरा, जालन्धर
आर्य समाज, टैगोर गार्डन
आर्य समाज, डिफेंस कालोनी
वैदिक सत्संग, अशोक विहार
डी. ए. वी. हा. से. स्कूल, दरियागंज,
आर्य समाज, मदनगीर
आर्य समाज, अनारकली
फरीदाबाद (पारिवारिक सत्संग)
आर्य समाज, सीमण (करनाल)
आर्य समाज, साऊथ एक्सटेंशन
वैदिक सत्संग बोट क्लब

श्री वेद व्यासजी संगीताचार्य ने निम्न आर्य समाजों में अपने सुमधुर संगीत द्वारा आर्य जनता को आनन्दित किया :—

आर्य समाज, रामाकृष्णपुरम
आर्य समाज, भीम नगर (गुड़गांव)
आर्य समाज, शकूर बस्ती
आर्य समाज, अनारकली
आर्य समाज, ईस्ट आफ कैलाश
आर्य समाज, राजेन्द्र नगर
आर्य समाज, शान्ति नगर (सोनीपत)
आर्य समाज, चण्डीगढ़, सेक्टर 16
आर्य समाज, चण्ड़ीगढ़, सेक्टर-7
आर्य समाज, इलाहाबाद
आर्य समाज, दरियागंज
आर्य समाज, बाजार, सीताराम
आर्य समाज, भिवानी
आर्य समाज, भोपाल
आर्य समाज, टैगोर गार्डन
वैदिक सत्संग, बोट क्लब

(ख) महात्मा हंसराज साहित्य विभाग द्वारा प्रचार

साहित्य विभाग ने इस वर्ष 45957.00 रुपये का साहित्य विक्रय किया जिसमें 35037.00 धन प्राप्त हो चुका है और 10920.00 प्राप्त होना शेष है। यह प्राप्तव्य धन प्रायः डी० ए० वी० संस्थाओं से आना शेष है जिनके साथ हमारा हिसाब-किताब चलता रहता है और इसमें कोई संदेहयुक्त राशि नहीं। इस समय सभा में 79950.00 रुपये का स्टाक विक्रयार्थ शेष है।

सभा ने इस वर्ष हरिद्वार में मोहन आश्रम, गुरुकुल काँगड़ी वानप्रस्थ आश्रम, तथा व्यास आश्रम आदि उत्सवों पर प्रबन्ध करके साहित्य बेचने का यत्न किया।

साहित्य विभाग अपने प्रकाशन के अतिरिक्त कुछ अन्य आर्य ग्रन्थों की बिक्री भी करता है जिनका विज्ञापन समय-समय पर आर्य जगत् साप्ताहिक में किया जाता है। इस वर्ष इस साहित्य की बिक्री से महात्मा हंसराज साहित्य विभाग को 45957 रुपये की आय हुई।

हम उन सब ग्राहकों और विशेष कर डी० ए० वी० संस्थाओं के आभारी हैं जो इस कार्य में हमारी सहायता करते हैं।

निम्नलिखित नया साहित्य इस वर्ष प्रकाशित हुआ :—

(1) महर्षि दर्शन प्रि० दीवान चन्द--मूल्य 4/-

(2) वैदिक सत्संग—सभा द्वारा—मूल्य 1/75

हमारे लिए यह बड़े उत्साह की बात है कि कु० विद्यावती जी आनन्द हंसराज महिला महाविद्यालय, जालन्धर के प्रधानाचार्या पद से सेवामुक्त होने के पश्चात् इस विभाग की अवैतनिक रूप से देखभाल करती हैं तथा मार्ग दर्शन करती हैं। यह भी हर्ष का विषय है कि इस वर्ष साहित्य की बिक्री 45957.00 तक पहुंची है जो कि पिछले वर्ष से अधिक है।

श्री साधू राम जी साहित्य विभाग का लिपिक कार्य भली भांति कर रहे हैं।

(ग) विचार गोष्ठियों द्वारा वेद प्रचार

वेद प्रचार के कार्य का मूल्यांकन करने एवं सुधार लाने के लिए सभा द्वारा समय-समय पर विचारगोष्ठियों का आयोजन किया जाता है जिसमें सभा के अधिकारी, उपदेशक, अवैतनिक उपदेशक, वैदिक विद्वान तथा विभिन्न आर्य समाजों के पुरोहित एवं सदस्य भाग लेते हैं। इनमें उनके विचार विमर्श पश्चात् वेद प्रचार के विषय में निर्णय लिए जाते हैं। इस वर्ष ऐसी एक गोष्ठी 23-7-78 को आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग नई दिल्ली में बुलाई गई जिसकी अध्यक्षता सभा प्रधान लाला सूरजभान जी ने की। इसमें लगभग 50 महानुभावों ने भाग लिया तथा 50 विद्वानों ने वेद प्रचार के सम्बन्ध में अपने मूल्यवान सुझाव प्रस्तुत किए। गोष्ठी के पश्चात् सभा की ओर से सत्कार किया गया। मुख्य विचार यह थे :—

(घ) आर्य जगत् (साप्ताहिक)

वेद प्रचार और प्रकाशन का हमारा एक मुख्य अंग सभा का साप्ताहिक पत्र 'आर्य जगत्' है जो कि इस वर्ष भी यथा पूर्व निरन्तर रूप से प्रकाशित होता रहा और अब अपने प्रकाशन के 81 वें वर्ष में प्रवेश कर चुका है। इस पत्र में सभा का कार्य एवं डी० ए० वी० कालेजों तथा विद्यालयों की गतिविधियाँ शारीरिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक लेख प्रकाशित किए जाते हैं। इस वर्ष भी वेद सुधा शीर्षक से सामवेद के मंत्रों की व्याख्या हिन्दी एवं अंग्रेजी में चलती रही। महात्मा अमर स्वामी जी के सम्पादकीय लेख विशेष आकर्षक रहे। समय-समय पर वेद मंत्रों, उपनिषदों एवं अन्य सामाजिक कविताएं भी प्रकाशित हुई। हम उन सब लेखकों के जो इस पत्र को सुन्दर बनाने में सहयोग देते रहे, आभारी हैं।

इस वर्ष 'आर्य जगत्' के कुल ४२ अंक प्रकाशित किए गए जिनमें निम्नलिखित विशेषाँक थे :—

1, नैरोबी विशेषाँक	24-9-78	मूल्य 4 रुपये
2. महात्मा हंसराज विशेषाँक	15-10-78	मूल्य 2 रुपये
3. महात्मा आनन्द स्वामी विशेषाँक	26-11-78	मूल्य 2 रुपये
4. ऋषिबोधोत्सव	18-2-78	मूल्य 2 रुपये

यह संतोष का विषय है कि इस वर्ष प्रयत्न करने पर 6121 रुपये वार्षिक शुल्क प्राप्त हुआ। हम ग्राहकों का धन्यवाद करते हैं और आशा करते हैं कि ग्राहक महोदय भविष्य में इसी प्रकार हमें योगदान देते रहेंगे। इसके अतिरिक्त इस वर्ष लगभग 10,000 रुपये विज्ञापन शुल्क के रूप में प्राप्त हो चुका है और शेष धनराशि प्राप्त होने पर आय 15,000 रुपये हो जायेगी। हम इस सम्बन्ध में सब विज्ञापन-दाताओं के और विशेष कर श्री ओम्प्रकाश जी गोयल, साउथ ईस्टर्न रोडवेज वालों के आभारी हैं जो इस सम्बन्ध में हमें विशेष योगदान देते हैं।

आर्य जगत् पत्र के अवैतनिक सम्पादक श्री अमर स्वामी महाराज हैं। पर्याप्त समय तक प्रि० कृष्ण चन्द्र जी सह सम्पादक रहे जिनके 8-11-78 के निधन से बड़ी क्षति हुई। श्री कृष्ण चन्द्र जी एक अच्छे इतिहास वेत्ता और लेखनी के धनी थे। श्री गिरीशचन्द जी खोसला तथा आचार्य भगवानदेव जी इस समय सम्पादन कार्य सहायता दे रहे हैं।

(ङ) वेद प्रचार के लिए डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्तृ सभा द्वारा योगदान

जैसा कि प्राक्कथन में कहा गया है दयानन्द ऐंग्लो वैदिक कालेज प्रबन्धकर्तृ सभा और आर्य प्रादेशिक सभा का प्रारम्भ से ही घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। वास्तव में प्रादेशिक सभा तथा डी. ए. वी. कालेज कमेटी, एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा से सम्बन्धित आर्य समाजों के प्रतिनिधियों द्वारा उनमें से ही डी. ए. वी. कालेज प्रबन्धक सोसायटी के सदस्य निर्वाचित किए जाते हैं। सत्य तो यह है कि डी. ए. वी. कालेज सोसायटी ही, प्रादेशिक सभा की जन्मदात्री है। 1886 में डी. ए. वी. प्रबन्धकृर्तृ सभा बनी। 1894 में आर्य प्रादेशिक सभा का गठन हुआ। 1894 से 1922 तक कालेज कमेटी ही सभा कार्यालय के कर्मचारियों तथा उपदेशकों का वेतन देती रही। इस प्रकार डी. ए. वी. कालेजकमेटी ने सभा की सहायता की और अब भी करती रहती है। कालेज कमेटी के कालेजों और स्कूलों में बहुत सा वैदिक साहित्य प्रति वर्ष क्रय किया जाता है। सेवा तथा सहायता के कार्यों में भी डी. ए. वी कालेज प्रबन्धकर्तृ सभा की संस्थाओं का योगदान प्राप्त होता रहता है। कालेज कमेटी स्कूलों तथा कालेजों के संचालन के अतिरिक्त वेद प्रचार में

भाग लेती है और कुछ ऐसी संस्थाओं को चला रही है जिसका उद्देश्य पूर्णतया वेद प्रचार है। कालेज कमेटी अपना पूरा विवरण और बजट जो गत वर्ष चार करोड़ रुपयों का था पृथक प्रकाशित करती है। अतः इस विवरण में उन सभी संस्थाओं और कार्यों का उल्लेख नहीं किया गया, केवल कुछ प्रमुख संस्थाएं तथा आयोजन अधोलिखित हैं :—

1, दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय, हिसार :—यह संस्था उपदेशकों एवं पुरोहितों को प्रशिक्षण देता है।
2. विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान, होशियारपुर—वेदों पर शोध कार्य एवं प्रकाशन करता है।
3. दयानन्द फाउन्डेशन—उत्तर पूर्वी भारत में वेद प्रचार, शिक्षा प्रसार तथा सेवा कार्य करता है।
4. आर्य विद्या सभा-विद्यालयों में शारीरिक, आध्यात्मिक और सामाजिक उत्थान कार्य करती है।

सेवा तथा सहायता कार्य

महात्मा हंसराज जी का सभा स्थापना के प्रारम्भ से ही आर्य ससाज के प्रसार और सभा कार्यक्षेत्र के विस्तार के लिए सेवा एवं सहायता की ओर रहा है। सन् 1895 से 1897 तक बीकानेर और मध्य भारत दुर्भिक्ष, 1899 में राजपूताना, काठियावाड़ और बम्बई के कुछ भागों में दुर्भिक्ष पीड़ित क्षेत्रों में महात्मा जी ने आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की ओर से तन-मन-धन से सेवा की। इसी प्रकार 1907-8 में काँगड़ा भूकम्प, 1908 में मुलतान में प्लेग की महामारी, 1920 में मोपला विद्रोह में माला-बार तट की और इस बीच अवध, गढ़वाल, उड़ीसा, छत्तीसगढ़, काश्मीर तथा हिमाचल प्रदेश के दुर्भिक्ष में सभा की ओर से सहायता की गई। विहार तथा कोटा भूकम्प एवं मुलतान और कोहाट के दंगों से पीड़ितों की सहायता भी की गई। देश विभाजन के पश्चात् चाहे दिल्ली में अथवा आन्ध्र या तामिलनाडु में तूफान आए, सभा इस कार्य में अग्रसर रही। इस वर्ष भी दिल्ली में पुनः बाढ़ का भय होने पर सभा प्रधान जी ने 5-9-78 को अपील द्वारा 10 सहायता केन्द्र समाजों में स्थापित किए और मुख्य केन्द्र प्रादेशिक सभा कार्यालय, न्यू जहाँगीरपुरी आर्य समाज और गुजराँ-वाला टाउन में स्थापित किए गए। इसके अतिरिक्त उड़ीसा के तूफान-पीड़ितों के लिए निम्नलिखित केन्द्रों पर सहायता कार्य सम्पन्न हुआ :—

1. डी. ए. वी. कालेज फारवुमैन, राउरकेला
2. डी.ए. वी. कालेज, टीटलागढ़
3. डी, ए. वी. माड्ल स्कूल, भुवनेश्वर

प्रधान जी, उप प्रधानजी एवं अन्य पदाधिकारी दिल्ली के केन्द्रों पर जाते रहे और सेवा कार्यों का संचालन करते रहे।

हमारा अपनी सम्बन्धित आर्य समाजों से आग्रह है कि वह इस प्रकार की विपत्तियों के समय सार्वजनिक सेवा का अवश्य ध्यान रखें और सभा को ऐसे कार्यों से अवगत करायें। सभा इन कार्यों में पूर्ण रूप से सहयोग प्रदान करेगी क्योंकि जन सेवा कार्य ही प्रचार का सबसे बड़ा साधन होता है। महात्मा हंसराज जी ने अपने जीवन काल में कोई भी ऐसा अवसर सेवा के बिना नहीं छोड़ा।

विशेष आयोजन

सभा समय पर विशेष उत्सव और आयोजन भी करती है जिनमें कुछ निम्नलिखित हैं :

महात्मा हंसराज दिवस :—यह दिवस इस वर्ष 17-10-78 को डी० ए० वी० हायर सेकेण्डरी स्कूल, चित्रगुप्ता रोड, नई दिल्ली के प्राँगण में केन्द्रीय परिवहन तथा जहाजरानी मंत्री, चौ० चान्द राम जी की अध्यक्षता में मनाया गया। आर्य समाज, बस्ती हरफूल सिंह की ओर से यज्ञ का आयोजन किया गया तथा यज्ञ शेष का वितरण किया गया। इस अवसर पर लाला सूरजभान जी तथा डा० जी० एल० दत्ता जी एवं अन्य महानुभावों ने महात्मा हंसराज जी को अपनी-अपनी श्रद्धाँजलियाँ अर्पित की। इस उत्सव में दक्षिण दिल्ली की अनेक समाजें तथा दिल्ली के स्कूल अपनी-अपनी बसें लेकर पधारे। समारोह के पश्चात् समस्त आगन्तुकों को प्रीति भोज कराया गया। इस अवसर पर दिए गए सहभोज से नैरोबी आर्य महासम्मेलन के सुप्रबन्ध की याद आती थी।

(2) **नैरोबी यात्रियों का स्वागत** :—8-10-78 को सभा एवं मन्दिर मार्ग आर्य समाज की ओर से नैरोबी से लौट कर आने वाले महानुभावों का स्वागत किया गया। इस कार्यक्रम में लगभग 200 आर्य बन्धुओं ने भाग लिगा। डा० गोवर्धनलाल जी दत्त स्वागताध्यक्ष थे। श्री मोहनलाल जी प्रधान-आर्य समाज(अनारकली)ने स्वागत भाषण दिया। सभा के सहमंत्री श्री खेमचन्द जी महताने स्वागत रूप में वेद मंत्रों का पाठ किया। लाला सूरजभान, श्री दरबारी लाल, श्री ओमप्रकाश गोयल, श्री नवनीत लाल, एडवोकेट, श्री रामलाल मलिक तथा श्री मामचन्द जी ने अपने-अपने अनुभव बतलाए। समारोह के पश्चात् जलपान का भी आयोजन किया गया।

(३) **महात्मा अमर स्वामी अभिनन्दन समारोह में सहयोग** :—यह समारोह 17-12-78 को आर्य समाज, ग्रेटर कैलाश में उनके वार्षिकोत्सव पर किया गया। इस समारोह में अमर स्वामी जी को वेद प्रचार, सेवा कार्य, लेखन तथा शास्त्रार्थ

महारथी होने के सम्बन्ध में आभार प्रकट किया गया। सभा की अध्यक्षता स्वामी सत्य प्रकाशानन्द जी ने की। इस अवसर पर स्वामी ओमानन्द जी ने स्वामी जी का अभिनन्दन किया तथा ठा० विक्रमसिंह जी द्वारा लिखित अमर स्वामी अभिनन्दन ग्रन्थ का विमोचन किया। श्री अमर स्वामी जी महाराज को इस अवसर पर विभिन्न आर्य समाजों तथा अन्य आर्य बन्धुओं की ओर से 10,000 रुपये की थैली भेंट की गई। आर्य प्रादेशिक सभा की ओर से भी इस अवसर पर 500 रुपये का योगदान दिया गया। तथा 100 पुस्तकें सभा के लिये दी गई।

सभा अधीनस्थ कुछ योजनाएं

महात्मा आनन्द स्वामी स्मारक निधि : इस निधि की स्थापना, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की साधारण बैठक दिनाँक 7-5-78 के प्रस्तावानुसार, महात्मा आनन्द स्वामी जी स्मृति को स्थायी बनाने के लिए की गई थी। इसके अनुसार प्रधान जी ने 18-6-78 को गणमान्य महानुभावों की एक सभा बुलाई जिममें श्री जगन्नाथ कपूर (अम्बाला), राय बहादुर चौधरी प्रतापसिंह जी (करनाल) के सुझावों पर इस निधि की राशि 5 लाख निश्चित की गई परन्तु तत्पश्चात् श्री रणवीर जी 'दैनिक मिलाप' के बल देने पर यह राशि 10 लाख निश्चित की गई।

इसमें श्री रणवीर सिंह जी ने एक लाख रुपये अपने कुटुम्ब की ओर से देने का वचन दिया।

इस निधि के निम्नलिखित उद्देश्य निश्चित किए गए :—

(1) वृद्ध, असहाय, विद्वान तथा आर्य समाज के संन्यासियों की सहायता करना एवं उनके लिए आश्रम आदि खोलना।

(2) महात्मा आनन्द स्वामी कृत पुस्तकों को विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित करना।

(3) आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षा एवं सेवा कार्य करना।

(4) योग अनुसंधान एवं प्रशिक्षण को प्रोत्साहन देना तथा चरित्र निर्माण एवं आध्यात्मिक वातावरण उत्पन्न करना।

(5) शिक्षाप्रद वृत चित्रों का निर्माण करना।

(6) शिक्षण संस्थाओं में धार्मिक वातावरण उत्पन्न करना।

(7) वेद मंत्रों तथा अच्छे गीतों के रिकार्ड तैयार कराना।

(8) विदेशों में वैदिक धर्म का प्रचार करना।

इस कार्य के लिए धन एकत्रित करने हेतु 1, 5, 10 तथा 100 रुपये के नोट छपवाए गए हैं।

प्रधान जी ने उपरोक्त समिति के निम्नलिखित सदस्य मनोनीत किए हैं :—

1. लाला सूरजभान
2. डा० धर्मवीर
3. डा० गोवर्धनलाल जी दत्त
4. श्री रणवीर जी
5. राय बहादुर चौ० प्रतापसिंह जी करनाल
6. श्री ओमप्रकाश त्यागी
7. श्रीमती तारकेश्वरी सिन्हा
8. श्री रामलाल मलिक
9. श्री दरबारी लाल जी
10. श्री सी० एल० अरोड़ा (जालन्धर)
11. श्री आर० एन० महता अमृतसर
12. श्री रमेशचन्द्र जीवन (काँगड़ा)
13. श्री यश जी (जालन्धर)
14. श्री मती शान्ति देवी
15. श्री ओमप्रकाश जी सूरी (नई दिल्ली)
16. श्री सीताराम युद्धवीर (हैदराबाद)
17. श्री अमृत लाल हाँडा (नई दिल्ली)
18. श्री राम कृष्ण गम्भीर (नई दिल्ली)
19. श्री खेमचन्द महता (नई दिल्ली)
20. श्री जसराज भाई पटेल (बम्बई)
21. श्री रामनाथ सहगल (नई दिल्ली)
22. आचार्य भगवानदेव (नई दिल्ली)

श्री राम शरण दास वेद प्रचार निधि

यह निधि 2 लाख 76 हजार रुपये की राशि से जो कि हांसी के श्री पारस नाथ जी द्वारा सभा की हांसी स्थित भूमि के विक्रय से प्राप्त हुई है अथवा प्राप्त की जानी है, बनाई गई है। इस निधि के व्याज से जिला हिसार और विशेषतया हांसी में वेद प्रचार पर व्यय की जावेगी। इस निधि का कार्यालय, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली में होगा। इस कार्य के संचालन के लिए निम्नलिखित सदस्यों की एक स्थाई उप समिति बनाई गई है :—

1. प्रधान, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली (पदेन)
2. उप प्रधान, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, ,, ,, ,,
3. मंत्री, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, ,, ,, ,,
4. प्रधान, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उप सभा, हरियाणा ,,
5. मंत्री, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,,
6. प्रधान, आर्य समाज, हांसी ,,
7. श्री पारसनाथ जी, हाँसी
8. श्री पी० सी० अग्रवाल सुपुत्र श्री पारसनाथ जी
9. श्री ओ० पी० गोयल, नई दिल्ली
10. लाला लाजपत राय, हांसी
11. श्री हरिशचन्द्र जी अग्रवाल, एडवोकेट, नई दिल्ली
12. श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, दिल्ली

सभा द्वारा विशेष प्रोत्साहित संस्थाएं तथा आयोजन

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा कुछ एक वैदिक संस्थाओं अथवा कार्यक्रमों को सीधा अपने हाथ में रखने के स्थान पर उन कार्यकर्ताओं अथवा संस्थाओं की जिसे अन्य सामाजिक ट्रस्ट या व्यक्ति चलाते हैं उनकी भरसक सहायता तथा मार्गदर्शन करती है। इस क्रम में अन्यों के अतिरिक्त वैदिक मोहन आश्रम, हरिद्वार और बोट क्लब प्रचार मण्डल, नई दिल्ली विशेषतया आते हैं।

वैदिक मोहन आश्रम, हरिद्वार

यह आश्रम एक ट्रस्ट के अधीन हरिद्वार में 1908 से उस स्थान पर चल रहा है जहां 1867 में स्वामी दयानन्द जी ने पाखंड खंडनी पताका गाड़ी थी। इस ट्रस्ट का उद्देश्य हरिद्वार में पधारने वाले संन्यासियों एवं ग्रहस्थियों को आवास सुविधाएं देना एवं वेद प्रचार करना है। इस ट्रस्ट के अधिकतर ट्रस्टी, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के सदस्य ही हैं। सभा इस ट्रस्ट को प्रारम्भ से ही पूरा योगदान देती

आई है। 1908 में देहरादून के तत्कालीन रईस भक्तराज बलदेव सिंह जी के 55 बीघा भूमि दान से इस आश्रम की नींव पड़ी। हरद्वार के तत्कालीन आर्य संन्यासी स्वामीं प्रकाशानन्द जी सरस्वती तथा आर्य प्रादेशिक सभा प्रधान महात्मा हंसराज जी ने इस कार्य में सहयोग प्रदान किया। महात्मा हंसराज जी प्रारम्भ से ही इस ट्रस्ट के मंत्री रहे और प्रायः प्रतिवर्ष पर्याप्त समय इस आश्रम में निवास करते थे तथा इस आश्रम को सुदृढ़ बनाने का प्रयत्न करते रहते थे। तब से प्रत्येक कुम्भ मेला पर वेद प्रचारार्थ सभा के उपदेशकों और भजनीकों का पूरा दल वहां जाता रहा। भक्तराज बलदेव सिंह और उनके उत्तराधिकारी भी इसी प्रकार सभा कार्यों में सहयोग देते रहे और लाहौर में वार्षिक उत्सवों पर पधारते रहे।

आर्य महासम्मेलन नैरोबी

14 सितम्बर से 24 दिसम्बर 1978 तक पूर्वी अफ्रीका के नैरोबी में आर्य महासम्मेलन का अभूतपूर्व आयोजन किया गया। संसार भर के आर्य भाई इस आर्य महासम्मेलन में भाग लेने के लिए पधारे। नैरोबी का वातावरण यज्ञ की सुगन्धी से सुगन्धित हो उठा तथा वेद मंत्रों से गुंजायमान हो गया। एक बार नैरोबी का यह आर्य महासम्मेलन संसार के आकर्षण का केन्द्र बन गया था।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूरजभान जी को इस आर्य महासम्मेलन में सम्मिलित होने के लिए सम्मेलन के अधिकारियों द्वारा विशेष निमंत्रण आया। सभा प्रधान श्री सूरजभान जी, आर्य प्रादेशिक सभा के उप प्रधान श्री दरबारीलाल जी, श्री ओमप्रकाश जी गोयल, सभा मंत्री श्री रामनाथ जी सहगल तथा महात्मा आनन्द स्वामी स्मारक निधि के संयोजक आचार्य भगवानदेव जी भी आर्य सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिए उनके साथ गए। इसके अतिरिक्त सभा से सम्बन्धित आर्य समाजों के कतिपय पदाधिकारी, आर्य समाज बाजार सीताराम दिल्ली के मंत्री श्री मामचन्द जी रिवारिया, निजामुद्दीन आर्य समाज के मंत्री श्री कृष्णलाल जी, ग्रेटर कैलाश आर्य समाज के प्रधान श्री शान्ति प्रकाश जी बहल तथा अन्य गण्यमान्य व्यक्ति भी वहां पहुंचे।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूरजभान जी की उपस्थिति आर्य महासम्मेलन के लिए गौरव का विषय था। संसार भर से सम्मिलित आर्य भाई सभा प्रधान श्री सूरजभान जी के विद्वतापूर्ण विचारों को सुनने के लिए उत्कंठा से आतुर रहती थी। सम्मेलन की विषय समिति में श्री सूरजभान जी को अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान प्रदान किया गया था। इसके साथ ही नैरोबी के प्रसिद्ध केन्याटा हाल में श्री सूरजभान जी के अंग्रेजी भाषण की रम्य एवं प्रभावशाली शैली तथा शब्दों के सुन्दर चयन एवं समन्वयन के कारण जो जन-जन पर प्रभाव पड़ा वह अभूत-

पूर्व था। श्री सूरजभान जी से शिक्षित शिष्य जिन्होंने नैरोवी में अद्भुत सफलता प्राप्त की थी, जब उनके चरणों में श्रद्धाभाव निवेदित करते थे तो वह दृश्य देखने लायक ही होता था। इससे पहले सभा की ओर से श्री बुद्धदेव जी मीरपुरी महोपदेशक नैरोवी गये थे। सभा की वहां अपनी सम्पत्ति भी है। यह हर्ष का विषय है कि नैरोवी में भी सभा की अपनी आर्य समाज (कालेज विभाग) है। सभा प्रधान श्री सरजभान जी उस आर्य समाज को देखने गये और आर्य समाज के अधिकारियों से मिले। 192` से यह आर्य समाज चल रही है। श्री सूरजभान जी तथा सभा के अन्य अधिकारी नैरीबी आर्य महासम्मेलन में अपनी विजय पताका फहराकर, भारत के पुरातन एवं सनातन संदेश को दिग्दिगन्त में प्रसारित कर वापिस लौट गए।

बोट क्लब सत्संग

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल ने वेद प्रचार का एक सराहनीय कार्य किया। केन्द्रीय सचिवालय के कर्मचारी अपने भोजन के समय में बोट क्लब के पास एकत्रित होते हैं और उनका वह समय प्रायः ताश, व्यर्थ के खेल-तमाशों, गप-शप एवं पौराणिक वार्तालाप में व्यतीत होता है। क्योंकि वहां अनेक पाखण्डी भी एकत्रित होकर अपनी चाटुकारिता से उन्हें ठगते थे तथा सत्य धर्म के मार्ग से बहकाते थे। मण्डल के मंत्री श्री रामशरण दास आर्य ने वहां एक खुला (ओपन एयर) आर्य समाज केन्द्र स्थापित कर दिया। इस स्थान पर वृक्षों की सघन छाया में प्रतिदिन सत्संग एवं विशेष समारोहों का आयोजन किया जाता है। वहां पर प्रतिदिन सभा की ओर से उपदेशक तथा भजनीक जाते हैं तथा वहां पर वेद प्रचार का कार्य करते हैं। सभा इस कार्य में कई प्रकार का सहयोग प्रदान करती है। समय-समय पर विशेष अवसरों पर प्रधान जी, उप प्रधान जी, मंत्री जी तथा सहमंत्री जी एवं वेद प्रचार अधिष्ठाता जी वहां जाते रहते हैं। बोट क्लब पर महात्मा हंसराज दिवस, स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस, ऋषिबोधोत्सव तथा निर्वाण दिवसों का इस वर्ष आयोजन किया गया। कई समारोहों की अध्यक्षता सभा प्रधान लाला सूरजभान जी ने ही की। श्री रामशरण दास जी का यह कार्य सराहनीय है। लाला विशनदास दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के प्रधान हैं। इस कार्य पर सभा का वार्षिक व्यय लगभग 8000/- रुपये आ जाता है। पं० सत्यप्रकाश जी, श्री विक्रम सिंह जी, आचार्य पुरुषोत्तम जी, श्री हरिदत्त जी तथा श्री वेदव्यास जी उपदेशक वहां जा कर बारी-बारी प्रचार करते हैं।

सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी में योगदान

इस वर्ष मार्च में आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह में भी सभा ने सहयोग प्रदान किया। सभा

के मुख पत्र 'आर्य जगत' साप्ताहिक में शताब्दी समारोह सम्बन्धी सूचनाएं, कार्यक्रम, लेख तथा शताब्दी समारोह में सहायतार्थ अपील समय-समय पर प्रकाशित किए गए। सभा एवं इससे सम्बन्धित आर्य समाजें डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्तृ सभा से सम्बन्धित स्कूलों तथा कालेजों ने शोभा यात्रा तथा आर्य वीर दल के कार्यों में भाग लिया। सभा प्रधान लाला सूरजभान जी का उद्घाटन भाषण हुआ। समारोह में प्रभावशाली प्रवचन हुए एवं सभा के आदेश पर सभा से सम्बन्धित आर्य समाजों तथा सदस्यों ने दान दिया और सेवा कार्य किए। सभा ने इस अवसर पर सुन्दर सत्यार्थ प्रकाश विशेषांक निकाला। इस उपलक्ष्य में सभा प्रधान लाला सूरजभान जी ने निम्नलिखित विज्ञप्ति सब आर्य समाजों को भेजी।

'युग पुरुष महर्षि दयानन्द के अमर ग्रन्थ, सत्यार्थ प्रकाश की रचना को सौ वर्ष पूरे हो चुके हैं। इस ग्रंथ की रचना महर्षि दयानन्द ने उदयपुर में की थी। वर्तमान शताब्दी में 'सत्यार्थ प्रकाश' ने जो विश्व में मानव जाति के उद्धार का कार्य किया है, संसार के अन्य किसी ग्रन्थ ने नहीं किया।

मेरी विश्व भर के आर्यों से अपील है कि 29 मार्च, आर्य समाज स्थापना दिवस के रूप में मनाएं। यह कार्यक्रम साल भर तक चलाएं जिनमें निम्न कार्य अवश्य ही करने का प्रयास करें :—

1. 29 मार्च को प्रातः प्रभात फेरी निकालें।
2. उसी दिन से नित्य अथवा साप्ताहिक सत्यार्थ प्रकाश की कथा किसी विद्वान् से शुरू करायें। वर्ष भर चलावें।
3. प्रत्येक आर्य समाज कम से कम वर्ष भर में स्थानीय विद्वान, नेता, अध्यापक, विचारक, विद्यार्थी, कर्मठ मजदूर तथा अन्य सम्प्रदाय के लोगों में सौ सत्यार्थ प्रकाश भेंट स्वरूप देवे।
4. प्रत्येक आर्य वर्ष भर प्रति मास सत्यार्थ प्रकाश किसी बुद्धिजीवी विचारक को भेंट दे।
5. विद्यालय, महाविद्यालयों में सत्यार्थ प्रकाश पर छात्र-छात्राओं से परीक्षाएं ले तथा वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन करके पारितोषिक दें।
6. सत्यार्थ प्रकाश पर विद्वानों की गोष्ठियों का आयोजन करें।
7. सत्यार्थ प्रकाश के जिन विषयों पर अन्य व्यक्ति आक्षेप करते रहते हैं उन पर सप्रमाण उत्तर तैयार करवा कर प्रकाशित कराए जायें।
8. आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा इस सम्बन्ध में 'आर्य जगत' का सुन्दर संग्रहणीय विशेषांक तैयार करवा रही है जिसकी अधिक से अधिक प्रतियां मंगवा कर सर्व साधारण तक पहुंचाने की कोशिश करें। अपना आदेश सभा कार्यालय को भेज दें। विद्वान अपने लेख भेजें।

आर्य अनाथालय फिरोजपुर छावनी

आर्य अनाथालय फिरोजपुर छावनी जिसकी स्थापना महर्षि दयानन्द सरस्वती ने, आज से लगभग 102 वर्ष पूर्व 26 अक्तूबर, 1877 को की थी, जबकि वह प्रथम बार पंजाब में आर्य समाजों के स्थापना हेतु पधारे थे। आज एक छोटे से पौधे से उन्नति करता हुआ विशाल वट वृक्ष बन गया है। इसकी छत्रछाया में हजारों मासूम अनाथ बच्चों, अनेक भूली भटकती, ठुकराई एवं मुरझाई हुई देवियों तथा कलियों को जीवन के हर पहलू में खिलने खेलने का उपयुक्त अवसर मिला है और वे पढ़ लिख कर टैक्नीकल तथा व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बने हैं। आश्रम की कन्याओं ने कुशल तथा योग्य गृहणी बन कर अनेक परिवारों में अमूल्य योग्यता तथा आदर्श महिलाओं का परिचय दिया है। उन बच्चों को जिनको अनाथ, यतीम कह कर दुत्कारा जाता था, आश्रम ने सहारा ही नहीं दिया अपितु उन्नति के सभी साधन एवं सुविधाएं जुटाने में कोई कसर उठा नहीं रखी। भारत वर्ष की यह एक सबसे पुरानी संस्थाओं में से है। जहाँ जनता के दान का सदुपयोग अनाथ बच्चों के पालन-पोषण, शिक्षा-दीक्षा, विधवाओं एवं ठुकराई हुई कन्याओं को अपने भविष्य को सुन्दर बनाने के लिए उपयुक्त अवसर दिया जाता रहा है।

बच्चों की संख्या (राज्य अनुसार)

आश्रम में कुल बच्चों की संख्या 150 है जिसका विस्तृत व्योरा निम्न प्रकार से है :—

	राज्य	संख्या
1.	बिहार	63
2.	पंजाब	39
3.	उत्तर प्रदेश	20
4.	हिमाचल प्रदेश	15
5.	हरियाणा	6
6.	दिल्ली	3
7.	महाराष्ट्र	2
8.	मद्रास	1
9.	उड़ीसा	1
	कुल संख्या	150

भोजन व्यवस्था

जून, 1978 में आश्रम का प्रबन्ध श्री रामचन्द्र जी आर्य, अवैतनिक अधिष्ठाता को सौंपा गया। उनके हाथों आश्रम का प्रबन्ध सुचारु रूप से चल रहा है। आप फिरोजपुर शहर तथा छावनी के गणमान्य व्यक्तियों में से एक हैं। श्री ब्रह्मदत्त शर्मा, संयोजक स्थानीय समिति भी रात-दिन आश्रम सेवा में तत्पर रहते हैं।

इस वर्ष भी समय-समय पर सभा की ओर से श्री आर० एन० मेहता, प्रधान, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उप सभा पंजाब एवं श्री खेमचन्द जी महता सह-मंत्री, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली द्वारा आश्रम कार्यों की देख-रेख होती रही व सहयोग मिलता रहा तथा आश्रम का लेखाजोखा भी प्रति मास सभा के द्वारा स्वीकृत होता रहा ।

आश्रम प्रबन्ध का मार्गदर्शन और सहयोग देने के लिए एक तदर्थ स्थानीय समिति कार्य करती रही है जिसके सदस्य निम्नलिखित हैं :—

1.	श्रीमती साता देवीजी विनायक	सदस्य
2.	श्री जसवन्तराय जी कुमार	सदस्य
3.	कुमारी ललिता देवी जी प्रधानाचार्य	सदस्य
4.	श्री द्वारकानाथ जी वर्मा	कोषाध्यक्ष
5.	श्री जगदीशचन्द्र जी आहूजा	इंटरनल आडीटर
6.	श्री रामचन्द्र जी आर्य अधिष्ठाता	(पदेन)
7.	श्री ब्रह्मदत्त जी शर्मा	संयोजक उप समिति

अनाथालय कर्मचारियों के नाम विवरण आरम्भ में दिये हैं ।

इसके अतिरिक्त डा० राजाराम जी भोला, डा० रामबाबू जी गुप्ता, डा० साधूचन्द जी विनायक, डा० के० के० ग्रोवर जी एवं सनातन धर्मार्थ अस्पताल द्वारा भी समय-समय पर विशेष और गहन उपचार के लिए बच्चों की देखभाल की जाती है ।

हमें सिविल अस्पताल एवं मिशन अस्पताल से भी यथोचित सुविधाएं प्राप्त होती हैं । इन सब संस्थाओं एवं महानुभावों का धन्यवाद ।

विशेष प्रवचन एवं भाषण

यथा पूर्व इस वर्ष भी काफी संख्या में समय-समय पर विद्वानों द्वारा प्रभावशाली प्रवचन हुए (1) श्री खेमचन्द जी महता सह-मंत्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, दिल्ली से जब-जब यहाँ पधारे, बड़ी ही सरल तथा प्रभावशाली भाषा में बच्चों को अध्ययन, सभ्यता, अनुशासन, समय पालन तथा आर्यत्व के भाव भरे । (2) श्री महात्मा अमर स्वामी जी सरस्वती द्वारा श्री रामचन्द्र जी आर्य के अधिष्ठाता पद ग्रहण करने पर अपने कर कमलों से शुभ कामनाएं अर्पित की । (3) पंडित जैमिनि जी शास्त्री (4) इतिहास केसरी निरंजन देव जी (5) श्री श्याम सिंह जी हितकर मण्डली (6) पं० राम कृष्ण जी शर्मा पुरोहित आर्य समाज, फिरोजपुर शहर एवं अन्य प्रसिद्ध आर्य विद्वानों द्वारा भजन और उपदेश दिए गए जिनका भरपूर लाभ

बच्चों ने उठाया। (1) आश्रम में एक भव्य यज्ञ शाला है जिसमें और भी अतिथि-गण सुविधा पूर्वक बैठ सकते हैं। प्रातः एवं शाम को सम्मिलित रूप से भजन, संध्या प्रार्थना आदि करते हैं। गर्मियों में प्रातः 5 बजे से 6.30 बजे तक और शाम को 6 बजे से 7 बजे तक भजन एवं संध्या, हवन-यज्ञ तथा प्रार्थना आदि सम्पन्न होती है। उपदेश अधिष्ठाता द्वारा प्रतिदिन सायं-प्रातः नियमित रूप से दिया जाता है। इसके अतिरिक्त आश्रम सम्बन्धी सूचनाएं भी दी जाती हैं।

आश्रम के बच्चे एवं आर्य समाज

प्रत्येक रविवार को आश्रम के बच्चे स्थानीय आर्य समाजों में जाकर साप्ताहिक सत्संगों में भाग लेकर लाभ उठा रहे हैं। कुछ बच्चे आर्य समाज, लुधियाना रोड, फिरोजपुर छावनी और कुछ बच्चे आर्य समाज, बस्ती टेंकाँवाली में जाते हैं। आर्य समाज (कालिज विभाग) सदर बाजार, फिरोजपुर छावनी में साप्ताहिक सत्संग सोमवार को सायं 5 बजे से 7 बजे तक लगता है, वहाँ पर बड़े लड़के सत्संग में सम्मिलित होते हैं। इसके अतिरिक्त आर्य समाज, रानी का तालाब, फिरोजपुर शहर, आर्य समाज (कालिज विभाग) फिरोजपुर शहर के उत्सवों में सभी बच्चे उत्साह-पूर्वक भाग लेते हैं। प्रत्येक त्यौहार पर भी बच्चे नियमित रूप से भाग लेकर प्रवचनों से भरपूर ज्ञान अर्जित करते हैं।

इस वर्ष निम्नलिखित विशेष आयोजन आश्रम में उत्साह पूर्वक मनाए गए :—

(1) रक्षा बन्धन
(2) गणतन्त्र दिवस
(3) महात्मा हंसराज दिवस
(4) शिवरात्रि बोधोत्सव
(5) मकर संक्रान्ति
(6) पं० लेखराम दिवस
(7) आर्य समाज स्थापना दिवस
(8) महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस
(9) आर्य अनाथालय में वृक्षारोपणोत्सव

आर्य अनाथालय में वृक्षारोपणोत्सव :—

श्री चमनलाल जी बैंन्स डिप्टी कमिश्नर फिरोजपुर की अध्यक्षता में दिनांक 10-3-1979 को आश्रम में वृक्षारोपण सप्ताह उत्सव का आयोजन, डिवीजनल फारेस्ट आफिसर एवं कृषि विभाग के सहयोग से आम, नींबू, करौंदा, कीनू, आड़ू तथा अनार आदि के लगभग 700 पौधे लगाए गए। इसमें श्री महिया जी जनरल मैनेजर

फिरोजपुर रोडवेज, डा० साधूचन्द्र जी विनायक, श्री रघुवीरसिंह जी शास्त्री, श्री ब्रह्मदत्त जी शर्मा एवं अन्य महानुभावों ने भाग लिया। इस उत्सव का सारा व्यय डा० के०के० ग्रोवर जी ने किया। वह समय-समय पर आश्रम कार्यों में रुचि लेते रहते हैं और हम उनके बड़े ही आभारी हैं।

गौशाला

आश्रम में अपनी एक गौशाला है जिसमें पशुओं की कुल संख्या 16 है। दो भैंसें और चार गाएं दूध देती हैं। तीन गाएं नई हो गई हैं, बाकी के पशुओं में तीन बछड़े, चार गाएं, एक पड़िया, एक पाड़ा है। दूध केवल आश्रम के बच्चों में बाँट दिया जाता है। आवश्यकता पड़ने पर दूध बाहर से भी मंगाया जाता है। गौशाला में पशुओं की देख-रेख ग्वाला द्वारा की जाती है।

डा० के० के० ग्रोवर द्वारा गाय खरीदने के लिए 1725-00 रु० में एक उत्तम गाय खरीद कर दी है जिसको मिला कर आश्रम में पशुओं की संख्या 17 हो गई है।

व्यायाम एवं खेल कूद

बच्चों द्वारा प्रतिदिन सुबह शाम व्यायाम किया जाता है। जुलाई, 78 से दिसम्बर, 78 तक श्री कंवल नारायण जी पुरोहित आर्य समाज, लुधियाना रोड, फिरोजपुर छावनी शाम को 5 बजे से 6 बजे तक आर्यवीर दल के प्रोग्राम स्तूप बनाना, खो-खो एवं अन्य व्यायाम सिखाते रहे। यौगिक आसन एवं व्यायाम की शिक्षा भी चलती रही। बच्चों को खेलने के लिए क्रिकेट, हॉकी एवं फुटबाल का भी प्रबन्ध है। लड़कियाँ रिंग और लुड्डो खेलती हैं। भरत कुमार आई० टी० आई० छात्र, बास्केट बाल, फुलवाल, क्रिकेट का अच्छा खिलाड़ी है और अपनी संस्था द्वारा बाहर भी बास्केट बाल की स्पर्धाओं में भाग लेने के लिए भेजा जाता है।

डा० वीरेन्द्रकुमार जी प्रतिदिन प्रातः 1 घण्टा के लिये बच्चों की देखभाल करते हैं। इस वर्ष लगभग 400 रुपये की दवायें लायन्स क्लब फिरोजपुर द्वारा प्रदान की गई। डाक्टर का वेतन नवम्बर, 7८ से श्री जितेन्द्र जी अग्रवाल के द्वारा दिया जाता है और अधिकतर दवायें उन्हीं के द्वारा मुफ्त आती रही हैं। इनकी इस अनुकरणीय अनुकम्पा दयालुता के लिए हम बड़े आभारी हैं।

भोजन व्यवस्था

अनाथालय के बच्चों को ऋतु अनुसार दो समय अल्पाहार एवं दो समय पूर्ण भोजन दिया जाता है। गर्मियों में प्रातः अल्पाहार में लस्सी एवं फुलका और सायं दूध की लस्सी और कुछ मिष्ठान्न या नमकीन दिये जाते हैं। दुपहर के भोजन में एक दाल और सब्जी और सायं प्रायः दाल ही होती है। इसके अतिरिक्त दानी महानुभावों से भेजे हुए फल और मिष्ठान्न और अन्य खाद्य वस्तुएं सायं अथवा प्रातः और विशेष कर प्रमुख अवसरों पर दिये जाते हैं।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उप-सभा, पंजाब, चण्डीगढ़ अधिकारी तथा अन्तरंग सदस्य, 1978-79

1. प्रिंसिपल श्री आर० एन० महता जी, प्रधान उपसभा डी० ए० वी० कालेज, अमृतसर
2. प्रिंसिपल श्री बी०एस० बहल जी, 590, सेक्टर 18 बी, चंडीगढ़
3. प्रिंसिपल श्री चमनलाल जी अरोड़ा, डी० ए० वी० कालेज, जालंधर
4. श्री सत्यानन्द जी मुंजाल, 24-एल, माडल टाउन, लुधियाना
5. प्रिंसिपल श्रीमती सुदेश अहलावत जी, डी० ए० वी० कालेज फार विमन, अमृतसर
6. श्री एम० एल० तनेजा जी, कोषाध्यक्ष उप-सभा, 268, ग्रीन ऐवेन्यू, अमृतसर
7. श्री युगलकिशोर जी लूथड़ा, डान प्रेस कटड़ा शेरसिंह, अमृतसर
8. श्री ब्रह्मदत्त जी शर्मा, आर्य समाज, फिरोजपुर शहर
9. महात्मा जगदीश मित्र जी, कादियाँ
10. प्रिंसिपल श्री त्रिलोकीनाथ जी, डी० ए० वी कालेज, चंडीगढ़
11. प्रिंसिपल कु० कमला खन्ना जी, म० हंसराज महिला महाविद्यालय, जालंधर
12. वैद्य विद्यासागर जी, मंत्री, उपसभा पंजाब तथा चण्डीगढ़ 23-ए, दयानन्द नगर, लारेंस रोड, अमृतसर

प्रतिष्ठित सदस्य

1. प्रिंसिपल कु० विद्यावती जी आनन्द, एन 66, पंचशील पार्क, नई दिल्ली-17
2. चौ० श्री हरिदेव जी दत्त, पो० बो० नं० 29, सिनेमा रोड, खन्ना
3. श्री यश जी, मालिक 'दैनिक मिलाप', जालंधर
4. श्री वेदप्रकाश जी मलहोत्रा, 280-एल, माडल टाउन, जालंधर
5. डा० वेदीराम जी, डी० ए० वी० कालेज, जालंधर
6. श्री बलवीरचन्द जी भाटिया, 65, माडल टाउन, जालंधर
7. श्री हरबन्सलाल जी शर्मा, 406. माडल टाउन, जालंधर
8. श्री वेदव्रत जी मेहरा, डी० ए० वी० कालेज, जालंधर
9. श्री इन्द्रजीत जी तलवाड़, प्रिंसिपल, साईंदास हायर सैकेण्डरी स्कूल, जालंधर
10. श्रीमती एस० राय, प्रिंसिपल, मेहरचन्द डी० ए० वी० कालेज फार विमन, चण्डीगढ़

11. जस्टिस श्री टेकचन्द जी, आर्य समाज. सेक्टर 7 बी, चंडीगढ़
12. प्रिंसिपल श्री हंसस्वरूप जी, 577, सेक्टर 18 बी, चंडीगढ़
13. श्री कृष्ण जी आर्य, डी० ए० वी० कालेज, चंडीगढ़
14. श्री पी. डी. चौधरी, प्रिंसिपल, डी. ए. वी. कालेज, दसूहा
15. श्री राजेन्द्रनाथ जी, प्रिंसिपल, डी. ए. वी. हायर सैकेण्डरी स्कूल, दसूहा
16. श्री एस. पी. मलहोत्रा, प्रिंसिपल, डी. ए. वी. कालेज, भटिंडा
17. श्री वी. एन. चावला, प्रिंसिपल, डी. ए. वी. कालेज, अबोहर
18. सुश्रीकान्ता सरीन, प्रिंसिपल, गोपाचन्द आर्य महिला कालेज, अबोहर
19. श्री ए. एन. शर्मा, प्रिंसिपल, डी. ए. वी. कालेज, नकोदर
20. श्री मोहनलाल जी अरोड़ा, 1, राधास्वामी रोड, अमृतसर
21. श्री मुनिलाल जी खन्ना, 16, लारेन्स रोड, अमृतसर
22. श्री रामनाथ जी शर्मा, आर्य समाज, लारेन्स रोड, अमृतसर
23. श्री रुद्रदत्त जी शर्मा, आर्य समाज, लक्ष्मणसर, अमृतसर
24. प्रिंसिपल श्री भगतराम जी, 70-सी, टेलर रोड, अमृतसर
25. श्री विश्वामित्र जी, डी. ए. वी. कालेज, अमृतसर
26. श्री द्वारिकादत्त जी शर्मा, डी. ए. वी. कालेज, अमृतसर
27. श्रीमती आर० एल० सेठी, प्रिंसिपल, डी. ए. वी. कालेज आफ एजूकेशन फार विमन, अमृतसर
28. श्री धर्मवीर जी पसरीचा, प्रिंसिपल, एस. एल. बाबा डी. ए. वी. कालेज, बटाला
29. श्री देवराज जी मरवाहा, ,, ,, बटाला
30. श्री गुरदयालसिंह जी कोहली, आर्य समाज, बटाला
31. श्री रामचन्द जी, हिन्द क्लाथ हाऊस, सदर बाजार, फिरोजपुर
32. श्री रामरखा जी शर्मा, श्री कृष्णा फार्मेसी कटरा शेरसिंह, अमृतसर
33. श्री ब्रह्मदत्त जी शर्मा, 14, डी. ए. वी. कालोनी जी. टी. रोड, जालंधर
34. श्री अमरनाथ जी महाजन, 19, ब्रह्मनगर, लारेन्स रोड, अमृतसर

आय प्रादेशिक प्रतिनिधि उप सभा पंजाब तथा चण्डीगढ़ धीरे-धीरे संकुचित प्रान्त के बन जाने और फलस्वरूप सीमित साधनों के होने से प्रचार कार्य किसी उप सभा से कम नहीं रहा। इस उप सभा के पास केवल तीन वैतनिक उपदेशक हैं परन्तु अवैतनिक विद्वानों और उपदेशकों के सहयोग से प्रचार कार्य बहुत सफल रहा।

श्री पं. खुशीराम जी, महोपदेशक

श्री पं० त्रिलोकचन्द जी शास्त्री, महोपदेशक

श्री मदनमोहन जी, भजनोपदेशक

मान्य उपदेशक सारा वर्ष समाजों के उत्सवों में भाग लेते रहे और डी. ए. वी. संस्थाओं में जाकर भी प्रचार कार्य करते रहे। प्रचारक मण्डल के इस तत्परता से बड़ी प्रसन्नता है। पंजाब प्रान्त के अलावा इस वर्ष प्रचारक मण्डल ने हिमाचल प्रदेश, हरयाणा प्रान्त एवं जम्मू कश्मीर में भी प्रचार कार्य किया। आर्य समाजों का उप सभा से बड़ा स्नेह है इसके लिए हम उनके बड़े आभारी हैं—और ऐसा मुझे पूर्ण विश्वास है कि भविष्य में भी उनका सहयोग ऐसे ही प्राप्त होता रहेगा। इस उपसभा को इस बात का बड़ा मान है कि इस प्रचार कार्य के महान् कार्य के लिए डी. ए. वी. संस्थाओं के योग्य प्रिंसिपलों, प्राध्यापकों, आर्य समाज के वरिष्ठ वक्ताओं, कार्यकर्त्ताओं और अनुभवी विद्वानों का समय-समय पर योगदान मिलता रहा है। इसके लिए उपसभा पंजाब-चण्डीगढ़ उन सभी के प्रति आभार प्रकट करती है। हमें पूर्णआशा है कि भविष्य में भी वे कृपा बनाए रखेंगे।

उप-सभा के मान्य हितैषी जिन्होंने प्रचार कार्य में अवैतनिक रूप में विशेष सहयोग दिया—

1. प्रो. कृष्ण जी आर्य — चण्डीगढ़
2. प्रिंसिपल श्री हंसस्वरूप जी — ,,
3. प्रिंसिपल श्री देशराज जी महाजन — जालन्धर
4. डा. वेदीराम जी शर्मा — ,,
5. प्रो. ब्रह्मदत्त जी शर्मा — ,,
6. प्रो. वेदव्रत जी मेहरा — ,,
7. प्रो. वेदप्रकाश जी मलहोत्रा — ,,
8. प्रो. एल. पी. उपाध्याय — ,,

9. प्रिंसिपल श्री ए. एन. शर्मा — नकोदर
10. प्रो. यशपाल जी — "
11. प्रिंसिपल श्री रमेश जीवन जी — कांगड़ा
12. प्रिंसिपल श्रीमती सुदेश जी अहलावत — अमृतसर
13. प्रो. कुमारी माधुरी — "
14. प्रो. द्वारिकादत्त जी — "
15. प्रो. विश्वामित्र जी — "
16. प्रो. एम. एल. तनेजा जी — "
17. प्रिंसिपल भगतराम जी — "
18. श्री कृष्णलाल तलवाड़ जी — "
19. श्री रत्नचन्द जी केसर — "
20. श्री भूषणकुमार केसर — "

हम आशा करते हैं कि अन्य आर्य विद्वान भी उपरोक्त महानुभावों की भाँति प्रचार कार्य में सहयोग अवश्य प्रदान करेंगे। जिससे वेद प्रचार के कार्य में प्रगति होगी।

युवकों की धार्मिक प्रवृत्ति बने और इस क्षेत्र में रुचि उत्पन्न हो इस विचार से गत वर्ष जिस प्रकार आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उप सभा पंजाब-चण्डीगढ़ ने भाषण प्रतियोगिता का आयोजन डी० ए० वी० कालेज, अमृतसर में किया था। इस वर्ष डी० ए० वी० कालेज, चण्डीगढ़ में यह आयोजन सम्पन्न हुआ। श्री डा० एम० डी० चौधरी जी ने प्रधान पद को सुशोभित किया। चलविजयोपहार, जो कि श्री युगल किशोर जी लूथड़ा, मालिक दि डांन प्रैस कटड़ा शेरसिंह, अमृतसर, ने उप सभा को प्रचारार्थ दिया हुआ है, डी० ए० वी० कालेज, जालन्धर की विजेता टीम ने प्राप्त किया। इस सारे कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए जो सहयोग प्रिंसिपल श्री त्रिलोकी नाथ जी ने तथा प्रो० श्री कृष्णसिंह जी आर्य ने दिया उसके लिए उपसभा की ओर से दोनों महानुभावों का हृदय से धन्यवाद करते हैं।

वेद प्रचार कार्य में प्रगति लाने के लिए उप सभा के अधिकारियों ने निम्न आर्य समाजों का दौरा किया और वहां के सदस्यों से मिलकर उनके कार्यक्रमों में पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया।

आर्य समाज, गुरदासपुर, आर्य समाज, बटाला, आर्य समाज, उत्तमनगर, आर्य समाज, लक्ष्मणसर, आर्य समाज पट्टी, आर्य समाज, माडल टाऊन लुधियाना, आर्य समाज, फिरोजपुर शहर, आर्य समाज, फिरोजपुर छावनी, आर्य समाज, सेक्टर 16, चण्डीगढ़ तथा आर्य समाज, खन्ना।

आर्य समाज खन्ना वालों ने चार दुकानें 16,000 रुपये की धनराशि से बनवाई हैं, एक कमरा भी अतिथियों के लिए बनवाया है जिनका उद्‌घाटन उपसभा प्रधान प्रिंसिपल श्री रघुनाथ जी मेहता अमृतसर ने किया। वहां से वेद प्रचार के लिए एवं अनाथालय के लिए धनराशि भी प्राप्त हुई।

आर्य समाज, माडल टाऊन, लुधियाना वालों ने भी सत्संग वाले कमरे के ऊपर एक बहुत सुन्दर बड़ा कमरा बनवाया है जिसका उद्‌घाटन शिवरात्रि के दिन किया गया और 1100 रुपये वेद प्रचार के लिए प्राप्त हुए। यह आर्य समाज उप सभा की समाजों में प्रचार कार्य की दृष्टि से अग्रणी है।

उप सभा के प्रचारक महानुभावों का प्रचार कार्य :—इस उप सभा में तीन पुराने तथा अनुभवी प्रचारक हैं। इनके प्रचार कार्य का संक्षिप्त विवरण निम्न है :—
श्री खुशीराम जी महोपदेशक :—

आर्य समाज पट्टी, अमृतसर, आर्य समाज, लारेन्स रोड, अमृतसर, आर्य समाज, कांगड़ा, हिमाचल, आर्य समाज, सेक्टर 7 बी, चण्डीगढ़, आर्य समाज रमदास, अमृतसर, आर्य समाज, कादियां इन समाजों में इन्होंने कथा की और निम्न समाजों के उत्सवों पर पधारे और कार्यक्रम सम्पन्न किए :—

आर्य समाज, दसूहा
आर्य समाज, बस्ती, गुजां, जालन्धर
आर्य समाज, नकोदर
आर्य समाज, विक्रमपुरा इत्यादि

श्री पं० त्रिलोक चन्द जी शास्त्री :—आर्य समाज, सेक्टर 7 बी, चण्डीगढ़, आर्य समाज, लारेन्स रोड़, अमृतसर, आर्य समाज, प्रागपुर, नगरोटा, मण्डी, कांगड़ा, आर्य समाज, लोहगढ़, अमृतसर, आर्य समाज, फिरोजपुर शहर, आर्य समाज, माडल टाऊन, अमृतसर, आर्य समाज, पुरानी मण्डी, जम्मू इन समाजों में इन्होंने कथा की और निम्न समाजों के उत्सवों के कार्यक्रम सम्पन्न किए :—

आर्य समाज, लक्ष्मणसर, अमृतसर, गुरदासपुर, उन्ना, होश्यारपुर तथा मान्यवर डा० गणेशदास जी कपूर, मंत्री उपसभा हरियाणा ने दिए कार्यक्रम के अनुसार हरियाणा प्रान्त में भी अनेक स्थानों पर प्रचार किया।

श्री मदन मोहन जी भजनोपदेशक :—आर्य समाज, कांगड़ा, प्रागपुर, ऊन्ना, आर्य समाज, सेक्टर 7 बी, चण्डीगढ़, विक्रमपुरा, जालन्धर, नगरोटा, मण्डी, रमदास, गुरदासपुर, कादियां, फिरोजपुर, पुरानी मण्डी, जम्मू श्री मेलाराम जी भजनोपदेशक के पत्र पर, कि वह अब स्वस्थ हैं और कार्य कर सकते हैं—पुनः विचार किया गया

था और निश्चय किया गया कि उनकी सेवाएं अस्थाई रूप से ले ली जायें। अभी वह कुछ ही दिन कार्य कर पाए थे कि उनको श्वांस और पक्षाघात का आक्रमण हो गया। ईश्वर उन्हें शीघ्र स्वस्थ करें। सभा प्रधान आदरणीय श्री लाला सूरजभान जी की प्रेरणा, पथ-प्रदर्शन एवं आशीर्वाद से ही वेद प्रचार का इतना महान् कार्य सम्पन्न हुआ है, मैं उनके प्रति हृदय से आभार प्रकट करता हूं।

मान्य उपदेशक वर्ग का भी हृदय से धन्यवाद करता हूं कि उन्होंने दिन और रात सर्दी और गर्मी की परवाह न करते हुए सभा की प्रतिष्ठा को बनाए रखने में कठोर परिश्रम किया। इस सहयोग के लिए उपसभा उनका आभार मानती है। सभी दानी महानुभावों तथा जिन शिक्षण संस्थाओं ने मुझे हर प्रकार से सहयोग दिया है, उनका भी धन्यवाद करना मेरा कर्त्तव्य बनता है।

उप सभा प्रधान प्रिंसिपल श्री रघुनाथ जी मेहता की देखरेख में उपसभा ने हर दिशा में जो तरक्की की है उसका सारा श्रेय उन्हीं को जाता है उनके प्रति मैं कृतज्ञता प्रकट करता हूं। प्रचार कार्य में जो कमियां रह गई हैं वह मेरी तरफ से रह गई हैं उनके लिए क्षमा चाहता हूं।

—वैद्य विद्यासागर मंत्री

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा हरियाणा के 1978-79 वर्ष के लिए निम्नलिखित पदाधिकारी, प्रतिष्ठित सदस्य एवं अन्तरंग सदस्यों की सूची

1. श्री रा० सा० चौ० प्रताप सिंह जी — प्रधान (करनाल)
2. श्री निहाल चन्द्र जी गुगनानी — उप प्रधान (रोहतक)
3. सेठ पारसनाथ जी — उप प्रधान (हांसी)
4. सेठ चमनलाल जी — उप प्रधान (पानीपत)
5. श्री वृजलाल जी गुप्ता — उप प्रधान (टोहाना)
6. डा० गणेशदास जी आर्य — मंत्री (करनाल)
7. प्रो० रामविचार जी — उप मंत्री (हिसार)
8. प्रो० वेद सुमन जी वेदालंकार — वेद प्रचार अधिष्ठाता (करनाल)
9. प्रो० वेद प्रकाश जी वेदालंकार — सहायक वेद प्रचार अधिष्ठाता (अम्बाला)
10. प्रिं० आर० के० ग्रोवर — कोषाध्यक्ष (करनाल)
11. श्री ओमप्रकाश जी गुप्ता — लेखा निरीक्षक (पानीपत)

प्रतिष्ठित सदस्य

1. प्रिं० के० डी० शर्मा (साढौरा)
2. प्रिं० वी० के० कोहली (अम्बाला)
3. प्रिं० एन० डी० ग्रोवर (हिसार)
4. प्रिं० पी० के० बंसल (नन्योला)
5. प्रिं० पी० एन० कौल (अम्बाला)
6. प्रिं० मेलाराम जी वर्क (करनाल)
7. आचार्य सत्यप्रिय जी (हिसार)
8. चौ० देसराज जी, एम. एल. ए. (इन्द्री)
9. चौ० शिवराम जी, एम. एल. ए. (नीलोखेड़ी)
10. सेठ लालमन जी आर्य (माडल टाउन हिसार)
11. चौ० कृष्णलाल जी (चण्डीगढ़)
12. लाला होंदाराम जी आर्य (तरावड़ी)
13. डा० विद्यासागर जी (रोहतक)

अन्तरंग सदस्य

1. श्री केवलराम कुकरेजा	(करनाल)
2. मास्टर मामचन्द जी	,,
3. श्री राम स्नेही जी	(पानीपत)
4. श्री चमनलाल जी आर्य	,,
5. श्री बलदेवराज भाटिया	,,
6. प्रिं० शानुलाल नारंग	,,
7. श्री रमेश चन्द्र कपिला	(अम्बाला-छावनी)
8. श्री जगदीश चन्द्र जी	(अम्बाला शहर)
9. श्री सुरिन्द्र कुमार जी	,,
10. डा० आर० टी० गुलाटी	(हिसार)
11. श्री ईश्वर सिह जी	(नीलोखेड़ी)
12. सेठ मदनलाल जी	(यमुना नगर)
13. श्री खरेतीलाल मलहोत्रा	,,
14. श्री नन्दलाल जी आर्य	(रोहतक)
15. श्री लखपत राय जी	(दादुपुर, करनाल)

16. मा० केहर सिंह जी, हेडमास्टर	(भूनक जिला करनाल)
17. डा० आत्म प्रकाश जी	(इन्द्री)
18. मा० किशोरी लाल जी	(नारायणगढ़)
19. श्री हरिकिशन आर्य	(मा० टा० हिसार)
20. चौ० इन्द्रसिंह जी	(तरावड़ी)
21. श्री महेश्वर दयाल लूथड़ा	(गुड़गांव)
22. पं० रविदत्त जी शास्त्री	(हिसार)
23. ठा० यशवन्त सिंह	(बुर्ज अम्बाला)
24. चौ० अमरनाथ जी	(भिवानी)
25. पं० मोतीराम जी	(कुरुक्षेत्र)
26. श्री दयानन्द शास्त्री	(टिटोली, रोहतक)
27. पं० चन्द्र रूप आर्य	(मदीना, रोहतक)
28. श्री दिलबाग सिंह जी	(खाण्डा खेड़ी, जिला रोहतक)
29. पं० श्री धर्मवीर जी सभ्रवाल	(कुरुक्षेत्र)
30. श्री हंसराज जी कड़वल	(पानीपत)
31. श्री दीन दयाल जी	(भिवानी)
32. पं० जुगतिराम जी	(जींद)

प्रचार की दृष्टि से हमने हरियाणा के सभी जिलों को तीन मण्डलों में विभाजित किया हुआ है। इस वर्ष आर्य समाज के बढ़ते हुए प्रचार को देखकर हमने सभा में एक संन्यासी स्वामी सुकर्मानन्द जी, एक भजनोपदेशक श्री विक्रम सिंह जी को भी नियुक्त किया था। जो कि लगभग दिसम्बर 1978 तक सभा में कार्य करते रहे और उसके बाद किन्हीं विशेष कारणों से वे सभा से मुक्त कर दिए गए। इसमें कोई सन्देह नहीं कि इस वर्ष हरियाणा में पिछले वर्ष से बहुत ज्यादा प्रचार हुआ है। निम्नलिखित तीन मण्डल हैं :—

1. **करनाल मण्डल**: जिसमें ठा० दुर्गा सिंह जी आर्य तूफान एवं उनके सहयोगी श्री नत्थूराम जी, ढोलक मास्टर, श्री विक्रमसिंह जी भी दिसम्बर सन् 1978 तक इसी मण्डल में कार्य करते रहे। स्वामी सुकर्मानन्द जी को भी विशेष रूप में इसी मण्डल में रखा गया। वैसे वे प्रचार के लिए हरियाणा की सभी समाजों में जाते रहे। करनाल मण्डल के साथ जिला सोनीपत, गुड़गांव एवं जिला महेन्द्रगढ़ इसके कार्य क्षेत्र में आ जाते हैं।

2. हिसार मण्डल :—दूसरा हिसार मण्डल है जिसके मण्डलपति पं० प्रभुदयाल जी हैं। जो कि सभा की लगन से दिन रात सेवा करते हैं। इनके साथ श्री सुमेर सिंह जी भजनोपदेशक, मा० धर्मचन्द जी भजनोपदेशक एवं श्री जीतराम जी, ढोलक मास्टर कार्य कर रहे हैं। जिला रोहतक, जिला जीन्द, जिला भिवानी, जिला सिरसा—इन सभी क्षेत्रों में पं० प्रभु दयाल जी मण्डली द्वारा कार्य करते हैं।

3. अम्बाला मण्डल:—जो कि जिला कुरुक्षेत्र में भी कार्य करता है। अम्बाला मण्डल के मण्डलपति पं० अमर सिंह जी हैं। इनके साथ पं० जगत राम जी, श्री सूरत सिंह जी तथा श्री वस्ती राम जी, ढोलक मास्टर कार्य करते हैं। इस प्रकार उपसभा के ये तीनों मण्डल हरियाणा के सारे नगरों एवं देहातों में जाकर उत्साहपूर्वक वेद प्रचार का कार्य करते हैं।

उपसभा हरियाणा ने सभी कार्यकर्त्ताओं की इस वर्ष भी काफी वेतन वृद्धियाँ की हैं जिससे हरियाणा में इस वर्ष और भी ज्यादा उत्साह के साथ कार्यकर्त्ताओं ने वेद प्रचार किया। प्रधान राय साहब चौ० प्रतापसिंह जी, मंत्री, डा० गणेश दास जी तथा प्रो० वेद सुमन जी वेदालंकार भी समयानुसार नगरों, कस्बों, ग्रामों में जलसों पर उपस्थित होते रहे।

प्रो० वेद सुमन जी वेदालंकार पिछले साल से ही सभा के वेद प्रचार अधिष्ठाता एवं उपमंत्री तथा कार्यालय अध्यक्ष के रूप में सभा के प्रवन्ध का सारा कार्य-भार संभालते रहे। इस वर्ष उन्होंने गत वर्ष की वजाय और अधिक वेद प्रचार के कार्य बढ़ा-चढ़ा कर किये। प्रो० वेद सुमन जी वेद प्रचार के लिए न केवल हरियाणा में ही अपितु उत्तर प्रदेश में झाँसी शहर में भी महर्षि दयानन्द एवं लाला लाजपत राय की फिल्म लेकर गए और वहाँ पर सभा के माध्यम से वहुत अच्छा प्रचार किया। लगभग 301 रु० की राशि सभा के लिए लेकर आए। इस प्रकार के उत्साही नवयुवक विद्वान के द्वारा उपसभा हरियाणा को वेद प्रचार के कार्य में एक नया जीवन मिला। वे अपनी ओर से सभा के संगठन को मजबूत एवं सुन्दर बनाने के लिए दिन-रात भाग दौड़ करते रहते हैं। कई बार उन्होंने एक ही तिथि में सभा के तीन-तीन जलसे भुगताने का प्रयास किया। क्योंकि प्रो० वेद सुमन जी सभा के कार्यालय को भी संभालते हैं इसीलिए पत्र व्यवहार का कार्य नियमित रूप से चलता है। समय अनुसार कार्यालय की ओर से पत्र के द्वारा सभा से सम्बन्धित सभी आर्य समाजों को जलसों एवं वेद कथाओं के लिए प्रेरणा देते रहे। इस पत्र व्यवहार के कार्य का हरियाणा की

सभी समाजों पर बहुत भारी असर पड़ा है। उपसभा हरियाणा के सारे पत्र टाईप करके भेजे जाते हैं। क्योंकि उपसभा हरियाणा के कार्यालयं में एक लड़की कार्य करती है जो कि बी० ए० पास है। वह अंग्रेजी एवं हिन्दी दोनों भाषाओं के टाईप का कार्य भलीभांति कर लेती है।

इस वर्ष उपसभा हरियाणा में वेद प्रचार के कार्य को गति देने के लिए पांच अन्तरंग सभा की बैठकें की और छठी बैठक अप्रैल में चुनाव से पहले ही करने जा रहे हैं। अन्तरंग सभा की सभी बैठकों में सदस्यों की उपस्थिति अच्छी रही। और समय अनुसार सभी ने अन्तरंग बैठक में वेद प्रचार के कार्य को और तेजी से करने के लिए बहुतसे अच्छे सुझाव दिये। वे सभी सुझाव हमारे कार्य में गति देने के लिए बड़े लाभदायक रहे।

इस वर्ष उपसभा हरियाणा ने निम्नलिखित गांवों में वेद प्रचार किया

1. आर्य समाज, ऋषि नगर (कुरुक्षेत्र)
2. आर्य समाज, नरखेड़ी (करनाल)
3. आर्य समाज, गजलाना (कुरुक्षेत्र)
4. आर्य समाज, गन्धाना (अम्बाला)
5. आर्य समाज, मिर्जापुर (कुरुक्षेत्र)
6. आर्य समाज, पिंजोर (कालका)
7. आर्य समाज, अम्बाला छावनी
8. आर्य समाज, खानपुर (अम्बाला)
9. आर्य समाज, फरीदाबाद (गुड़गांव)
10. आर्य समाज, बड़ौली (गुड़गांव)
11. आर्य समाज, अहबुतपुर (अम्बाला)
12. आर्य समाज, चूहड़पुर (अम्बाला)
13. आर्य समाज, एच० एम० टी० पिंजौर
14. आर्य समाज, रावगढ़ (अम्बाला)
15. आर्य समाज, तलाकोट (अम्बाला)
16. आर्य समाज, तन्दवाल (अम्बाला)
17. आर्य समाज, दौलतपुर (अम्बाला)
18. आर्य समाज, ठाकुरपुरा (अम्बाला)
19. आर्य समाज, बघौली (अम्बाला)
20. आर्य समाज, कन्टरोली (कुरुक्षेत्र)

21. आर्य समाज, नन्हेड़ा (करनाल)
22. आर्य समाज, लाहड़पुर (अम्बाला)
23. आर्य समाज, सैदपुर (अम्बाला)
24. आर्य समाज, रायपुर (अम्बाला)
25. आर्य समाज, इस्लामाबाद (अम्बाला)
26. आर्य समाज, नंगल (पंजाब)
27. आर्य समाज, खैरा (अम्बाला)
28. आर्य समाज, दौलतपुर (अम्बाला)
29. आर्य समाज, गुगलों (अम्बाला)
30. आर्य समाज, दादुपुर (अम्बाला)
31. आर्य समाज, जयघर (अम्बाला)
32. आर्य समाज, किशनपुरा (अम्बाला)
33. आर्य समाज, खिजरापुर (अम्बाला)
34. आर्य समाज, पोन्ठा (अम्बाला)
35. आर्य समाज, माजरा (अम्बाला)
36. आर्य समाज, कोलर (अम्बाला)
37. आर्य समाज, रसूलपुर (अम्बाला)
38. आर्य समाज, लाहड़पुर (अम्बाला) दो बार
39. आर्य समाज, कोटाहा (अम्बाला)
40. आर्य समाज, कठुआ (जम्मू) दो बार
41. आर्य समाज, साम्बा (जम्मू)
42. आर्य समाज, दौलतपुर (अम्बाला)
43. आर्य समाज, (अम्बाला छावनी) दो बार
44. आर्य समाज, कक्कड़ माजरा (अम्बाला)
49. आर्य समाज, जुलाना मण्डी (जीन्द)
46. आर्य समाज, करालमाजरा (अम्बाला)
47. आर्य समाज, बिछड़ी (अम्बाला)
48. आर्य समाज, ढावा (अम्बाला)
49. आर्य समाज, सलोला (अम्बाला)
50. आर्य समाज, जाजनपुर (अम्बाला)
51. आर्य समाज, रुखा (अम्बाला)
52. आर्य समाज, छछरौली (अम्बाला)
53. आर्य समाज, गढ़ी कोटाहा दो बार

54. आर्य समाज, रायपुरानी (अम्बाला)
55. आर्य समाज, प्यारेवाला (अम्बाला)
56. आर्य समाज, कोड़ी (अम्वाला)
57. आर्य समाज, डेरा (अम्वाला)
58. आर्य समाज, रोलाहोड़ी (अम्बाला)
59. आर्य समाज, कोटड़ा (अम्बाला)
60. आर्य समाज, दादुपुर जटां (अम्बाला)
61. आर्य समाज, गुगलो (दुबारा)
62. आर्य समाज, दौलतपुर (अम्वाला)
63. आर्य समाज, समगोली (अम्वाला)
64. आर्य समाज, कोट (अम्वाला)
65. आर्य समाज, नन्हेड़ा (दुवारा)
66. आर्य समाज, डेहर (अम्वाला)
67. आर्य समाज, वेर खेड़ी (अम्वाला)
68. आर्य समाज, बुर्ज (अम्वाला)
69. आर्य समाज, भागसी (अम्वाला)
70. आर्य समाज, नन्योला (अम्बाला)
71. आर्य समाज, उदयपुर (अम्वाला)
72. आर्य समाज, मल्लौर (अम्वाला)
73. आर्य समाज, वतौड़ (अम्वाला)
74. आर्य समाज, रामपुर सेनियान (अम्बाला)
75. आर्य समाज, धनौर (दुबारा)
76. आर्य समाज, अलाहर (अम्बाला)
77. आर्य समाज, ऊंचा समाना (करनाल)
78. आर्य समाज, कैत (करनाल)
79. आर्य समाज, शाहपुर (करनाल)
80. आर्य समाज, बुआना लाकू (करनाल)
81. आर्य समाज, मुडलाना (करनाल)
82. आर्य समाज, न्योरथा (करनाल)
83. आर्य समाज, डाहर (करनाल)
84. आर्य समाज, मढाना (करनाल)
85. आर्य समाज, बिन्झोल (करनाल)
86. आर्य समाज, कारद (करनाल)

87. आर्य समाज, प्रेढाना (करनाल)
88. आर्य समाज, माऊपुर (करनाल)
89. आर्य समाज, जौनधन (करनाल)
90. आर्य समाज, मतलोडा (करनाल)
91. आर्य समाज, मण्डी (करनाल)
92. आर्य समाज, पलड़ी (करनाल)
93. आर्य समाज चमराड़ा (करनाल)
94. आर्य समाज, माडल टाऊन, पानीपत
95. आर्य समाज, पाढ़ा (करनाल)
96. आर्य समाज, तरावड़ी (करनाल)
97. आर्य समाज, कुडलन (करनाल)
98. आर्य समाज, बाम्बरेहड़ी (करनाल)
99. आर्य समाज, बालपवाना (करनाल)
100, आर्य समाज, दयालपुरा (करनाल)
101, आर्य समाज, धोबी मोहल्ला (करनाल)
102, आर्य समाज, माडल टाऊन पानीपत
103. आर्य समाज, कुंजपुरा (करनाल)
104. आर्य समाज, खरकाली (करनाल)
105. आर्य समाज, दिल्ली माजरा (करनाल)
106. आर्य समाज, छछरौली (अम्बाला)
107. आर्य समाज, रामसरण माजरा (करनाल)
108. श्रद्धानन्द अनाथालय, (करनाल)
109. आर्य समाज, फूंसगढ़ (करनाल)
110. आर्य समाज, फतेहाबाद (हिसार)
111. आर्य समाज, कोसट मोहल्ला (करनाल)
112. आर्य समाज, होली मोहल्ला (करनाल)
113. आर्य समाज, हांसी (हिसार)
114. आर्य समाज, गढ़ी (हिसार)
115. आर्य समाज, सोरखी
116. आर्य समाज, मदनहेड़ी
117. आर्य समाज, सिंघुआ
118. आर्य समाज, सामन
119. आर्य समाज, पुठी

120. आर्य समाज, बराड़ा हेड़ी
121. आर्य समाज, भराण
122. आर्य समाज, अजायब
123. आर्य समाज, बड़ेसरा
124. आर्य समाज, खरखड़ा
125. आर्य समाज, जमालपुर
126. आर्य समाज, थुराणा
127. आर्य समाज, मोठ
128. आर्य समाज, पाली
129. आर्य समाज, तालु
130. आर्य समाज, दादुपुर
131. आर्य समाज, मिचपुर
132. आर्य [समाज, गुलकनी (रोहतक)
133. आर्य समाज, खाण्जाखेड़ी (रोहतक)
134. आर्य समाज, खरखड़ी
135. आर्य समाज, लेघा
136. आर्य समाज, भगवतीपुर
137. आर्य समाज, खरकड़ा, (दुबारा)
138. आर्य समाज, निडाना
139. आर्य समाज, टिटोली
140. आर्य समाज, भाली आनन्दपुर
141. आर्य समाज, शेखूपुरा
142. आर्य समाज, डाणी माहु
143. आर्य समाज, देवराला
144. आर्य समाज, माडल टाउन, हिसार
145. आर्य समाज, धुरेश
146. आर्य समाज, ढानी गोपाल
147. आर्य समाज, सिसारा
148. आर्य समाज, मसूदपुर
149. आर्य समाज, लालपुर
150. आर्य समाज, बड़ाला

151. आर्य समाज, सुरजन भैणी
152. आर्य समाज, सामाण
153. आर्य समाज, सिंधवा
154. आर्य समाज, भिवानी
155. आर्य समाज, भम्भेवा
156. आर्य समाज, पौली
157. आर्य समाज, जुलाना
158. आर्य समाज, टिटोली (दुबारा)
159. आर्य समाज, मदीना
160. आर्य समाज, पपोसा (भवानी)
161. आर्य समाज, भाटौल
162. आर्य समाज, खरखड़ा
163. आर्य समाज, बड़ेसरा (दुबारा)
164. आर्य समाज, गुलकनी (दुबारा)
165. आर्य समाज, नागौरी गेट (हिसार)
166. आर्य समाज, नई मंडी (हिसार)
167. आर्य समाज, टोहाना
168. आर्य समाज, रत्तर खेड़ा
169. आर्य समाज, कन्हड़िया
170. आर्य समाज, सिसर
171. आर्य समाज, प्रधाना मोहल्ला (रोहतक)
172. आर्य समाज, हांसी (दुबारा)
173. आर्य समाज, माडल टाउन (हिसार)
174. आर्य समाज, कठुआ (तीसरी बार)

अप्रैल, 1978 से मार्च, 1979 तक निम्नलिखित जलसे हुए—

1. आर्य समाज, प्रधाना मोहल्ला (रोहतक)
2. आर्य समाज, फूंसगढ़ (करनाल)
3. आर्य समाज, मूनक (करनाल)
4. आर्य समाज, दादपुर (करनाल)
5. आर्य समाज, मह दीनपुर (करनाल)
6. आर्य समाज, मिर्जापुर (कुरुक्षेत्र)
7. आर्य समाज, धनौर (सोनीपत(
8. आर्य समाज, लाजपतनगर, सोनीपत
9. आर्य समाज, लठियाणी (हिमाचल प्रदेश)
10. आर्य समाज, गजलाना, (कुरुक्षेत्र)
11. आर्य समाज, शान्तिनगर, सोनीपत
12. आर्य समाज, नारायणगढ़ (अम्बाला)
13. आर्य समाज, करनाल रोड, कैथल
14. आर्य समाज, खेड़ीनरु, करनाल
15. आर्य समाज, डी. ए. वी. कालेज, (अम्बाला)
16. आर्य समाज, रेलवे रोड, (अम्बाला)
17. आर्य समाज, माडल टाउन, अम्बाला
18. आर्य समाज, दिल्ली माजरा (अम्बाला)
19. आर्य समाज, रामशरण माजरा
20. आर्य समाज, माडल टाऊन, गुड़गांव
21. आर्य समाज, तला कोट (रोहतक)
22. श्रद्धानन्द अनाथालय, करनाल
23. आर्य समाज, खाण्डाखेड़ी (रोहतक)
24. आर्य समाज, थुराणा (हिसार)
25. आर्य समाज, हांसी (हिसार)
26. आर्य समाज, छछरोली (अम्बाला)
27. आर्य समाज, दयालपुरा, करनाल
28. आर्य समाज, नया बाजार भिवानी

29. आर्य समाज, पटेलनगर, पानीपत
30. आर्य समाज, सीवन (कुरुक्षेत्र)
31. आर्य समाज, छोटा माडल टाउन, यमुनानगर
32. आर्य समाज, वड़ा माडल टाउन, यमुनानगर
33. डी. ए. वी. हा. सै. स्कूल, ऊना
34. आर्य समाज, इन्द्री (करनाल)
35. आर्य समाज, सेक्टर 7, चंडीगढ़
36. दयानन्द मिशन धर्मार्थ हस्पताल, करनाल
37. बाल सेवा आश्रम अनाथालय, भिवानी
38. आर्य समाज, क्योड़क गेट, कैथल
39. आर्य समाज, नूरण खेड़ा (सोनीपत)
40. आर्य समाज, बाल समन्द (हिसार)
41. आर्य समाज, कुरड़ी (हिसार)
42. आर्य समाज, झाँसी शहर (उ० प्र०)
43. आर्य समाज, कुंजपुरा (करनाल)
44. आर्य समाज, कन्या गुरुकुल लोवांकलां, वहादुरगढ़
45. आर्य समाज, टिटोली, (रोहतक)
46. आर्य समाज, पौली (जीन्द)
47. आर्य समाज, तरावड़ी (करनाल)
48. आर्य कन्या पाठशाला, मदीनां दांगी
49. आर्य समाज, मूनक (करनाल) दूसरी बार
50. आर्य समाज, रामनगर (करनाल)
51. आर्य समाज, माडल टाउन, पानीपत
52. आर्य समाज, सीवन (कुरुक्षेत्र)
53. आर्य समाज, नन्योला (अम्बाला)
54. आर्य समाज, कम्बोहपुरा (करनाल)
55. आर्य पाठशाला, मिर्जीपुर खेड़ी
56. आर्य समाज, खरखड़ा (रोहतक)
57. आर्य समाज, नीलोखेड़ी (करनाल)
58. आर्य समाज, अलाहर (कुरुक्षेत्र)
59. आर्य समाज, सुल्तानपुर (करनाल)
60. आर्य समाज, वेद मन्दिर (कुरुक्षेत्र)

इस वर्ष निम्नलिखित स्थानों पर वेद सप्ताह हुए—

1. आर्य समाज, राम नगर, करनाल
2. आर्य समाज, प्रेमनगर, करनाल
3. आर्य समाज, माडल टाउन, करनाल
4. आर्य समाज, दयालपुरा, मोहल्ला, करनाल
5. आर्य समाज, माडल टाउन, पानीपत
6. आर्य समाज, नागौरी गेट, हिसार
7. आर्य समाज, टोहाना (हिसार)
8. आर्य समाज, माडल टाउन, यमुनानगर (दुबारा)
9. आर्य समाज, पंजाबी मोहल्ला, अम्बाला छावनी
10. आर्य समाज, जुलाना मंडी (जीन्द)
11. आर्य समाज, टिटोली (रोहतक)
12. आर्य समाज, नीलोखेड़ी (करनाल)
13. आर्य समाज, कुंजपुरा (करनाल)
14. आर्य समाज, तरावड़ी (करनाल)
15. आर्य समाज, फतेहाबाद (हिसार)
16. आर्य समाज, करनाल रोड, कैथल
17. आर्य समाज, खरखड़ा, (रोहतक)
18. आर्य समाज, माडल टाउन, अम्बाला शहर
19. आर्य समाज, कठुआ (जम्मू)
20. आर्य समाज, सेक्टर 7, चंडीगढ़
21. आर्य समाज, प्रधाना मोहल्ला (रोहतक)
22. आर्य स्त्री समाज, सदर बाजार, (करनाल)
23. आर्य समाज, खाण्डाखेड़ी (हिसार)
24. आर्य समाज, कोट मोहल्ला, करनाल
25. आर्य समाज, माडल टाउन, हिसार
26. आर्य समाज, शाँतिनगर, सोनीपत
27. आर्य समाज, माडल टाउन, गुढ़गांव
28. केन्द्रीय आर्य स्त्री समाज, करनाल
29. आर्य समाज, कठुआ (दूसरी बार)
30. आर्य समाज, मा० टा० करनाल (दूसरी बार)

निम्नलिखित पाक्षिक पारिवारिक सत्संग हुए—

1. डा. गणेशदास अत्रोजा, माडल टाउन, करनाल
2. श्री आत्मप्रकाश जी ठकराल, बाँसी गेट, करनाल
3. श्री ठाकुरदास जी सचदेवा, रामनगर, करनाल
4. श्री भागमल जी ठकराल, अशोका कालोनी, करनाल
5. डा. खानचन्द जी अत्रोजा, माडल टाउन, करनाल
6. श्रीमती सत्यादेवी जी, माडल टाउन, करनाल
7. श्री केवलराम जी कुकरेजा, हाउसिंग बोर्ड कालोनी, करनाल
8. डा. लोकनाथ जी, सदर बाजार, करनाल
9. श्री मूलचन्द जी आर्य, दयालसिंह कालोनी, करनाल
10. श्री सुन्दरलाल, मंत्री, आर्य समाज, माडल टाउन, करनाल
11. श्री सत्यदेवसिंह जी, एस. पी. कुरुक्षेत्र
12. विश्वविद्यालय कैम्पस, कुरुक्षेत्र
13. आर्य समाज, सेवा सदन, वल्लभगढ़, [हरियाणा]
14. केन्द्रीय आर्य समाज, चंडीगढ़
15. आदर्श नगर, करनाल
16. श्री कुन्दनलाल जी भाटिया, करनाल
17. श्री ईश्वरसिंह जी, मंत्री, नीलोखेड़ी
18. मिढ़ा परिवार, करनाल

निम्नलिखित स्थानों पर महर्षि दयानन्द एवं लाला लाजपत राय की फिल्में दिखाई गईं और वेद प्रचार हुआ :—

1. आर्य समाज, क्योड़क गेट, कैथल (कुरुक्षेत्र)
2. आर्य समाज, करनाल रोड, कैथल (कुरुक्षेत्र)
3. आर्य समाज, सीवन (कुरुक्षेत्र)
4. आर्य समाज, टोहाना (हिसार)
5. आर्य समाज, नागौरी गेट (हिसार)
6. आर्य समाज, माडल टाउन, (हिसार)
7. आर्य समाज, रेलवे रोड, अम्बाला शहर
8. आर्य समाज, नीलोखेड़ी (करनाल)
9. आर्य समाज, बड़ा माडल टाउन, यमुनानगर

10. आर्य समाज, छोटा माडल टाउन, यमुनानगर
11. आर्य समाज, इन्द्री, जिला करनाल
12. कन्या गुरुकुल लोवां कलां, बहादुरगढ़
13. आर्य समाज, झाँसी शहर (उ. प्र.)
14. आर्य समाज, हांसी (हिसार)
15. आर्य समाज, माडल टाउन, पानीपत (करनाल)
16. आर्य समाज, तरावड़ी (करनाल)
17. आर्य समाज, मूनक (करनाल)
18. आर्य कन्या गुरुकुल पाढ़ा (करनाल)
19. आर्य समाज, नारायणगढ़ (अम्बाला)
20. आर्य समाज, छछरौली (अम्बाला)
21. दयानन्द मिशन धर्मार्थ हस्पताल, करनाल
22. आर्य समाज, बूबका (कुरुक्षेत्र

इस प्रकार उप सभा हरियाणा की ओर से पूर्ण उत्साहपू र्वक वेद प्रचार का कार्य किया गया। तीन आर्य सभाओं को जो कि स्वतंत्र हैं उनको सभा के साथ सम्बन्धित करने के बारे में निश्चय किया गया। वहां के सभासदों से इस बारे में बातचीत हो चुकी है :—

1. आर्य समाज, सीवन (कुरुक्षेत्र)
2. आर्य समाज, करनाल रोड़, कैथल
3. आर्य समाज, नीलोखेड़ी (करनाल)

कुछ महत्वपूर्ण कार्य—

1. इन समाजों के अतिरिक्त कई समाजों में वर्षों तक वेद प्रचार नहीं हुआ था। इस वर्ष उपसभा हरियाणा ने वेद प्रचार के द्वारा उन समाजों का पुनर्गठन किया जिनमें आर्य समाज धीड़ (करनाल), आर्य समाज कलसौरा (करनाल), आर्य समाज, शाहपुर (करनाल), आर्य समाज, नूरण खेड़ा (सोनीपत), आर्य समाज, फरल (कुरुक्षेत्र) सम्मिलित हैं।

2. **आर्य समाज, वेद मन्दिर, कुरुक्षेत्र**, उप सभा हरियाणा की विशेष समाज है। काफी खुली जगह है, आगे 10 दुकानें बनी हुई हैं। पिछले 4-5 सालों से उन दुकानों की हालत ठीक नहीं थी। विशेष रूप से बरसात के दिनों में दुकानों की छतों से पानी टपकता था जिससे दुकानदारों को काफी परेशानी होती थी। इस वर्ष उप-सभा हरियाणा ने उन दुकानों पर साढ़े चार हजार रुपया खर्च करके टाईलें लगवाई, पलस्तर करवाया और दुकानों के अगले भाग में रंग-रोगन करवाया। इसके साथ ही वेद मन्दिर के दोनों गेटों पर रंग-रोगन करवाया। चार दीवारी पर भी सफेदी करा

दी गई। इस वर्ष वेद मन्दिर, कुरुक्षेत्र में यज्ञशाला का निर्माण शुरू हो गया है। उपसभा प्रधान पूज्य राय साहब चौधरी प्रताप सिंह जी ने उस यज्ञशाला के निर्माण में शुरू में ही 2000 रुपये की राशि अपनी ओर से प्रदान की और उनकी प्रेरणा से यज्ञशाला के निर्माण का कार्य शुरू हुआ है। पूज्य रा० सा० चौ० प्रताप सिंह जी की यह इच्छा है कि यह कुरुक्षेत्र की भूमि धर्म भूमि कहलाती है। अतः यहां पर भी उप सभा हरियाणा का महत्वपूर्ण कार्य होना चाहिए। उनके आशीर्वाद एवं प्रेरणा से यज्ञशाला शीघ्र ही पूरी हो जायेगी। इसके निर्माण में श्री सत्यदेव जी वानप्रस्थी ने 500 रुपये की राशि प्रदान की है। इस सहयोग के लिए उपसभा उनकी आभारी है। पहले वेद मन्दिर कुरुक्षेत्र में दो कमरे थे। इस वर्ष तीसरा कमरा बनकर भी तैयार हो चुका है जिसमें खिड़कियां, पलस्तर, रंग-रोगन, सफेदी आदि सभी कार्य पूरा हो चुका है और पंखे भी लग चुके हैं। इस कमरे के निर्माण का सारा श्रेय आदरणीय श्री धर्मवीर जी सभ्रवाल को है जो कि दिन-रात आर्य समाज की उन्नति के बारे में सोचते रहतें हैं। उप सभा प्रधान आदरणीय राय साहब चौ० प्रताप सिंह जी की इच्छा है कि वेद मन्दिर कुरुक्षेत्र में हाल निर्माण का कार्य भी शीघ्र ही होना चाहिए। हम शीघ्र ही 2-3 दिन का समय निकाल कर कुरुक्षेत्र जाने का निश्चय कर रहे हैं जिससे कि यज्ञशाला के लिए और भी धनराशि इकट्ठी हो जाये और हाल का कार्य भी शुरू हो जाये।

3. इस वर्ष उपसभा हरियाणा की ओर से **दयानन्द मिशन धर्मार्थ हस्पताल, करनाल** का वार्षिकोत्सव बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। इस उत्सव का उपसभा, हरियाणा के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान है। इतनी अच्छी उपस्थिति और करनाल की जनता में इतना उत्साह अनेकों वर्षों के बाद देखा गया है। यह हस्पताल जहां गरीबों के लिए सेवा का बहुत बड़ा केन्द्र है वहां इसके माध्यम से आर्य समाज का भी बहुत ज्यादा प्रचार हो रहा है। कई स्थानों पर जहां पर दयानन्द मिशन धर्मार्थ हस्पताल, करनाल की ओर से आंखों के निःशुल्क आपरेशन कैम्प लगते हैं वहां पर कैम्प के साथ ही उप सभा हरियाणा की ओर से वेद प्रचार का कार्य भी किया जाता है। दयानन्द मिशन धर्मार्थ हस्पताल के उत्सव में जिला करनाल के निवासियों एवं कस्बों की समाजों से हजारों की संख्या में स्त्री-पुरुषों ने भाग लिया। हरियाणा के उद्योग मंत्री डा० मंगलसेन जी पधारे। इसके साथ पूज्य अमर स्वामी जी महाराज, स्वामी ईश्वरानन्द जा महाराज, पूज्य पं० त्रिलोक चन्द्र जी शास्त्री, प्रिं० के० डी० शर्मा, डी० ए० वी० कालेज, सढ़ौरा पधारे। प्रिं० के० डी० शर्मा ने उपसभा हरियाणा को वेद प्रचार के कार्य में अपने प्रवचनों द्वारा बहुत सहयोग दिया।

वेद प्रचार

गत वर्ष उपसभा हरियाणा की ओर से 66 स्थानों पर वेद प्रचार हुआ। किन्तु इस वर्ष 175 स्थानों पर वेद प्रचार हुआ। इसी प्रकार गत वर्ष 52 उत्सव हुए जबकि इस वर्ष 60 उत्सव हुए। गत वर्ष 23 स्थानों पर वेद सप्ताह के कार्यक्रम हुए जबकि इस वर्ष 30 स्थानों पर वेद सप्ताह हुए। पिछले साल 13 स्थानों पर महर्षि दयानन्द की फिल्में दिखाई गई जबकि इस वर्ष 22 स्थानों पर फिल्में दिखाई गई। इस वर्ष उपसभा हरियाणा की ओर से विशेष कार्यक्रम के रूप में पाक्षिक पारिवारिक सत्संग हुए।

उप सभा हरियाणा में वेद प्रचार के कार्य में आदरणीय प्रि. एन. डी. ग्रोवर, हिसार एवं प्रि. पी. के. बंसल नन्योला ने विशेष सहयोग दिया। प्रि. ग्रोवर जी को जब भी उपसभा की ओर से आर्थिक सहयोग की प्रार्थना की गई उन्होंने यथा-योग्य मदद की। उप सभा हरियाणा वेद प्रचार के कार्य में पूज्य प्रि. एन. डी. ग्रोवर की सदा आभारी रहेगी। इसके साथ आदरणीय प्रि. पी. के. बंसल ने भी पांच दिन तक उप सभा की भजनमण्डली के द्वारा डी० ए० वी० कालेज नन्योला तथा नन्योला गांव में एवं आसपास के गांव में भी वेद प्रचार कराया। और उन्होंने डी० ए० वी० कालेज नन्योला (अम्बाला) में इस वर्ष आर्य समाज की स्थापना की। उस समाज का नियमानुसार दशांश आदि भी सभा को भेजा गया है। आदरणीय प्रि० बंसल अपनी ओर से वेद प्रचार के कार्य में यथायोग्य प्रयत्नशील रहते हैं। इसके साथ ही आदरणीय रमेश चन्द्र जी कपिला हेडमास्टर डी० ए० वी० हाई स्कूल अम्बाला छावनी ने भी इस वर्ष उप सभा को पूरा सहयोग दिया। वे सभा के बहुत शुभचिन्तक हैं। इसके साथ हरियाणा के अन्य डी० ए० वी० संस्थाओं के प्रिंसिपलों ने सहयोग देने का प्रयास किया। हम उनके भी आभारी हैं।

अवैतनिक विद्वानों में उपसभा हरियाणा को पूज्य आचार्य सत्यप्रिय जी दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय, हिसार, प्रो० राम विचार जी एम० ए० डी० एन० कालेज, हिसार, प्रो० शंकर सिंह जी वेदालंकार डी० ए० वी० कालेज, साढौरा, प्रो० वेद प्रकाश जी वेदालंकार डी० ए० वी० कालेज, अम्बाला, प्रो० राजेन्द्र जी जिज्ञासु डी० ए० वी० कालेज, अबोहर, पूज्य पं० शान्ति प्रकाश जी महारथी, गुड़गांव, एवं पूज्य पं० त्रिलोक चन्द्र जी शास्त्री, उपसभा पंजाब आदि इन सभी विद्वानों का पूर्ण सहयोग उपसभा को मिलता रहा।

नशाबन्दी अभियान

उपसभा हरियाणा के प्रधान पूज्य रा० सा० चौ० प्रतापसिंह जी ने इस वर्ष नशाबन्दी अभियान पर विशेष जोर दिया। उपसभा प्रधान राय साहब जी के आशीर्वाद एवं आदेश से हम सभी उप सभा हरियाणा की ओर से नशाबन्दी के अभियान में पूरा कार्य करते रहे। उप सभा मंत्री डा० गणेशदास जी बतौर डाक्टर के शराब आदि वस्तुओं की बुराइयों के बारे में जलसों में अपने विचार देते रहे और प्रो० वेद सुमन जी ने भी वेद शास्त्रीय ढंग से जलसों में जगह जगह पर नशाबन्दी के बारे में अपने विचार प्रकट किए। और हमारी भजन मण्डलियां भी नशाबन्दी के बारे में भजनों के द्वारा सुन्दर कार्यक्रम जनता के सामने रखती रहीं। हमने प्रत्येक जलसे में नशाबन्दी सम्मेलन का आयोजन अवश्य किया और प्रस्ताव पास करके सरकार तक पहुंचाने का प्रयास किया है।

हमारा विचार है कि इस वर्ष हम पिछले वर्ष की बजाय बेहतर वेद प्रचार का कार्य कर पाए हैं किन्तु फिर भी हम महसूस करते हैं कि जितना बड़ा कार्य क्षेत्र है उसके अनुसार और भी ज्यादा वेद प्रचार का कार्य होना चाहिए। इस समय आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा के साथ देहात एवं शहरों को मिला कर लगभग 250 समाजें हैं। अन्त में राय साहब चौ० प्रताप सिंह जी एवं सभा प्रधान पूज्य डा० सूरजभान जी का भी दिल से आभारी हूं। आप दोनों ने उपसभा हरियाणा के वेद प्रचार कार्य में अपना पूरा आशीर्वाद और सहयोग दिया। और हमने जब भी आपको किसी कार्यक्रम पर याद किया आपने उस कार्यक्रम में उपस्थित होकर हम सबको आशीर्वाद और सहयोग दिया। आप समयानुसार केन्द्र की ओर से उपसभा हरियाणा को उपदेशक एवं भजनोपदेशक के रूप में भी सहयोग देते रहे हैं। अतः हम आपके दिल से आभारी हैं।

—डा० गणेशदास आर्य मंत्री

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा कांगड़ा का संक्षिप्त वार्षिक विवरण

हिमाचल प्रदेश की आर्य जनता में जागृति लाने के लिए इस वर्ष हिमाचल उप सभा पर्याप्त रूप से सक्रिय रही। प्रदेश की लगभग सभी आर्य समाजें क्रियाशून्य सी पड़ी हुई थीं। उपसभा का गठन करते हुए सभा के प्रधान श्रद्धेय लाला सूरजभान जी ने नव जागृति का दायित्व प्राचार्य श्री रमेश चन्द्र जीवन तथा श्री अमृतलाल पुरी को क्रमशः मंत्री और प्रधान बना कर सौंपा।

प्रदेश में बहुत से आर्य समाजों के वार्षिक उत्सव हुए कई-कई वर्ष हो चुके थे। वेद प्रचार का कार्य भी लगभग समाप्त ही था। वैदिक विचार धारा को सुचारू

रूप देने के लिए सभा कार्यालय की ओर से सभी समाजों को अपने सत्संगों को सम्यक रूप से चलाने का निवेदन किया गया। एतदर्थ हर प्रकार के सहयोग का आश्वासन भी दिया गया।

आर्य समाज कांगड़ा का वार्षिक उत्सव और प्रचार गतिविधियां

आर्य समाज कांगड़ा का वार्षिक उत्सव लगभग 18 वर्षों से नहीं मनाया गया था। इस वर्ष 29, 30 सितम्बर और 2 अक्तूबर को बड़ी धूम धाम से मनाया गया जिसमें प्रान्त के दूर-दूर के समाजों ने भाग लिया। इस अवसर पर एक आर्य विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता श्री अमृतलाल पुरी (उप सभा प्रधान) ने की। इसमें पालमपुर, धर्मशाला, मण्डी, नूरपुर, भाली आदि स्थानों से आये हुए प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस गोष्ठी में सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया कि सभा को हिमाचल में एक उपदेशक नियुक्त करने का निवेदन किया जाये। मुख्य सभा ने उप सभा की प्रार्थना को स्वीकार कर के पं० श्याम नारायण जी को नियुक्त किया जिसके लिए उप सभा, मुख्य सभा की कृतज्ञ है।

वार्षिक उत्सव में भाग लेने वाले सम्मानित सदस्यों के नाम :—

1. प्रो० वेद प्रकाश मलहोत्रा
2. प्रो० डी० डी० शर्मा
3. पं० त्रिलोक चन्द शास्त्री
4. पं० खुशी राम
5. पं० मेला राम
6. पं० मदन मोहन
7. एम० पी० दुर्गा चन्द
8. बहन सरोजनी दास

उत्सव के अतिरिक्त कांगड़ा में इस वर्ष तथा गत वर्ष को मिला कर चार बार वेद प्रचार सप्ताह मनाया गया। शिवरात्रि, लोड़ी, दीपावली और होली के पर्व भी विशेष उत्साह के साथ मनाये गये।

प्राचार्य श्री रमेश चन्द्र जीवन ने प्रान्त के विभिन्न समाजों में जाकर अपने प्रेरक विचारों से वैदिक विचारों का प्रचार किया। आप का नगरोटा के वार्षिक उत्सव पर और मण्डी में शिवरात्रि के उत्सव पर वहां जाना विशेष उल्लेखनीय है।

पं० श्याम नारायण जी की प्रचार गतिविधियाँ

हिमाचल प्रदेश में पं० श्याम नारायण जी का कार्य सराहनीय है। उन्होंने यहां उपदेशक, भजनोपदेशक, पुरोहित आदि के अनेक कार्यों से यहां की जनता को लाभान्वित किया।

पण्डित जी कांगड़ा में आने के पश्चात् सर्वप्रथम धर्मशाला भेजे गये। वहां उन्होंने वेद प्रचार का कार्य, यज्ञ, हवन, पारिवारिक सत्संग आदि कराया। इसके बाद पण्डित जी को पालमपुर आर्य समाज में भेजा गया, वहां पर उन्होंने उपदेश, भजन आदि से प्रचार कार्य किया। इसके बाद पण्डित जी नगरोटा वगुवां गये। जहां आर्य समाज के वार्षिक उत्सव में सहयोगी बने। इसी प्रकार पण्डित जी मण्डी, नूरपुर और हमीरपुर भी गये।

हिमाचल की उप सभा के कुछ सम्मानित सदस्यों के नाम इस प्रकार हैं :—

1. श्री रमेश चन्द्र जी जीवन — कांगड़ा
2. श्री मुरारीलाल जी आर्य — मण्डी
3. श्री दीनानाथ जी वैद्य — ''
4. श्री मियां राम जी — ''
5. श्री राज्यपाल जी — कांगड़ा
6. श्री कस्तूरीलाल — जोगिन्दर नगर
7. श्री गुरुदयाल सिंह — ''
8. श्री लाला गुदत्त — धर्मशाला
9. श्री सत्पाल एडवोकेट — नूरपुर
10. प्राचार्य श्री शान्ति स्वरूप — ऊना
11. श्री मंगतराम, एडवोकेट — हमीरपुर
12. डा० रमेश्वर — ''
13. श्रीमती सरोजनी दास — धर्मशाला

कुछ सम्बन्धित आर्य समाजें

आर्य समाज, कांगड़ा

कांगड़ा आर्य समाज का वार्षिकोत्सव जो 29 सितम्बर से पहली अक्तूबर, 1978 तक धूमधाम से मनाया गया था उसके आमदन खर्च का व्योरा पिछले दिनों 12-12-78 को अन्तरंग सदस्यों के समक्ष प्रस्तुत किया गया तथा सभी ने सर्वसम्मति से इसे स्वीकार कर लिया तथा अधिकारियों की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की।

	रु० पै०
कुल एकत्रित धनराशि	1803.25
खर्च	1607.60
बकाया	195.65

फरवरी मास में ऋषिबोध (शिवरात्रि) उत्सव को मनाने हेतु भिन्न-भिन्न प्रकार के कार्यक्रमों के आयोजन की रूपरेखा तैयार की गई है जिसमें डी० ए० वी० कालेजों की वाद-विदाद प्रतियोगिता भी होगी जिसके लिए चलविजयोपहार एक स्थानीय महानुभाव श्री देवी चन्द जी चौपड़ा ने देना स्वीकार किया है। मैं उनका धन्यवादी हूं।

युगल किशोर, मंत्री

आर्य समाज, अम्बाला नगर

इस वर्ष के पदाधिकारियों ने जब से कार्यभार संभाला है उन्होंने समाज के कार्यों में दक्षता, सक्रियता तथा अपूर्व रुचि का परिचय दिया है।

1. हमारे दैनिक कार्यक्रम में संध्या के अतिरिक्त दैनिक यज्ञ को महत्व दिया जाता है। प्रातः महिलाएं तथा पुरुष ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ में सक्रिय रूप से नियमानुसार भाग लेते हैं। वेदांजलि तथा वेद मंत्रों की विस्तृत व्याख्या की जाती है।

2. प्रति शुक्रवार को दोपहर बाद स्त्रियां यज्ञ करती हैं। यज्ञ के पश्चात् सत्संग में भजन तथा वेद पाठ को महत्व दिया जाता है।

3. रविवार को सम्मिलित यज्ञ तथा सत्संग नियमानुसार होते हैं। रविवार को स्थानीय विद्वानों के अतिरिक्त बाहर के विद्वानों, उपदेशकों तथा संन्यासियों को आमंत्रित किया जाता है।

4. वर्ष भर यदा कदा इन प्राण तथा उदान के समान धर्मोपदेशकों में किसी न किसी के प्रवचन होते ही रहते हैं। अगस्त, 1978 में आचार्य वेद प्रकाशजी वानप्रस्थी तीन दिन लगातार अमृत भरे प्रवचनों से श्रोताओं को मन्त्र मुग्ध करते रहे।

5. मास सितम्बर में वेद सप्ताह सम्पन्न किया गया जिसमें अन्य धर्मोपदेशकों के अतिरिक्त, प्रिंसिपल हरिदत्तजी शास्त्री, गुरुकुल कुरुक्षेत्र जिस मनोवैज्ञानिक ढंग से वेद मंत्रों की अपूर्व दक्षता से व्याख्या करते रहे, अमृत भरे प्रवचनों की वर्षा करते रहे उनसे प्रभावित हो जनता उमड़-उमड़ कर अमृत रस में तृप्त होने के लिए ऋषि मन्दिर में दौड़ी चली आती रही।

6. इस मास वसन्त पंचमी के पर्व पर ब्रह्मचारिणी संन्यासिनी श्रीमती ज्ञान देवी के प्रभावशाली प्रवचन हुंए।

इस कार्यक्रम के अतिरिक्त सभी महत्वपूर्ण पर्वों तथा उत्सवों पर सदस्य तथा सदस्याएं सम्मिलित रूप से यज्ञ हवन तथा भजन उपदेशों में भाग लेते हैं। जन्माष्टमी व्यास पूजा, विजयदशमी, ऋषि निर्वाण दिवस, स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस, मकर संक्रान्ति, लोहड़ी, वसन्त पंचमी के पर्व भी यथोचित रीति से मनाये जाते रहे हैं। सदा की भांति शिवरात्रि ऋषि बोध उत्सव के रूप में इसी मास के अन्त में मनाया जायेगा। वार्षिक उत्सव मार्च में पूर्ण उत्साह से मनाया जा रहा है। हमारे समाज के आधीन दो संस्थाएं चल रही हैं। बालक बालिकाओं के लिए शिशु-निकेतन के रूप में श्री दयानन्द नर्सरी स्कूल। महिलाओं के लिए सिलाई-कढ़ाई कला केन्द्र। स्कूल के नन्हें मुन्नों को वेद सप्ताह, वार्षिक उत्सव तथा अन्य पर्वों पर स्टेज पर आने का अवसर दिया जाता है जिससे उन्हें अपनी कलाओं की अभिव्यक्ति करने का सुअवसर मिल सके। आत्माभिव्यक्ति से उनके अन्दर छिपी हुई, सोई हुई रुचियां जाग सकें। मास के अंतिम शनिवार को नन्हें मुन्नों को साथ बैठा कर स्कूल की अध्यापिकायें यज्ञ करती हैं।

समाज सेवा में आर्य समाज की यह शाखा कभी भी पीछे नहीं रहती। आवश्यकता पड़ने पर हमारे सदस्य तथा सदस्याएं अन्त्येष्टि क्रियायें भी सम्पन्न कराते हैं। घरों में हर्ष तथा शोक के अवसरों पर यज्ञ हवन भी सम्पन्न कराते हैं। इस प्रकार उस परम प्रभु की प्रेरणाओं के मार्ग दर्शन में यह शाखा कल्याण मार्ग पर बढ़ रही है।

आर्य समाज, माडल टाऊन, गुड़गांव

आर्य समाज, माडल टाऊन, गुड़गांव समय-समय पर वेद प्रचार का कार्य करती रहती है तथा सार्वजनिक कार्यों में भी कार्यरत रहती है।

1. समाज में 5-10-78 से 12-10-78 तक स्वामी श्रेयानन्द जी द्वारा वेद मंत्रों पर प्रवचन हुए तथा संस्कृत की कक्षाएं भी लगाई गई।

8-10-78 को तथा 11-10-78 को श्री गणेश दास जी की अध्यक्षता में स्वामी विरजानन्द जी का द्वितीय जन्म शताब्दी समारोह मनाया गया। इस अवसर पर विद्वान उपदेशकों के उपदेश हुए।

2. समाज ने अपनी संगठित शक्ति से एक प्राइमरी पाठशाला चला रखी है जिसमें लगभग 200 बच्चे शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

राम लाल मदान,
मंत्री

आर्य समाज (डी० ए० वी० कालेज), नन्योला (अम्बाला)

आर्य समाज, डी० ए० वी० कालेज, नन्योला का वार्षिकोत्सव दिनांक 13, 14 और 15 को सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। उत्सव में पण्डित श्री अमर सिंह जी, अध्यक्ष, अम्बाला मण्डल आर्य समाज एवं श्री बस्ती राम जी तथा श्री जगत राम जी के भजनोपदेश होते रहे। परिणामस्वरूप इनका जनता पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा।

इनके अतिरिक्त आर्य समाज के 23 सभासद नामजद किए गए। तद्उपरान्त डी० ए० वी कालेज, आर्य समाज, नन्योला की तरफ से गांव नन्योला, उदयपुर तथा मलौर में भी प्रचार कराया गया। सभी स्थानों पर अम्बाला मण्डली का अच्छा प्रभाव रहा।

पी० के० बंसल
प्रधान

लज्जा राम सैनी
मंत्री

आर्य समाज, माडल टाऊन, लुधियाना

1. आर्य समाज में श्री राम गोपाल जी शालवाले वानप्रस्थ व श्री वीरेन्द्र जी, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा का शुभ आगमन तथा स्वागत।
2. आर्य समाज में स्वामी रामेश्वरानन्द जी, स्वामी विज्ञानानन्द जी, वैद्य विद्या सागर जी, मंत्री, उपसभा, पंजाब, ब्रह्मचारिणी कमला जी इत्यादि महानुभावों का पदार्पण व प्रसार।
3. आर्य समाज के सब पर्व तथा उत्सव सोत्साह व श्रद्धापूर्वक मनाए गए।
4. मोही, तलवन, करतारपुर के उत्सवों में पूर्ण सहयोग दिया।
5. एक मुस्लिम परिवार की शुद्धि तथा आर्य समाज में प्रवेश।

6. आर्य समाज में 15,000 रुपये की लागत से नए हाल का निर्माण और शिवरात्रि के दिन उसका उद्घाटन ।
7. दयानन्द माडल स्कूल में डेढ़ लाख की लागत से एक ब्लाक का निर्माण ।
8. आर० एस० माडल हाई स्कूल के लिए हीरो साइकल्ज प्राईवेट लिमिटेड, लुधियाना की ओर से दिये गए अढ़ाई लाख रुपये के दान से नए भवन का निर्माण प्रारम्भ ।
9. फोकल प्वायण्ट, लुधियाना व दोराहा जिला लुधियाना में दो नई समाजों की स्थापना ।
10. किलारायपुर, पायल, दोराहा, साहनेवाल, मण्डी गोबिन्दगढ़ आर्य समाज मिलरगंज लुधियाना, किदवई नगर लुधियाना तथा आर्य समाज त्यौरासी जिला गोण्डा (उत्तर प्रदेश) व आर्य समाज पंचपुरि आदिगढ़वाल की आर्य समाजों की देखरेख व प्रवन्ध में सहायता इत्यादि ।

सत्यानन्द,
मंत्री

आर्य समाज, सेक्टर 16, चण्डीगढ़

आर्य समाज, सेक्टर 16, चण्डीगढ़ ने अपने प्रारम्भिक काल के बारह वर्ष पूर्ण कर तेरहवें वर्ष में पदार्पण किया हैं । पिछले वर्षों की भांति इसवर्ष भी आर्य समाज का कार्य प्रत्येक क्षेत्र में सुचारू रूप से चलता रहा । इस वर्ष प्रो० कृष्ण आर्य प्रधान एवं प्रो० अशोक शर्मा, मंत्री सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए । साप्ताहिक सत्संग का कार्यक्रम सफलता पूर्वक चलता रहा ।

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी वेद सप्ताह का कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ । इस अवसर पर पूज्य स्वामी ब्रह्मानन्द जी की वेद कथा हुई । श्री कृष्ण जन्माष्टमी का पर्व नवनिर्मित ईश्वरी देवी सत्संग भवन में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ । इसकी अध्यक्षता आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान डा० एम० डी० चौधरी ने की। इस अवसर पर परोपकारिणी सभा के मंत्री श्री श्रीकरण शारदा संसद् सदस्य, स्वामी ब्रह्मानन्द, श्री खुशीराम शास्त्री, प्रो० विक्रमकुमार, पं० दयाराम शास्त्री के प्रवचन हुए 1 मई से 7मई 1978 तक आर्य जगत के प्रकाण्ड विद्वान पूज्य अमर स्वामी जी की वेद कथा हुई । इस अवसर पर श्री वेदव्यास जी के मनोहर भजन हुए । इसके अतिरिक्त आर्य युवक सभा द्वारा अमर शहीद राम प्रसाद विस्मिल दिवस सफलता पूर्वक मनाया गया ।

इस वर्ष का उल्लेखनीय कार्य ईश्वरी देवी सत्संग भवन का निर्माण है। इस पर अभी तक 1,60,000 रुपये व्यय हो चुके हैं। इसमें विशेष योगदान डा० बिहारी-लाल महाजन जी का है जिनकी स्वर्गीया माता जी की मधुर स्मृति में यह हाल निर्मित हुआ है।

इस वर्ष आर्य समाज के उद्भट विद्वान श्री दयाराम शास्त्री, एम० ए० की आर्य समाज सेक्टर 16 के पुरोहित एवं वेद प्रचार अधिष्ठाता के रूप में नियुक्ति हुई है। उनके निर्देशन में आर्य समाज बहुमुखी प्रगति कर रहा है।

आर्य स्त्री समाज का कार्य श्रीमती राजरानी आहूजा प्रधाना एवं श्रीमती सावित्री चड्ढा मंत्राणी के मार्ग दर्शन में सफलता पूर्वक चलता रहा है। हर शुक्रवार को सत्संग होता है। लोहड़ी का पर्व बड़ी धूमधाम से मनाया गया।

इस वर्ष सामाजिक कार्यों में आर्य समाज सेक्टर 16 ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया। केरल में ईसाई धर्म के बढ़ते प्रचार को रोकने हेतु आर्य समाज ने 465 रुपये भेजे। स्वामी दयानन्द धर्मार्थ औषधालय करनाल को 101 रुपये भेजे गए। अमर स्वामी अभिनन्दन ग्रन्थ समिति को 101 रुपये भेजा गया। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा को 201 रुपये दशांश के रूप में तथा 101 रुपये वेद प्रचारार्थ भेजे गए। स्वामी वेदानन्द रोपड़ वालों को 266 रुपये भवन निर्माणार्थ भेजे गए। प्रसिद्ध कवि एवं वेदों के अनुवादकर्ता श्री बशीर अहमद 'मयूख' को 101 रुपये भेंट किये। 250 रुपये आन्ध्र प्रदेश के बाढ़ पीड़ितों के लिए आर्य प्रादेशिक सभा देहली को भेजे गए। इस वर्ष आर्य प्रादेशिक सभा के अधिवेशन में प्रो० कृष्ण आर्य, श्री जी० डी० जिन्दल, डा० के० के० धवन एवं प्रो० अशोक शर्मा ने भाग लिया।

इस वर्ष आर्य समाज, सेक्टर 16 को श्रीमती द्रोपदी वर्मा, श्री देसराज खंडूजा श्री कृष्णलाल वर्मा के आकस्मिक निधन पर अपार क्षति हुई।

आर्य समाज, कालेज विभाग, फिरोजपुर शहर

गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी आर्य समाज कालेज विभाग ने उत्सव-वेद प्रचार में बढ़-चढ़कर भाग लिया। इस समाज में जो भी कार्य हुए उनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

13-1-78 को आर्य समाज के विशाल प्राँगण में लोहड़ी का पवित्र उत्सव बड़े धूमधाम से मनाया गया जिसमें आर्य कुमार सभा के बालकों तथा बालिकाओं, डी० ए० वी० माडल स्कूल के छात्रों ने विशेष रूप से भाग लिया। अन्त में बच्चों को पुरस्कार भी वितरित किए गये।

7-3-78 को शिवरात्रि का महान पर्व भी आर्य समाज के विशाल हाल में मनाया गया । प्रसिद्ध उद्योगपति श्री रविदत्त तथा उनकी धर्मपत्नी ने यजमान पद को सुशोभित किया । डी० ए० वी० माडल स्कूल के बच्चों ने भी अपना कार्यक्रम प्रस्तुत किया । महाशय मदनजित् तथा पुरोहित रामकृष्ण शर्मा ने शिवरात्रि उत्सव पर अपने विचार प्रस्तुत किये । 2, 3 और 4 जून, 1978 को इस समाज ने अपने 78 वें वार्षिकोत्सव को बड़े उत्साह पूर्वक मनाया जिसमें 25-5-78 को पूज्य अमर स्वामी जी महाराज की कथा होती रही । आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा के सुयोग्य उपदेशकों तथा भजनीकों ने इस उत्सव की शोभा को चार चांद लगा दिये । इनके अतिरिक्त डी० ए० वी० कालेज, नकोदर के प्रिंसीपल श्रीए०एन०शर्मा, वैद्य विद्यासागर इत्यादि महानुभावों ने भी उत्सव में भाग लिया । इस उत्सव पर समाज के प्रधान पं० ब्रह्मदत्त शर्मा ने वैद्य विद्यासागर जी को वेद प्रचारार्थ एक हजार रुपये की थैली भेंट की 25-5-78 से 4-6-78 तक समाज की यज्ञशाला में वेद पारायण यज्ञ पुरोहित रामकृष्ण शर्मा ने कराया जिसकी पूर्ण आहुति 4-6-78 को हुई ।

25-6-78 को आर्य समाज के अधिकारियों का चुनाव हुआ । विशेषता यह रही कि चुनाव सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ । श्री जीवनसिंह वेदी इस सभा के अध्यक्ष बने जिनमें मुख्य रूप से श्री जगदीश चन्द्र आहूजा, प्रधान तथा पं० ब्रह्मदत्त शर्मा मंत्री चुने गये ।

31-9-78 को ऋषि निर्वाण दिवस आर्य समाज के विशाल प्रांगण में मनाया गया । यज्ञोपरान्त हैपी वाल वाडी माडल स्कूल, डी० ए० वी० माडल स्कूल के बच्चों ने विशेष कार्यक्रम प्रस्तुत किये । पं० रघुवीर शरण शास्त्री, पं० रामकृष्ण शर्मा, महाशय मदनजित् जी ने ऋषि को अपनी श्रद्धाँजलियां अर्पित कीं ।

23-12-1978 को स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस दोनों समाजों-आर्यसमाजों कालिज विभाग तथा आर्य समाज, गुरुकुल विभाग की ओर से आर्य समाज गुरुकुल विभाग में मनाया गया जिसमें यज्ञ के उपरान्त श्री हवनलाल मेहता,पुरोहित रामकृष्ण शर्मा, पं० रघुवीर शरण शास्त्री ने स्वामी जी को अपनी श्रद्धांजलियां अर्पित कीं ।

गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी प्रचार कार्य को देखते हुए पुरोहित रामकिशन शर्मा हिन्दू गर्ल्ज हायर सेकेण्डरी स्कूल में प्रत्येक शनिवार को यज्ञ कराते रहे तथा एच० एम० हायर सेकेण्डरी स्कूल में भी नियमित धर्म शिक्षा देते रहे ।

ब्रह्मदत्त शर्मा
मंत्री

आर्य समाज खन्ना

यह समाज जी० टी० रोड. खन्ना पर स्थित है। इनके कार्य कर्ता इस प्रकार हैं :—

प्रधान	चौधरी हरिदेव
उप प्रधान	श्री मदन गोपाल मलहोत्रा
मंत्री	श्री बलवन्त राय खट्टर

हर रविवार को सत्संग प्रातः 8-30 बजे से 10-30 बजे तक होता है। ऋषि निर्वाण उत्सव और बोध उत्सव बड़ी लगन और उत्साह के साथ मनाया गया जिसमें नगर के निवासियों के साथ हिन्दी पुत्री पाठशाला की अध्यापिकाओं तथा छात्राओं ने भाग लिया।

स्वामी दयानन्द फ्री डिस्पेन्सरी चल रही है जिसमें लगभग 1000 रोगी प्रति मास लाभ उठा रहे हैं।

अभी आर्य समाज में चार दुकानें डाली गयी हैं जिसका किराया रोगियों की सेवा में लगायेंगे।

आर्य समाज खन्ना की देखरेख में हिन्दी पुत्री पाठशाला हायर स्कूल चल रहा है जिसमें लगभग 1500 बच्चे शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

आर्य समाज, अलावलपुर (जालन्धर)

आर्य समाज. अलावलपुर का चुनाव दिनाँक 21-1-1979 को आर्य समाज मन्दिर में सर्वसम्मति से सम्पन्व हुआ जिसमें निम्न महानुभाव चुने गए :—

श्री कृष्ण शरण गुप्ता	प्रधान
श्री चेतराम कक्कड़	उप प्रधान
श्री गुलदेव कटोच	मंत्री
श्री रमेश कुमार गुप्ता	उपमंत्री
श्री रविदत्त गुप्ता	कोषाध्यक्ष
श्री महाशय चन्द्र गुप्ता जी	पुस्तकालयाध्यक्ष
श्री सुखदेव शास्त्री	पुरोहित
श्री अनिल भनोट	सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष

साप्ताहिक सत्संग के अतिरिक्त बसन्त का त्योहार धूमधाम से सम्पन्न हुआ। 1-2-79 को यज्ञ के उपरान्त बच्चों का प्रभावशाली कार्यक्रम हुआ और बच्चों को इनाम भी दिए गए। प्रातः प्रभातफेरी भी निकाली गई।

आर्य समाज सदर बाजार (कालिज विभाग) फिरोजपुर छावनी

स्वर्गीय राय साहिब मथुरादास जी इंजीनियर एम० इ० एस० की प्रेरणा से महर्षि दयानन्द जी सरस्वती का शुभ आगमन फिरोजपुर की धरती को पावन करने हेतु सन् 1877 में हुआ। जब महर्षि जी ने आर्य समाज, आर्य अनाथालय तथा आर्य पुत्री पाठशाला की स्थापना अपने कर कमलों द्वारा की तब राय साहब मथुरा दास जी तथा अन्य महानुभावों ने पूर्ण सहयोग देकर समाज की उन्नति में हाथ बटाया।

इस समाज का शताब्दी समारोह भी सन् 1977 में बड़ी धूमधाम से मनाया गया। श्री रामचन्द्र जी आर्य, श्री बी० एल० भाटिया तथा अन्य गणमान्य आर्य सज्जनों के सहयोग से नगर कीर्तन निकाला गया। इस कार्य में आर्य प्रादेशिक सभा दिल्ली तथा आर्य प्रादेशिक उपसभा पंजाब के लगभग सभी अधिकारी वर्गों का सहयोग भी सम्मिलित था। इस शुभ अवसर पर आर्य समाज के नेता एवं प्रादेशिक सभा के प्रधान श्री सूरजभान जी भी पधारे थे। इस समारोह का लगभग सभी आर्य क्षेत्र के समाचार पत्रों में विशाल रूप से विवरण आया था।

अब यह समाज श्री रामचन्द्र जी आर्य तथा श्री बी० एल० भाटिया की अध्यक्षता में वेद प्रचार का कार्यक्रम इस मन्दिर में सुचारू रूप से चल रहा है। सभी आर्य पर्व समय-समय पर बड़ी धूमधाम से मनाए जाते हैं। शिवरात्रि का पर्व इस वर्ष भी विशेष तौर पर बड़ी धूमधाम से मनाया गया। जिसमें हजारों की संख्या में सभी आर्य समाज की संस्थाओं ने भाग लिया। उसी दिन सभी पधारे आर्य परिवारों का प्रीति भोज भी हुआ। लगभग 6:0 लोगों ने सम्मिलित रूप से भोजन किया।

स्थापना दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इसमें सहस्रों लोगों ने भाग लिया। समाज का विशाल आंगन भीड़ से भरा हुआ था।

साप्ताहिक सत्संग सुचारू रूप से निरन्तर चल रहा है। स्थानीय समाजों के गणमान्य व्यक्तियों का पूर्ण सहयोग प्राप्त है जिनमें सर्वश्री कमल नारायण जी शास्त्री, श्री द्वारकानाथ जी, श्री धर्मपाल जी के नाम विशेषतः उल्लेखनीय हैं क्योंकि यह सज्जन अपना बहुत सा अमूल्य समय समाज को सुचारू रूप से चलाने के लिए सहर्ष दे रहे हैं।

बी० एल० भाटिया,
मंत्री

आर्य समाज (कालिज विभाग) फाजिल्का

श्री सरदारीलाल झांब — प्रधान
श्री मूलचन्द वर्मा — मंत्री
श्री ओमप्रकाश झांब — कोषाध्यक्ष

1978 वर्ष में आर्य समाज, फाजिल्का जिला फीरोजपुर ने भिन्न-भिन्न परिवारों में लगभग 100 से अधिक संस्कार कराये और मास सितम्बर, 1978 में 10 दिनों तक प्रचार कार्य चलता रहा जिसमें प्रतिष्ठित विद्वानों के उपदेश हुए और जनता में आर्य समाज का प्रचार और प्रसार हुआ। इस वर्ष आर्य समाज ने एक विद्वान पुरोहित की नियुक्ति कर ली है जो कि आर्य वीरदल की स्थापना करके प्रगति के पथ पर अग्रसर है। शिवरात्रि एवं ऋषि निर्वाण-दिवस वहुत ही उत्साहपूर्वक मनाये गये। इन अवसरों पर भाषण प्रतियोगिता के कार्यक्रम वहुत ज्यादा उत्साहवर्द्धक थे।

आर्य समाज, माडल टाऊन, जालंधर

आर्य समाज, माडल टाऊन, जालंधर आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की एक प्रमुख समाज है। इसकी रजिस्ट्री सभा के नाम पर है। यह 6 कैनाल के विशाल क्षेत्र में स्थित है। आर्य समाज का अपना विशाल भवन है जिसमें हाल, यज्ञशाला और क्रीड़ा क्षेत्र दर्शनीय हैं। इसी भवन में दयानन्द माडल स्कूल की कक्षाएं भी लगती हैं। विवाह इत्यादि के लिए हाल जनता को उपलब्ध कराया जाता है। आर्य समाज मंदिर के क्षेत्र में सात दुकानें भी वना दी गई हैं। अब इनमें निःशुल्क होम्योपैथिक डिस्पैंसरी चालू की गई है। इसका सारा व्यय आर्य समाज, माडल टाऊन कर रही है। यहाँ आर्य स्त्री समाज भी वड़ी क्रियाशील हैं और अपने सत्संग इत्यादि करती रहती है। आर्य समाज, माडल टाऊन दैनिक और साप्ताहिक सत्संगों के अतिरिक्त प्रति रविवार शाम को पारिवारिक सत्संग का आयोजन भी किसी न किसी आर्य घर में जाकर करती है। इसके संस्थापकों में वख्शी शेरसिंह, प्रिंसिपल ज्ञानचंद भाटिया, महात्मा गोपीचंद वानप्रस्थ, कैप्टन शिवराम ओबेराय, लाला मेलाराम के नाम प्रमुख हैं। आजकल इसके प्रधान श्री प्रेमरत्न सूद हैं और मंत्री प्रोफेसर वेदप्रकाश मल्होत्रा हैं। आर्य समाज, माडल टाऊन, जालंधर उत्तरोत्तर उन्नति कर रहा है।

आर्य समाज, सेक्टर 7-बी, चंडीगढ़

आर्य समाज, सेक्टर 7, चंडीगढ़ प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा से सम्बन्धित आर्य समाजों में से एक है। इसकी सदस्य संख्या 250 के लगभग है। इसके साप्ताहिक सत्संगों तथा वेद कथाओं का कार्यक्रम वड़ा रोचक तथा प्रभावपूर्ण होता है। आर्य

पर्वों को यह समाज बड़े उत्साह से मनाती है। इसके वार्षिक उत्सव तथा शोभा-यात्राएं और अन्य कार्यक्रम डी० ए० वी० हायर सैकेण्डरी स्कूल, चंडीगढ़ के सहयोग से बड़े समारोह से सम्पन्न होते हैं। अपने जन्मकाल से ही यह आर्य समाज सुयोग्य अधिकारी वर्ग के संरक्षण में उत्तरोत्तर प्रगतिशील कार्यक्रमों में अग्रसर रही है। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रत्येक वेद प्रचार के कार्यक्रम में यह आर्य समाज अग्रसर होकर भाग लेती रही है।

वर्तमान समय में जिन कार्यक्रमों को आरम्भ किया गया है वे आर्य समाज के प्रगतिशील सर्वहितकारी कार्यों के प्रतीक हैं। सार्वजनिक हित की दृष्टि से स्वामी दयानन्द, बख्शी टेकचन्द के नाम से एक आयुर्वेदिक औषधालय बड़ी सफलतापूर्वक निःशुल्क सेवा कार्य कर रहा है। एक सुन्दर अतिथि भवन का निर्माण किया गया है जिसका नाम 'श्री रघुनन्दन शास्त्री अतिथि भवन' रखा गया है। इस अतिथि भवन में श्री शास्त्री जी के परिवार की ओर से हर प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध की गई हैं। प्रत्येक सुविधा से सम्पन्न यह अतिथि भवन संन्यासी महात्माओं, वानप्रस्थियों के स्वाध्याय करने तथा निवासार्थ सदैव प्रस्तुत है। वैदिक पुस्तकालय तथा वाचनालय भी स्वाध्याय प्रेमियों के लिए सेवा कार्य कर रहा है। यज्ञशाला में प्रतिदिन सत्संग, यज्ञ आदि का कार्यक्रम होता है। पारिवारिक सत्संगों की परिपाटी भी शुरू की गई है।

आर्य समाज का अधिकारी वर्ग वेद विद्यालय खोलने का विचार भी कर रहा है जिसमें संस्कृत पठन-पाठन तथा ऋषि दयानन्द कृत ग्रंथों के अध्ययन अध्यापन का कार्य किया जायेगा।

आर्य समाज, निजामुद्दीन, नई दिल्ली

1. यह समाज डी-24, निजामुद्दीन पूर्वी में स्थित है। इसके सभासदों की संख्या 40 है।

2. इस समाज में साप्ताहिक अधिवेशन के अतिरिक्त, प्रातः दैनिक सत्संग भी लगता है, जिसमें दैनिक हवन यज्ञ के अतिरिक्त वेद मंत्रों से विशेष आहुतियाँ दी जाती हैं।

3. इस समाज द्वारा अगस्त, 1978 में श्रावणी वेद प्रचार पर्व बड़े उत्साह से मनाया गया जो लगभग तीन सप्ताह तक चलता रहा। विभिन्न परिवारों में बारी-बारी बृहद हवन यज्ञ, भजन तथा वैदिक प्रवचनों का कार्यक्रम चलता रहा। प्रचार की दृष्टि से उन परिवारों को प्राथमिकता दी गई जो आर्य समाज के सदस्य नहीं हैं। इस कार्यक्रम द्वारा प्रचार में आशातीत सफलता प्राप्त हुई। उपस्थित व्यक्तियों में

प्रवचनों के लिए रुचि बढ़ाने के लिए प्रवचनों के विषय भी विज्ञापन द्वारा पूर्व ही घोषित कर दिए थे। प्रवचनों का कार्य श्री स्वामी शिवाचार्य जी, संचालक, वेद विद्यालय गौतम नगर, नई दिल्ली ने बड़ी तत्परता से निभाया।

4. स्थानीय जनता को आर्य समाज की ओर आकर्षित करने के उद्देश्य से इस समाज द्वारा 'बसंत पंचमी' का त्योहार 28-1-79 को बड़े समारोहपूर्वक मनाया गया। इस वर्ष को अन्तर्राष्ट्रीय बाल वर्ष के रूप में मनाने की दृष्टि से इस पर्व में बच्चों के कार्यक्रम को विशेष स्थान दिया गया और उन्हें सुन्दर-सुन्दर धार्मिक पुस्तकें भी पारितोषिक रूप में देने का प्रबन्ध किया गया।

5. यह समाज स्थानीय जनता की हर प्रकार से सेवा करने में उद्यत रहती है। अनेक संस्कार इस समाज द्वारा करवाये जाते हैं। इन कार्यों के लिए इस समाज के सेवा में पूरे समय के लिये एक पुरोहित भी नियुक्त हैं। अन्य सेवाओं के अतिरिक्त, जनता की सुविधा के लिए समाज के भवन में दिल्ली म्यूनिसिपल कार्पोरेशन द्वारा पानी के बिलों के भुगतान का भी प्रबन्ध किया है। इसके अतिरिक्त स्त्री समाज द्वारा स्वच्छ मिर्च मशाले इत्यादि भी लागत मात्र मूल्यों पर विक्रय किये जाने का प्रबन्ध है।

कृष्णलाल
मंत्री

आर्य समाज, अनारकली, नई दिल्ली

नई दिल्ली में मन्दिर मार्ग पर स्थित यह आर्य समाज आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की प्रमुख समाजों में से एक है।

इस समाज के सुन्दर एवं भव्य भवन का शिलान्यास परम पूज्य स्वर्गीय महात्मा आनन्द स्वामी जी सरस्वती के करकमलों द्वारा किया गया था।

स्वर्गीय श्री मेहरचन्द जी महाजन की विशेष रुचि के परिणामस्वरूप यह भव्य भवन अभ्यागतों एवं पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र बिन्दु है। इस आर्य समाज के निर्माण में सर्वश्री डा० जी० एल० दत्त जी, रामलाल हंस, मुलकराज भल्ला, दयाराम शास्त्री आदि का अपूर्व सहयोग है।

आर्य समाज ने भवन का एक भाग, जिसमें चार कमरे हैं, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा को कार्यालय हेतु निःशुल्क दिया है। समाज के भवन में ही 'महात्मा आनन्द स्वामी स्मारक निधि' की स्थापना की गई है।

प्रतिदिन प्रातः सन्ध्या हवन के पश्चात् सत्संग का आयोजन होता है, जिसमें मन्दिर मार्ग एवं पहाड़गंज के नर-नारी सोत्साह भाग लेते हैं।

शुक्रवार को श्रीमती कृष्णावती जी वानप्रस्थी एवं श्रीमती विद्यावती महाजन नेतृत्व में महिला सत्संग का आयोजन होता है।

रविवार को साप्ताहिक सत्संग में बृहद-यज्ञ के पश्चात् किसी योग्य विद्वान का प्रवचन होता हैं। इस वर्ष साप्ताहिक सत्संगों में सर्व श्री पुरुषोत्तम जी एम० ए०, हरिशरण जी सिद्धांतालंकार, प्रेमचन्द जी श्रीधर, हरप्रकाश जी बन्धु, मुमुक्षु जी वेदालंकार, लक्ष्मीदत्त जी दीक्षित, जैमिनी जी शास्त्री, वेदमूर्ति जी आदि आर्य विद्वानों के सारगर्भित प्रवचन हुए।

समाज का अपना पुस्तकालय है जिसमें लगभग सब वैदिक साहित्य उपलब्ध है। निःशुल्क चिकित्सालय—डा० वेलीराम जी अग्रौल तथा डा० श्रीमती रेणु निगम अपनी अमूल्य सेवाओं से रोगपीड़ित नर-नारियों को प्रति दिन लाभान्वित करते हैं। श्री ओमप्रकाश जी गोयल दवाइयों पर हुए व्यय का अधितकर भार बर्दाश्त करते हैं।

पं० सोमकीर्ति जी के निधन के बाद कई वर्षों तक स्थायी सुयोग्य पुरोहित की व्यवस्था नहीं हो पायी थी। पिछले साल श्री रामसुभगसिंह आचार्य को पुरोहित रूपेण नियुक्त कर इस अभाव को दूर किया गया है। आप आर्य समाज भवन में ही निवास करते हैं और सब प्रकार के संस्कारों के लिए हर समय उपलब्ध होते हैं।

गणमान्य आर्य अतिथियों के लिए अतिथिशाला की सेवाएं उपलब्ध हैं जिसमें दो या तीन दिनों तक ठहरने की व्यवस्था सुगमता से की जाती है।

समाज के प्रधान श्री मोहनलाल जी, प्रि० पी० जी० डी० ए० वी० कालेज, नेहरू नगर, नई दिल्ली के नेतृत्व में आर्य समाज उन्नति की ओर अग्रसर है।

वेद प्रचार सप्ताह के अन्तर्गत 22 अक्तूबर, 1978 से 27 अक्तूबर, 1978 तक समाज भवन में आचार्य पुरुषोत्तम जी एम० ए० की० की कथा हुई। आपके प्रवचनों में श्रोताओं की उपस्थिति संतोषजनक रही।

आर्य समाज का वार्षिक उत्सव 6 नवम्बर, 1978 से 13 नवम्बर, 1978 तक मनाया गया। यज्ञ के ब्रह्मा श्री दयाराम जी शास्त्री थे। रात्रि में आपकी ही कथा हुई जिसमें काफी आर्यजन उपस्थित होते रहे। 12 नवम्बर को मुख्य रूप से सर्व श्री शिवकुमार शास्त्री, जैमिनी जी शास्त्री एवं आचार्य पुरुषोत्तम जी के प्रवचन हुए। ऋषि लंगर की व्यवस्था दिल्ली के मुख्य दानवीर श्री मुल्कराज जी भल्ला और श्री हरि कृष्ण जी गम्भीर ने की। लंगर का सारा खर्च आप दोनों ने मिलकर वहन किया।

आर्यजनों ने उत्सव के निमित्त खुलकर दान दिये जिसके लिए आर्य समाज आभारी हैं।

भवन निर्माण के लिए 5000 रुपए निश्चित किये गये हैं।

गत वर्ष प्रिंसिपल मोहनलाल जी प्रधान एवं श्री एच० आर० मल्होत्रा मंत्री थे अब नव निर्वाचन में श्री शान्तिलाल जी सूरीप्रधान एवं प्रिंसिपल मोहनलाल मन्त्री बने हैं।

आर्य समाज बाजार सीताराम

आर्य समाज बाजार सीताराम दिल्ली की उन समाजों में से एक है जिस पर आर्य जगत गौरव कर सकता है। इस समाज की स्थापना 1915 में दीपावली के शुभ दिन पर श्री बख्तावर मल जी की धर्मशाला कूचा पातीराम दिल्ली में हुई थी। इस समाज के प्रथम प्रधान श्री पं० उमाशंकर जी जोशी तथा मंत्री पं० जयनारायण जी थे। उस समय इस समाज का नाम आर्य समाज मोहल्ला इमली रखा गया था। 2-3 वर्ष तक समाज की गतिविधि इसी धर्मशाला में चलती रही। इसके बाद समाज को ला० माधोराम प्यारे लाल की धर्मशाला जो बाजार सीताराम में स्थित है वहां ले जाया गया। यहां पर एक कमरा किराये पर लिया गया तथा साप्ताहिक बैठक तथा अधिवेशन आदि हाल में रखे जाते रहे। कुछ समय बाद समाज को यहाँ से पंचायती धर्मशाला बाजार सीताराम में ले जाना पड़ा। सन् 1918 में वर्तमान आर्य समाज मन्दिर की जमीन खरीदी गई और इस समाज का संबंध आर्य प्रादेशिक सभा लाहौर से स्थापित किया गया।

4-12-1926 को पूज्य महात्मा हंसराज जी को इस समाज का शिलान्यास करने के लिए आमन्त्रित किया गया लेकिन वे किसी विशेष कारण वश इस समारोह में उपस्थित न हो सके। इस समाज का शिलान्यास प्रातः स्मरणीय पंडित रामचन्द्र देहलवी जी के कर-कमलों द्वारा हुआ था।

इस समाज मन्दिर के भवन निर्माण में सर्व श्री प्रिन्सिपल ईश्वर दास जी, प्रि० रूपलाल जी, हैडमास्टर ठाकुर दत्त जी, लाला श्यामलाल जी गोरोवाला, लाला अनन्तराम जी आर्य, लाला श्यामलाल जी लोहिये, लाला धासीराम जी लोहिये, लाला रमाशंकर जी गुप्ता, लाला बालकिशन दास जी, श्री नन्द किशोर जी खन्ना, पं० उमाशंकर जी जोशी, लाला बनारसी दास जी लोहिये, श्री देवेन्द्र किशोर जी, लाला बशेश्वर नाथ जी पत्थर वाले, ला० देवीराम जी कपड़े वाले, ला० रिच्छू मल जी मुक्टराय वाले तथा श्री रामचन्द्र मिस्त्री आदि महानुभावों का विशेष सहयोग रहा।

आदरणीय लाला सूरजभान जी ने अपने स्वागतार्थ समारोह में ठीक ही कहा था कि आर्य समाज बाजार सीताराम दिल्ली तो आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के समकक्ष है।

इस समाज में दैनिक, साप्ताहिक तथा पारिवारिक सत्संग होते हैं। श्रावणी पर्व, ऋषि दयानन्द निर्वाणोत्सव स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान समारोह बड़े धूमधाम से मनाये जाते हैं।

इस समाज में 10 कमरे हैं जिसमें आर्य जन आकर ठहरते हैं । आर्य सन्यासियों, उपदेशकों तथा विद्वानों के ठहरने व भोजन आदि की भी व्यवस्था की जाती है ।

इस वर्ष जो दैवी विपदा बाढ़ के रूप में दिल्ली में आई थी उसके लिए समाज की ओर से 7 दिन तक बाढ़ पीड़ितों के लिए भोजन आदि कैम्पों में भेजे गये थे ।

समाज की ओर से गुरुकुल एटा तथा गुरुकुल खेडा के ब्रह्मचारियों को सहायता भी दी जाती हैं । प्रादेशिक सभा को हम सदा सहयोग देते रहे हैं और देते रहेंगे ।

हमारे समाज का 59 वाँ वार्षिक उत्सव 4-2-79 से लेकर 11-2-79 तक समाज मन्दिर मनाया गया जिसका विवरण इस प्रकार है । 4-2-79 से लेकर 9-2-79 तक महात्मा दयानन्द जी की वेदों पर कथा हुई ।

10-2-79 नशाबन्दी सम्मेलन ला० रामगोपाल जी वानप्रस्थी अध्यक्ष सार्वदेशिक (आर्य प्रतिनिधि सभा की) अध्यक्षता में हुई जिसका उद्‌घाटन) प्रो० विजयकुमार जी मल्होत्रा (संसद सदस्य) ने किया । इस सम्मेलन के मुख्य वक्ता थे ।

डा० उदयवीर सिंह जी (प्रधान दिल्ली नशाबन्दी सम्मेलन) श्री राजेश शर्मा (कार्यकारी पार्षद दिल्ली) इसी दिन आर्य महासम्मेलन का भी आयोजन किया गया । इस सम्मेलन का उद्‌घाटन डा० सूरज भान जी (अध्यक्ष, डी० ए० वी० प्रबन्धक कमेटी ने किया । अध्यक्षता आर्य जगत के प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी ओमानन्द महाराज जी ने की । मुख्य वक्ता थे प्रो० बलराज मधोक,(आर्यनेता), श्री रामनाथ सहगल(मंत्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा) श्री उत्तमचन्द जी शरर (आर्य विद्वान), श्री विक्रमसिंह जी (पुरोहित)

11-2-79 को राष्ट्र उत्थान सम्मेलन किया गया जिसका उद्‌घाटन आर्य जगत के प्रसिद्ध सन्यासी स्वामी रामेश्वरानन्द जी महाराज ने किया । अध्यक्षता श्री सत्यनारायण जीबन्सल (अध्यक्ष स्थायी समिति दिल्ली नगर निगम) ने की मुख्य वक्ता प्रो० रामसिंह (आर्यनेता) स्वामी ओमानन्द महाराज तथा सांवलदास जी गुप्ता (सदस्य महानगर परिषद (दिल्ली) थे ।

23-2-79 को दिल्ली प्रदेश आर्य वीर दल की बैठक हुई जिसमें सत्यार्थप्रकाश समारोह की सफलता बनाने की योजना बनाई ।

13-3-79 को समाज मन्दिर में होली मिलन उत्सव मनाया गया, आर्य जगत के विद्वानों ने होली किस प्रकार मनाई जाये और इसका वैज्ञानिक रूप क्या है इस पर अपने-अपने सारगर्भित विचार प्रकट किये। इस अवसर पर कार्य पर श्री सत्य प्रकाश बजरंग ने अपनी ओजस्वी पूर्ण कवितायें सुना कर जन समुदाय का मनोरंजन किया।

इसके निम्नलिखित पदाधिकारी है :

प्रधान	श्री न्यादरमल गुप्ता
उप प्रधान	श्री देवराज अग्रवाल
,,	श्री दिवानचन्द पल्टा
,,	श्री सुर्जन सिंह आर्य
मंत्री	श्री मामचन्द रिवारिया
उप मंत्री	पं० धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री
,,	श्री विनोद महेश्वरी
,,	श्री नरेश चन्द शर्मा
कोषाध्यक्ष	श्री बाबूराम आर्य
पुस्तकाध्यक्ष	श्री अर्जुन सिंह

आर्यसमाज जी-८ एरिया-राजोरी गार्डन नई दिल्ली

आर्य समाज जी-८ एरिया, राजौरी गार्डन नई दिल्ली नव संस्थापित आर्य समाज है। इसी वर्ष इसकी स्थापना की गई है। इस समाज के संस्थापक सदस्य श्री योगराज आर्य, श्री वेदमूर्ति व श्री जगदीशराय जी हैं। वर्तमान में सदस्यों की संख्या 30 है। समाज की तरफ से पारिवारिक सत्संग, योग प्रशिक्षण व संस्कारों को कराने की व्यवस्था प्रदान की जाती है। 1-4-79 से 5-4-79 तक इस समाज के तत्वावधान में 'रामनवमी महोत्सव' मनाया गया। जिसमें भारी संख्या में लोगों ने भाग लिया। श्री सत्यपाल जी 'मधुर' व श्री आचार्य पुरुषोत्तम जी एम० ए० के प्रभावशाली व्याख्यानों का प्रभाव स्थानीय जनता पर पड़ा। वर्तमान में इस आर्य समाज के प्रधान श्री वेदमूर्ति जी उप प्रधान श्री, जगदीशराज जी तथा मंत्री श्री योगराज आर्य हैं। इस समाज का भविष्य उज्ज्वल है क्योंकि इस क्षेत्र में आर्य जनता के आने की अधिक से अधिक संभावना है।

आर्य समाज बस्ती हरफूलसिंह सदर थाना रोड देहली

1. इस आर्य समाज मन्दिर का भवन जो कि तीन मंजिल पुख्ता बना हुआ है लगभग बारह वर्ष हो चुके हैं।

2. इस समाज में साठ सदस्य हैं जिनका वार्षिक चंदा 1000 (एक हजार) रु० तक प्राप्त होने पर सभा को 10.) (एक सौ) रुपये दशांश दिया जाता है।

3. यह समाज आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा से सम्बन्धित है।

4. इस समाज में दैनिक सत्संग गर्मियों में प्रातः 6 बजे से 7 बजे तक और सर्दियों में 6-30 से 7-30 बजे प्रातः हुआ करता है जिसमें प्रतिदिन सन्ध्या हवन वेद कथा और भजन आदि का कार्यक्रम हुआ करता है।

5. साप्ताहिक सत्संग जो कि हर रविवार को हुआ करता है गर्मियों में 7-30 बजे से 9-30 बजे तक और सर्दियों में 8 बजे से 10 बजे प्रातः हुआ करता है हर सप्ताह भाषण कराने के लिते बाहर से विद्वान् वक्ता का प्रबन्ध किया जाता है।

6. वर्ष में दो तीन बार सप्ताह भर रात्रि को किसी एक विद्वान् द्वारा वेद कथा का आयोजन किया जाता है।

7. इस समाज में हर प्रकार के संस्कार करने के लिये पुरोहित का भी प्रबन्ध किया गया है। इस समय लगभग सात वर्ष से श्री प्रभुदयाल जी पुरोहित सुचारू रूप से कार्य कर रहे हैं।

8. बाढ़ पीड़ित लोगों की आपातकालीन में भोजन वस्त्र और औषधि आदि से सहायता की जाती है जिसमें वस्ती के रहने वाले बड़ी उदारता से दान व सहयोग देते रहते हैं।

9. इस समाज में साप्ताहिक व मासिक पत्रिकायें लोगों के पढ़ने हेतु मंगायी जाती हैं।

10. लोगों की सुविधा के लिये नीचे का हाल कमरा नाम करण-मुंडन-विवाह आदि संस्कारों के लिये लोगों को दिया जाता है और इससे ऊपर एक पुस्तकालय है।

11. इस समाज के पदाधिकारी निम्नलिखित हैं :—

संरक्षक—श्री नानकचन्द्र जी हाँडा

प्रधान—श्री सरदार आशासिंह जी धवन

उप-प्रधान—श्री डा० प्रेमनाथ जी चावला

उप-प्रधान—श्री श्यामसुन्दर बजाज
मंत्री—श्री रामनाथ जी सहगल
उप-मंत्री—श्री तिलकराज जी कोहली
उप-मंत्री—श्री श्रवणकुमार जी बजाज
कोषाध्यक्ष—ला० मुरारीलाल जी

आर्य समाज डी. ए. वी. कैम्पस—अबोहर

डी० ए० वी० कैम्पस आर्य समाज जिसका शुभारंभ दिसम्बर 1975 में हुआ था। तभी से साप्ताहिक हवन, यज्ञ नियमित रूप से चल रहा है। वर्ष 78-79 में साप्ताहिक हवन, यज्ञ कार्यक्रम पारिवारिक सत्संग के रूप में ही सुनियोजित ढंग से चलता रहा है। यहाँ परिवारों में क्रमानुसार सप्ताह में एक बार हवन-यज्ञ होता है जिसमें सभी सदस्य उत्साहपूर्वक भाग लेते हैं।

हवन-यज्ञ के उपरान्त नन्हें-मुन्ने भजन गायन करते हैं। निश्चित कार्यक्रमानुसार बच्चों को शिक्षादायक कहानी सुनाई जाती है। विद्वान् एवं अनुभवी सज्जनों द्वारा प्रति सप्ताह स्वस्तिवाचन मन्त्रों की सुचारु ढंगसे व्याख्या की जाती है। ताकि सभी लोग इन मंत्रों के महत्त्व को भली प्रकार से समझ सकें।

नवम्बर मास में महात्मा हंसराज सप्ताह मनाया गया। जिसमें महात्मा जी के जीवन से संवन्धित और वैदिक सिद्धांतों के प्रचार के लिए विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें न केवल डी० ए० वी० संस्थाओं के विद्यार्थियों ने ही भाग लिया अपितु नगर की और बाहर की अन्य शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थियों ने भी सहयोग दिया। विजेताओं को पुरस्कृत किया गया ताकि उनमें उत्साह बना रहे।

आर्य समाज वसन्त विहार—नई दिल्ली

आर्य समाज वसंत विहार का भव्य भवन जिसका शिलान्यास श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी के करकमलों द्वारा हुआ था, इस वर्ष बनकर तैयार हो गया। इसका उद्घाटन श्री बाबू जगजीवनराम जी रक्षामंत्री द्वारा .0-9-78 को हुआ। इस भव्य भवन के निर्माण पर चार लाख से अधिक रुपया व्यय हुआ है जिसका नाम स्वामी महात्मा आनन्दस्वामी जी की स्मृति में "आनन्द स्वामी भवन" रखा गया है।

आर्य समाज में पुस्तकालय हेतु भी पुस्तकें संग्रहित की जा रही है। आर्य समाज के पास एक स्थाई पुरोहित है जिससे लोग अपने संस्कारों आदि की सुगम सेवाएं प्राप्त कर पाते हैं।

पी० सी० महता
मंत्री

आर्य समाज वसन्तविहार की देख-रेख में दुःख निवारण समिति है जो एक धर्मार्थ ऐलोपैथिक डिस्पेंसरी चला रही हैं इस डिस्पेंसरी में खून और पेशाब आदि की जाँच के अतिरिक्त E.C.G. की भी व्यवस्था है। पुरुषों और स्त्रियों के लिये डाक्टर भी स्त्री-पुरुष ही रखे गये हैं। इस प्रकार यह डिस्पेंसरी यहाँ के स्थानीय लोगों की सराहनीय सेवा कर रही है।

आर्य समाज कालीकत

1. पैंतीस विधर्मियों को हिंदू बनाया।
2. 9 विवाह संस्कार किया।
3. 205 घरो में हवन किया।
4. सात्ताहिक सत्संग नियमित चलता है।
5. हिन्दी विद्यालय भी है।
6. संस्कृत कक्षाएं भी चल रही है।

मन्त्राणी श्रीमती सुगन्धी वाई आर्या

आर्य समाज अशोक विहार

राजधानी के उत्तरी अंचल में स्थित आर्य समाज अशोक विहार देखने में यद्यपि छोटा सा ही लगता है तथापि इसकी गतिविधियों तथा कार्यों की कीर्ति चहुं ओर फैल रही है। प्रादेशिक सभा की शीर्षस्थ समाज अनारकली के वाद सर्वदा अशोक विहार का ही नाम लिया जाता है। दिल्ली में आर्य समाज का कोई भी कार्य हो, आर्य समाज की कोई संस्था कार्यक्रम की आयोजक हो यदि अशोक विहार के सदस्य न पहुंचे तो प्रायः अधूरा ही रहता है। यहाँ के मंत्री तथा प्रधान को उपसभा दिल्ली के मंत्री और प्रधान होने का जो गौरव प्राप्त है वह अपने आप में एक अनुपम आदर्श है। स्थानीय आर्य स्त्री समाज की प्रधाना श्रीमति प्रेमशील जी भी अभी दिल्ली प्रान्तीय आर्य महिला सभा की मन्त्राणी निर्वाचित हुई हैं। प्रेम, भ्रातृत्व, सहयोग की भावना यहां के सदस्यों में कूट-कूट कर भरी हुई है जिसके कारण यह समाज दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति कर रहा है। हमारे २५० सदस्य समाज को एक संस्था नहीं परिवार समझ कर जिस त्याग, श्रद्धा, प्रेम तथा सहयोग से परस्पर व्यवहार करते हैं वह प्रायः अत्यन्त दुर्लभ ही है।

वार्षिकोत्सव—

इस वर्ष हमारा वार्षिकोत्सव ५ से १२ नवम्बर १९७८ तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। ५ नवम्बर को निकाली गई विशाल शोभा यात्रा को स्थानीय निवासी आजतक याद करते हैं। ६ दिन प्रातःकाल वृहद यज्ञ तथा रात्रि वेद कथा के ब्रह्मा

सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान आचार्य सत्यप्रिय जी (हिसार वाले) ने अशोक विहार के वासियों के घर में गंगा प्रवाहित कर दी।

इसके अतिरिक्त महिला सम्मेलन, बच्चों के वाद विवाद तथा सांस्कृतिक प्रतियोगितायें, चित्रकला प्रतियोगिता आदि कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहे। उत्सव में स्वामी अग्निवेश, श्री शिवकुमार शास्त्री पूर्व संसद सदस्य तथा स्वामी वेदानन्द जी रोपड़ वालों के विशेष व्याख्यान हुए।

भवन निर्माण—

दिल्ली विकास प्राधिकरण से प्राप्त १००० वर्ग गज भूमि पर यहां एक भव्य भवन निर्माणाधीन है जिसका शिलान्यास सभा प्रधान श्री सूरजभान जी के करकमलों द्वारा गत ३० अक्तूबर १९७७ को हुआ था। आशा है एक वर्ष में भवन का कार्य पूरा हो जायेगा जिससे कि हम समाज का कार्य और सुचारू रूप से कर पायेंगे।

हमारे वरिष्ठ उप प्रधान श्री शीतल प्रसाद जी, श्री नारायण प्रताप अबरोल, कोषाध्यक्ष श्री ओमप्रकाश आर्य, पुस्तकाध्यक्ष श्री जीवनलाल आर्य तथा अंतरंग सदस्य श्री के० बी० राय, श्रीमती पुष्पा सचदेवा तथा श्री नन्दलाल आर्य, श्री विजय कुमार जी का यदि यहाँ धन्यवाद न किया जाये तो यह रिपोर्ट अधूरी ही रहेगी।

योगाभ्यास

हमारे सुयोग्य पुरोहित श्री कैलाश चन्द्र जी प्रातः 6 बजे योगाभ्यास की कक्षाएं लगाते हैं। जिनमें कालोनी के सभी वर्गों के सदस्य बड़े उत्साह सहित भाग लेते हैं। सांय काल भी बालकों को कुश्ती, मोगरी भार उठाना आदि स्वास्थ्य वर्धक क्रियाएं करवाई जाती है इसके पश्चात् सब बालक एकत्रित होकर संध्या करते हैं।

साप्ताहिक सत्संग

हमारे साप्ताहिक सत्संग में उपस्थिती बहुत ही सन्तोषजनक होती है। प्रत्येक रविवार को किसी सुयोग्य उपदेशक का प्रवचन होता है। श्रीमती भटनागर के सुनेतृत्व में कुलाची हंसराज माडल स्कूल के बच्चे सस्वर वेद मंत्रों का मधुर गायन करते हैं। श्री नन्दलाल जी आर्य हिसार वाले साप्ताहिक सत्संग की कार्यवाही का संचालन बड़ी कुशलता पूर्वक करते हैं। हमारे प्रबुद्ध श्रोता उपदेश का ध्यानपूर्वक श्रवण करके शंका समाधान किया करते हैं।

महिला सभा

आर्य स्त्री समाज अशोक विहार अपनी गतिविधियों के कारण केवल अशोक विहार ही नहीं अपितु समस्त दिल्ली में यश प्राप्त कर रही है। प्रधाना श्रीमती प्रेमशील व मंत्राणी श्रीमती राज अरोड़ा के नेतृत्व में दिन दूनी रात चौगुनी प्रगति कर रही है। सभी सदस्याएं प्रत्येक अवसर पर पुरुषों के साथ कन्धे से कन्धा मिला कर कार्य करती है। इस वर्ष स्त्री समाज ने भवन निर्माण में 5000 रुपये की प्रथम आहुति दी है।

आर्य समाज, पूर्वी-कैलाश, नई-दिल्ली

आर्य समाज पूर्वी-कैलाश की स्थापना अक्तूबर 1971 ई० (सं० 20.8 विक्रमी) को हुई थी। आरम्भ से ही समाज को श्री शालिग्राम जी गौतम का सहयोग प्राप्त रहा और वे इसके प्रधान रहे। उनके प्रधानत्व में आर्य समाज का अपना सभा भवन 400 वर्ग मीटर के प्लाट पर बना। श्री शालिग्राम जी गौतम के पुरुषार्थ से तथा आर्य स्त्री समाज के सहयोग से आर्य समाज की सुन्दर यज्ञशाला का निर्माण हुआ, जिसके अन्दर वेदों से संकलित मन्त्र, सूक्तियां एवं उनके भावार्थ दिये हुये हैं।

गत वर्ष समाज के प्रधान श्री शिवादित्ता जो दुआ के निधन से समाज को जो क्षति हुई उसकी पूर्ति न हो सकी है। प्रसन्नता की बात है कि उनके पुत्र उनकी स्मृति में समाज द्वारा संस्थापित निःशुल्क आर्य धर्मार्थ औषधालय (होम्योपैथिक) को अपना सहयोग निरन्तर बनाये हुये हैं, और जिस को श्री ग्यान चन्द्र जी कपूर बड़ी दक्षता के साथ चला रहे हैं।

आर्य समाज के सम्माननीय सभासद् श्री गोपाल शरण जी "विद्यार्थी" समाज में एवं दक्षिण दिल्ली की अन्य समाजों में भी बड़ी लगन के साथ वेद-प्रचार का कार्य कर रहे हैं।

आर्य समाज में समस्त संस्कारों को कराने की सुन्दर व्यवस्था है।

गत अक्तूबर मास में आर्याभिविनय पारायण बृहद्-यज्ञ सम्पन्न हुआ एवं आचार्य श्री पुरषोत्तम जी शर्मा एम० ए० के निरन्तर एक सप्ताह तक सारगर्भित प्रवचन हुये जिनका बहुत ही स्थायी प्रभाव जनता पर पड़ा। इसके अतिरिक्त श्री मनोहर ऋषि जी, श्री वेद व्यास जी, श्री पं० कृष्ण चन्द्र जी शास्त्री, और श्री गुलाब सिंह जी राघव' के ओजस्वी व मनोहर भजन-उपदेश होते रहे।

इस समाज को आरम्भ से चौ० देशराज जी तथा उनके द्वारा संस्थापित चन्द्र आर्य विद्या मन्दिर की छात्राओं का स्नेह प्राप्त रहा है। विगत वर्ष छात्राओं ने बड़े ही रोचक एवं उपयोगी कार्यक्रम आर्य समाज के मंच से प्रस्तुत किये।

इस समाज की एक विशेषता यह रही है कि इसके मंच से केवल सैद्धान्तिक और वेद-प्रवचन ही होते हैं तथा वातावरण को पूर्णतया धार्मिक एवं आध्यात्मिक बनाये रखा जाता है। सन्ध्या एवं ध्यान-योग पर भी गत वर्ष अधिक बल दिया गया।

समय-समय पर समाज बाढ़-पीड़ित लोगों की सहायता के लिये यथा शक्ति सहायता करती रहती है।

इस समाज का यह गौरव है कि इस को आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का

पूर्ण संरक्षण प्राप्त है, तथा जिसके निर्देशन में यह आर्य समाज महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज का संदेश फैलाने के लिये कटिबद्ध है।

आर्य समाज का अपना पुस्तकालय है तथा सभा भवन हर प्रकार की सुविधा से युक्त है। प्लाट के नियमन के लिये प्रयत्न जारी है।

आर्य समाज श्री निवासपुरी नई दिल्ली

दक्षिण दिल्ली की प्रसिद्ध सरकारी कालोनी के पीछे बसी प्राइवेट कालोनी में मुलतान से आए लोगों की संख्या ज्यादा है जिन पर आर्यसमाज के संस्कारों की अमिट छाप है। आर्य समाज की स्थापना 1964 में हुई और सरकार के कोप का भाजन बना, 1967 में मन्दिर तोड़ दिया गया। प्रो० रामसिंह, पं० इन्द्रसेन शर्मा आदि के सद्प्रयास से लगभग 600 वर्ग गज पर नया आर्य समाज का भवन बनाया गया। इस आर्य समाज का सबसे बड़ा श्रेय यह है कि लगभग 90 प्रतिशत युवा सभासद हैं जबकि आर्य समाज में नई पीढी उपेक्षित है। समाज में साप्ताहिक सत्संग के अतिरिक्त युवक वर्ग, नशाबन्दी आदि की गतिविधियाँ सक्रियता से होती है। सर्व श्री प्रेमचन्द आर्य, दयालदास वर्मा, मोहन लाल, वेद प्रकाश ऋषि देव शर्मा, नरेन्द्र अवस्थी आदि प्रमुख सभासद हैं। श्री प्रेम भिक्षु सुयोग्य पुरोहित व अच्छे लेखक हैं।

आर्य समाज, ग्रीन पार्क नई दिल्ली

गत वर्षों की भांति रविवार सत्संग नियम पूर्वक आर्य समाज मन्दिर में लगाते रहे। पं० ज्ञानेश्वर जी के अतिरिक्त आर्य प्रादेशिक सभा के उपदेशक प्रवचनार्थ आते रहे, उनके हम बहुत आभारी हैं। उपस्थिति 30-50 तक होती रही, इसमें हमारी महिला समाज की पुरुषार्थी बहनों का बहुत सहयोग रहा। वैसे महिला समाज का सत्संग भी प्रति शुक्रवार लगता रहा है।

5-3-78 को शिवरात्रि ऋषि बोधोत्सव, 18-8-78 श्रावणी उपाकर्म, 25-8-78 को योगीराज कृष्ण जन्माष्टमी, 31-10-78 ऋषि निर्वाणोत्सव बड़ी श्रद्धा से हवन यज्ञ के साथ मनाई गई। इनमें कई एक विद्वानों के भाषण हुए।

इसके अतिरिक्त हमारी समाज आर्य केन्द्रीय सभा तथा आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा और टंकारा सहायक समिति की बैठकों में भाग लेती रही।

1978 में भिन्न धर्मों में 89 संस्कार हुए, जैसे—-नामकरण-6 जन्मदिवस-12 मुण्डन-3 गृहप्रवेश-7 प्रन्त्येष्ठी-33 विवाह-21 शुभकर्म-7/

इस वर्ष अन्तरंग सभा के निम्न सदस्य थे—

पदाधिकारी—1. श्री इन्द्रनारायण-प्रधान 2. श्री हरिचन्द थापर-उपप्रधान 3. श्री जीवन कृष्ण स्याल-मंत्री 4. श्री हरवंश लाल-कोषाध्यक्ष 5. श्री मदन गोपाल बस्सी पुस्तकाध्यक्ष।

मैं इन सब सज्जनों का बहुत आभारी हूँ। मुझे इन सबका पूर्णरूपेण सहयोग प्राप्त होता रहा है, विशेषकर श्री हरवंसलाल चावला जी का, जिन्होंने लेखा-जोखा के कठिन कार्य को, अपनी अस्वस्थता के होते हुए भी, बड़ी कुशलता से निभाया है।

अन्त में मैं अपने युवक सदस्यों से अपील करता हूँ कि वह आर्य समाज के कार्य को तीव्रगति देने में अपनी सेवाएं अर्पित करें क्योंकि हमारे लगभग सभी अधिकारी गण अब वयोवृद्ध हो रहे हैं। हमें उनका परामर्श तो मिलता ही रहेगा परन्तु वास्तविक कार्य [फील्ड वर्क] तो युवकों ही ने करना है।

ऐसी आशा के साथ मैं आप सब का धन्यवाद करता हुआ प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि हमारी नव-निर्मित यज्ञ शाला सच्चे अर्थों में समाज की आत्मा बनें और यहां नित्यप्रति यज्ञ, हवन, संध्या, वेद प्रचार इत्यादि पवित्र कार्य होते रहें, जिससे ग्रीन पार्क और निकटवर्ती कालोनिसियों में आर्य समाज का नाम रोशन हो।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उप सभा दिल्ली से सम्बन्धित आर्य समाजें—

1. आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग
2. ,, ,, अशोक विहार
3. ,, ,, बस्ती हरफूल सिंह
4. ,, ,, शकूर बस्ती
5. ,, ,, बसन्त विहार
6. ,, ,, वैस्ट्रन एक्सटेंशन ऐरिया करोल बाग
7. ,, ,, साउथ एक्सटेंशन
8. ,, ,, कालकाजी
9. ,, ,, रमेश नगर
10. ,, ,, श्रद्धापुरी
11. ,, ,, दक्षिण दिल्ली विस्तार
12. ,, ,, सीताराम बाजार

13. „ „ पुलवंगश
14. „ „ राम कृष्ण पुरम सेक्टर-6
15. „ „ राम कृष्ण पुरम सेक्टर-9
16. „ „ ग्रीन पार्क
17. „ „ निजामुद्दीन डी०-24
18. „ „ जे. जे. कालोनी वजीर पुर
19. „ „ मालवीय नगर
20. „ „ दरियागंज
21. „ „ लारेंस रोड
22. „ „ जे. जे. कालोनी मादीपुर
23. „ „ पश्चिम पुरी
24. „ „ जहाँगीर पुरी
25. „ „ नाँगल राया
26. „ „ जनता क्वार्टर पश्चिम पुरी
27. „ „ दिल्ली कैंट
28. „ „ तिहाड़ ग्राम
29. „ „ अशोक नगर
30. „ „ चिराग दिल्ली
31. „ „ ख्यालाग्राम
32. „ „ बी. एस. एफ. ट्रेनिंग स्कूल मदनगीर
33. „ „ श्री निवास पुरी
34. „ „ ईस्ट आफ कैलाश,
35. „ „ सुखदेव नगर
36. „ „ नांगलोई
37. „ „ बामनोली
38, „ „ नाहर पुर
39. „ „ सरस्वती गार्डन
40. „ „ पश्चिमी निजामुद्दीन
41. „ „ गुलमोहर पार्क
42. „ „ अशोक विहार फैज-3
43. „ „ नानक पुरा
44. „ „ आई. आई. टी. कालोनी
45. „ „ पंजाबी बाग

46. दयानन्द स्वाध्याय मंडल श्री निवास पुरी
47. आर्य समाज [डी. ए. वी.] झंडेवालान
48. ,, ,, डी. ए. वी. स्कूल पहाड़गंज
49. ,, ,, आफीसर्स क्वार्टर धोला कुआं
50. ,, ,, शक्ति नगर एक्सटेंशन
51. ,, ,, प्रताप चौक
52. ,, ,, भारत नगर
53. ,, ,, [हंसराज कालेज] मलका गंज
54. ,, ,, जनता डी. डी. ए. क्वार्टर सफदर जंग इन्क्लेव
55. ,, ,, टैगोर गार्डन
56. जी-8-एरिया जनता क्वाटर राजोरी गार्डन

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा (उपसभा पंजाब एवं चण्डीगढ़) से सम्बन्धित आर्य समाजों की सूची

जिला अमृतसर

1. आर्य समाज लारेन्स रोड, अमृतसर
2. " " लक्ष्मणसर "
3. " " लोहगढ़ "
4. " " उत्तमनगर "
5. " " नवांकोट "
6. " " तरनतारन "
7. " " अजनाला "
8. " " पट्टी "
9. " " रमदास "

जिला फिरोजपुर

1. आर्य समाज चौक फिरोजपुर शहर
2. " " सदर बाजार फिरोजपुर छावनी
3. " " का० वि० फाजिलका (फिरोजपुर)
4. " " मलौट मण्डी "
5. " " कालेज कालोनी अबोहर
6. " " कोट ईसाखाँ (फिरोजपुर)

जिला गुरदासपुर

1. " " कालिज विभाग गुरदासपुर
2. " " कालिज विभाग बटाला
3. " " कलानोर (गुरदासपुर)
4. " " कादियां "
5, " " धारीवाल "
6. " " बहरामपुर "
7. " " गोगरां "

चण्डीगढ़

1. आर्य समाज सैक्टर 7 बी, चण्डीगढ़
2. " " सेक्टर 16 बी, चण्डीगढ़

भटिन्डा

1. आर्य समाज का० वि० भटिण्डा

जिला होशियारपुर

1. आर्य समाज होशियारपुर
2. " " दसूहा
3. " " गडदीवाला
4. " " बजवाड़ा
5. " " शाम चुरासी

जिला लुधियाना

1. आर्य समाज माडल टाऊन, लुधियाना
2. " " मिलरगंज "
3. " " किदवई नगर "
4. " " खन्ना "

जिला जालन्धर

1. आर्य समाज विक्रमपुरा, जालन्धर
2. " " माडल टाऊन "
3. " " न्यू रेलवे कालोनी "
4. " " नकोदर "
5. " " अलावलपुर "
6. " " भार्गव गैम्प जालधर

भिवानी की आर्य समाजें

1. आ० स० तालु डा० खास
2. " मन्ढाल डा० खास
3. " वड़ेसरा डा० खास
4. " चांग डा० खास
5. " ढाशी माहू डा० खास
6. " लेधां डा० खास
7. " भिवानी शहर
8. " देवराला डा० खास
9. " इन्दीवाली डा० देवराला
10. " अशा डा० खास
11. " कुवारी डा० खास
12. " दाम्हें डा० खास

जिला हिसार की आर्य समाजें

1. आ० स० नागोरीगेट हिसार
2. " माडल टाऊन हिसार
3. " काली रावण डा० खास
4. " जुगलाण डा० खास
5. " बरवाला डा० खास
6. " फतियाबाद
7. " हांसी
8. " मैयड़ डा० खास
9. " लाडवा डा० खास
10. " बालसमन्द डा० खास
11. " डोमी डा० खास
12. " सरसागर डा० खास
13. " खुलवास रार्द डा० खास
14. " कुरड़ी डा० खास
15. " भगाशार डा० खास
16. " ठुइयाँ डा० भट्ट
17. " बाडा हेड़ी डा० मन्ढाल

18. " सोरखी डा० खास
19. " सीसर डा० खास
20. " पाली डा० खास
21. " सिखपुरा डा० खास
22. " खेड़ी गंगन डा० खास
23. " नारनोंद डा० खास
24. " राखी डा० खास
25. " मोठ डा० खास
26. " मिर्चपुर डा० खास
27. " खांडा डा० खास
28. " माजश (नारनोंद वाला] डा० खास
29. " वास डा० खास
30. " सिसाडा डा० खास
31. " मसूदपुर डा० खास
32. " सिन्धाड़ डा० खास
33. " घिरादा डा० खास
34. " टोहाना डा० खास
35. " कत्ताखेड़ा डा० टोहाना
36. " कन्हड़ी डा० टोहाना

जींद की आर्य समाजें

1. आ० स० जुलाना शादीपुर डा० खास
2. " जुलाना मण्डी डा० खास
3. " चुडाली नन्दगढ़ डा० खास
4. " लजवाना खुर्द डा० खास
5. " भम्भेवा डा० खास
6. " हथवाला डा० खास
7. " किला जफरगढ़ डा० खास
8. " पौली डा० खास

रोहतक की आर्य समाजें

1. आ० स० सीसर खास डा० खास वामा महम
2. " सूरजनमैशी डा० खास
3. " खरकड़ा डा० खास

4. " मराशा डा० खास
5. " मदीना दांगी डा० खास
6. " मोखरा डा० खास
7. " गढ़टेकशार डा० लाहली
8. " बहुकलां डा० खास
9. " निडाना डा० खास
10. " भगवती पुर डा० खास
11. " टिटोली डा० खास
12. " घड़ावठी डा० खास
13. " जीदशण डा० खिडवाली
14. " चिड़ी डा० खास
15. " खरेटी डा० खास
16. " लाखन माजरा डा० खास
17. " भाली आनन्दपुर डा० खास
18. " सासरोली डा० खास वाया रोहतक
19. " नान्दल डा० खास
20. " रोहतक प्रधाना मोहल्ला का० वि०

जिला सोनीपत कीं आर्य समाजें

1. आ० स० खेड़ा नूरजा डा० खास
2. " खेड़ी नूरण डा० खास वाया बूठासार
3. " गड़वाल डा० खास
4. " खेड़ी मिर्जापुर डा० सांधी
5. " अनाज मण्डी गोहाना डा० खास
6. " आहुलाना डा० खास
7. " खन्दरदाई डा० गोहाना

आर्य समाजों की लिस्ट जिला अम्बाला कुरुक्षेत्र

जिला कुरुक्षेत्र

आर्य समाज गजलाना
" " गद्याना
" " रामशर्ण माजरा
" " सौंधल

" " कोटडा
" " मिर्जा पुर
" " हलाहर
" " कुरुक्षेत्र
" " नरका तारी
" " जाजन पुर
" " क्योडक
" " कैथल संसार चन्द
" " जिला अम्बाला
" " रामपुर सैनियान
" " बतौड बरवाला
" " कोट
" " रायपुर रानी
" " नन्हेडा
" " डेहर
" " लाहड पुर
" " रसूल पुर
" " शालापुर
" " ठसका
" " सैदपुर
" " राजपुर
" " जफर पुर
" " रकि पुर
" " ठाकुर पुर
" " मुलाना
" " वधापली
" " बुर्ज
" " पतरेडी
" " ककड़ माजरा
" " विछ पड़ी
" " थाना छपर
" " जोलीर
" " खानपुर

,, ,, गूगेला
,, ,, दहिया माजरा
,, ,, दौलत पुर नई स्थापना
,, ,, घनौर ,,
,, ,, सूरजपुर ,,
,, ,, पंच कूला ,,
,, ,, वड़ौली फरीदाबाद ,,
,, ,, जय वर
,, ,, दादुपुर छावनी
,, ,, देव घर
,, ,, खिजरा वाद
,, ,, दादुपुर जटां
,, ,, लेदी
,, ,, लल्हाडी
,, ,, पोन्टा हिमाचल प्रदेश
,, ,, माजरा ,,
,, ,, कोलर ,,
,, ,, रेणुका ददाह ,,
,, ,, राजगट ,,
,, ,, नेहरी रतोली ,,
,, ,, कपाल सोचन ,,
,, ,, रानी पुर ,,
,, ,, रणजीत पुरा ,,

सूची करनाल आर्य समाजों की

1. आर्य समाज दयालपुरा जि० करनाल
2. ,, ,, सदर बाजार ,,
3. ,, ,, राम नगर ,,
4. ,, ,, प्रेमनगर ,,
5. ,, ,, झिझाडी ,,
6. ,, ,, मैंनी खुर्द ,,
7. ,, ,, मैंनी कलाँ ,,
8. ,, ,, सुलतानपुर ,,

9. " " खेडीनरू करनाल
10. " " दादूपुर "
11. " " स्यामगढ़ "
12. " " तरावडी "
13. " " नीलो खेडी "
14. " " पुंडरी "
15. " " वरसाना "
16. " " साछ "
17. " " वस्तली "
18. " " कौल "
19. " " फरल "
20. " " क्यौडक "
21. " " कमोहपुरा "
22. " " दहा "
23. " " ऊंचासिमना "
24. " " मनक "
25. " " पानीपत माडल टाऊन करनाल
26. " " फूंसगढ़ "
27. " " मोहद्दीपुर "
28. " " कुंजपुरा "
29. " " अन्द्री "
30. " " व्याना "
31. " " ऊमरी "
32. " " दिल्ली माजरा "
33. " " रामसरन माजरा "
34. " " मिर्जापुर "
35. " " सीदपुर "
36. " " कैथल करनाल मार्ग "
37. " " डी० ए० वी० महिला कालेज करनाल

हिमाचल प्रदेश

जिला कांगड़ा

डी० ए० वी० स्कूल काँगड़ा,

1. खाली
2. कांगड़ा
3. राजगढ़
4. पालमपुर
5. सालियाना
6. हमीरपुर
7. नूरपुर
8. नगरोटा टाका
9. सोलन
10. मंगवाल
11. धर्मशाला
12. सुजानपुर टोहरा
13. बनरोटा बगवां
14. जोगेन्द्र नगर
15. घनेटा
16. मटौरा
17. खुल्ला
18. मेढ़
19. जवाली
20. रेहनछतर
21. नादौन
22. भवारना
23. लव्याला
24. हरला
25. पाटा
26. बहादुरगढ़
27. नौराधार
28. सराहा
29. कुल्लू
30. अम्ब
31. घनेटा
32. बिलासपुर
33. उन्ना

जिला शिमला

1. लकड़ बाजार शिमला
2. कण्डाधार
3. अलीहगढ़

जिला मण्डी

1. मण्डी
2. नाहन
3. सराहां पलद

जम्मू

1. पुरानी मण्डी
2. वजीर बाग
3. राजोरी
4. बसोली
5. अखनूर
6. भिड़ताना
7. चुड़ाली
8. नया लिजवाना
9. मातन हैल
10. खण्डा खेड़ी
11. बोहर
12. डी. ए. वी- स्कूल नागबानी
13. ,, ,, श्रीनगर

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

बजट एक दृष्टि में

	अनुमानित 1978-79	वास्तविक 1978-79	अनुमानित 1979-80
कुल आय	128500	123931	200500
कुल व्यय	135650	128323	199800
	(—) 7150	(+) 43[illegible]2	(+) 1700

आय

सभा—	82,500	66,562	85,500
म० हं० साहित्य विभाग	30,000	35,037	40,000
महात्मा आनन्द स्वामी स्मा० निधि	—	1,812	50,000
आर्य जगत (साप्ताहिक)	16,000	20,520	25,000
योग—	1,28,500	1,23,931	2,00,500

व्यय

सभा	71,650	61,191	76,800
म० हं० साहित्य विभाग	28,000	31,605	38,000
म० आ० स्वामी स्मा० निधि	—	5,873	49,000
आर्य जगत (साप्ताहिक)	36,000	29,654	36,000
योग—	1,35,650	1,28,323	1,99,800

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001

अनुमानित बजट-1979-80

आय

विवरण	अनुमानिक 1978-79	वास्तविक 1978-79	अनुमानिक 1979-80
1. दशांश	6,500	3,780	5,000
2. वेद प्रचार समाजों तथा संस्थाओं,से	10,000	2,119	10,000
3. विविध	500	197	—
4. स्थायी कोष से ब्याज	15,000	23,293	25,000
5. ब्याज दयानन्द फाउन्डेशन फण्ड को धनराशि पर	30,000(वेद प्रचार)	30,000	30,000
6. दीपावली तथा शिवरात्रि फंड	500	140	500
7. अन्य महानुभावों से दान	20,000	—	—
8. महात्मा हंसराज दिवस	—	7,033	15,000
योग—	82,500	66,562	85,500

व्यय

विवरण	अनुमानिक 1978-79	वास्तविक 1978-79	अनुमानिक 1979-80
1. सभा के कर्मचारियों का वेतन	20,000	15,356	20,000
2. सभा के उपदेशकों का वेतन	15,000	13,104	22,500
3. भविष्य निधि	500	262	700
4. विविध	10,000	9,421	15,000
5. छपाई तथा मिश्रित	3,000	3,410	5,000
6. दूरभाष	2,0000	2,142	2,500
7. घाटा आर्य जगत साप्ताहिक	20,00	9,134	11,000
8. बैंक कमीशन	50	88	100
9. हाउस टैक्स तथा अन्य व्यय सम्पत्ति निजामुद्दीन दिल्ली	500	—	—
10. दशांश सार्वदेशिक सभा	600	—	500
11. वार्षिक अधिवेशन	—	1,352	500
12. महात्मा हंसराज दिवस	—	6,922	10,000
योग—	71,600	61,191	87,800

महात्मा हंसराज साहित्य विभाग

आय

1. पुस्तक विक्रय से आय	30,000	35,037	40,000
2. उधार शेष	—	10,920	—
3. स्टाक शेष	—	79,950	—
योग—	30,000	1,25,907	40,000

व्यय

1. पोस्टेज	3,000	2,241	3,000
2. नए प्रकाशन	25,000	26,039	30,000
६. बिल देने शेष	—	—	—
4. वेतन	—	3,325	5,000
योग—	28,000	31,605	38,000

महात्मा आनन्द स्वामी स्मारक निधि

आय

1. आय	—	1,812	50,000
योग—	—	1,812	50,000

व्यय

1. वेतन	—	4,500	6,000
2. अन्य	—	1,373	8,000
3. महात्मा आनन्द स्वामी साहित्य प्रकाशन उनके अनुरूप कार्य	—	—	35,000
योग—	—	5,873	49,000

आर्य जगत साप्ताहिक

आय

1. शुल्क	6,000	7,064	10,000
2. विज्ञापन	10,000	13,456	15,000
3. घाटा	20,000	9,134	11,000
योग—	36,000	29,654	36,000

व्यय

1. वेतन	6,000	3,470	6,000
2. कागज तथा छपाई	27,500	21,121	25,000
3. डाक तथा मिश्रित	2,500	5,063	5,000
योग—	36,000	29,654	36,000

आर्य अनाथालय फिरोजपुर छावनी

ब्यौरा आय वर्ष 1978-79

शीर्षक	अनुमानित आय 1978-1979		वास्तविक आय 1978-1979		अनुमानित आय 1979-80	
	रु०	पै०	रु०	पै०	रु०	पै०
1. दान	45,000	—	76,249	07	50,000	—
2. किराया	18,000	—	16,845	25	18,000	—
3. ब्याज	50,000	—	50,378	30	51,000	—
4. स्कूल दान	500	—			—	
5. डी०सी०एम०	6,000	—	7,285	45	7,000	—
6. भूमि की आय	10,000	—	11,072	30	12,000	—
7. राय साहब चेतनदास स्कोलर सिप	720	—	720	—	720	—
8. दूध डेयरी	2,000	—	1,956	40	2,000	—
9, स्त्रीधन				—	1,000	—
कुल—	132220	—	164506	77	141720	—

आर्य अनाथालय फिरोजपुर छावनी

ब्यौरा व्यय—वर्ष 1978-79

शीर्षक	अनुमानित व्यय 1978-79 रु०	पै०	वास्तविक व्यय 1978-79 रु०	पै०	अनुमानित व्यय 1979-80 रु०	पै०
वेतन आश्रम	25,000	—	26265	43	30,000	—
भोजन	40,000	—	47411	30*	60,000	—
वस्त्र	7,000	—	13063	93*	16,000	—
स्कूल	4,000	—	36	—	—	—
मरम्मत भवन	30,000	—	16,573	85	30,000	—
यज्ञशाला	—		—		—	
औषधि	1,500	—	493	15	1,500	—
डाक व्यय	300	—	516	15	600	—
विजली	6,000	—	6,836	10	7,000	—
छपाई	1,000	—	2,799	40	2,000	—
इक्युपमेंट	3,000	—	904	04	1,000	—
विविध	2,000	—	1,518	15	2,000	—
आडिट	400	—	306	75	400	—
शिक्षा आश्रम	4,000	—	5,549	08	7,000	—
ट्यूबवेल	8,000	—	1,284	50	1,500	—
राय साहब चेतनदास	720	—	720	—	720	—
स्त्रीधन	3,000	—	2,000	—	3,000	—
वकील खर्च	1,000	—	267	35	1,000	—
टेलीफोन	1,000	—	—		1,000	—
चावल स्टाक	2,000	—	—		—	
टी. ए. कंटीजेन्सी	---		1,327	—	2,000	—
	1,3,9920	—	1,27,872	18	1,66,720	—

*लगभग 4000 रु० का ईंधन स्टाक में रखा है

,, 2000 ,, चावल ,, ,, ,,

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा हरियाणा

अनुमानित बजट-1979-80

आय	रु० पैं०	व्यय	
1. दान	40,000 —	1. वेद प्रचार (दो भजनमंडलियाँ एवं एक विद्वान् की नियुक्ति)	52,500 —
2. किराया दुकानों से (कुरुक्षेत्र)	8,000 —	2. मार्ग व्यय	3,500 —
3. व्यक्तिगत सज्जनों से	2,500 —	3. स्टेशनरी या डाक खर्च	550 —
4. आर्य शिक्षण संस्थाओं से प्राप्त	8,000 —	4. कार्यालय व्यय	400 —
		5. वेतन वृद्धियाँ	2,000 —
		6. युवकों के लिए	2,000 —
		7. फुटकर	1,500 —
कुल—	58,500 —	कुल—	64,950 —

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उप-सभा पंजाब-चंडीगढ़

आय

विवरण	वास्तविक 1978-79	अनुमानित 1979-80
1. वेद प्रचार हेतु	19661 40	12000 —
2. किराया महात्मा हंसराज भवन	3600 —	3600 —
3. ब्याज	248 85	— —
कुल—	23510-25	15600 —

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा पंजाब-चंडीगढ़

व्यय

	वास्तविक 1978-79	अनुमानित 1979-80
1. वेतन	18627-40	19587 —
2. पत्र व्यवहार	193-01	250 —
3. स्टेशनरी	59-75	100 —
4. विज्ञापन	144 —	— —
5. दशांश	582 —	600 —
6. आर्य जगत	40 —	60 —
7. मार्ग व्यय	187-60	300 —
8. मरम्मत (भवन)	——	3000 —
9. फुटकर	286-56	300 —
कुल—	20120-32	24197 —

नोट-—घाटा दानी महानुभावों से दान लेकर पूरा करने का प्रयत्न किया जाएगा।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली

बजट 1978-79

आय		व्यय	
1. वेद प्रचार	8941 —	1. वेतन	8800 —
2. सभा द्वारा प्राप्त	1250 —	2. फुटकर	1111 —
3. शेष 31-3-78	1064 —	3. महात्मा हंसराज दिवस	375 —
		4. श्री वेदव्यास जी कर्जा	800 —
कुल आय—	11255 —	कुल व्यय—	11086 —

आव्हान

विगत शताब्दी में महर्षि दयानन्द सरस्वती भारतीय क्षितिज पर नवजागरण के जाज्वल्यमान नक्षत्र बन कर उदित हुए। अपने दिव्य व्यक्तित्व तथा भव्य कृतित्व से महर्षि दयानन्द सरस्वती ने चहुमुखी क्रान्ति का सूत्रपात किया। महर्षि दयानन्द सरस्वती भारत के अतीत गौरव के पक्षधर तथा महिमामंडित भविष्य के सूत्रधार बन कर उभरे।

नाना मतमतान्तरों एवं विचार धाराओं की चुनौती को अंगीकार कर महर्षि ने युगों-युगों से लुप्त वैदिक ज्ञान-विज्ञान की परम्परा का परिष्कार कर एवं पतनकारी गरिमाहीन दीन हीन परम्परा का वहिष्कार कर भारत की सुप्त चेतना में स्वाभिमान का बीज बोकर नवजीवन का संचार किया।

महर्षि दयानन्द के दिवंगत हो जाने के बाद घनघोर निराशा के वातावरण तथा अन्धकाराच्छन्न अवस्था में महात्मा हंसराज जी ने अपने अनुपम बलिदान से आलोक का दीप प्रज्वलित कर नव आशा की किरणों को चारों ओर विकीर्ण किया। महात्मा हंसराज जी ने पंजाब में डी० ए० वी० संस्थाओं के लिए प्रकाशस्तम्भ का काम किया और आर्य समाज के आन्दोलन को दिशा देने के लिए तथा गतिमान करने के लिए, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की स्थापना की।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा ने महात्मा हंसराज जी के नेतृत्व में 135 के लगभग विद्वान् उपदेशकों तथा भजनोपदेशकों के सहयोग से पंजाब में वैदिक धर्म का डंका बजा कर आर्य समाज का स्वर्णकाल समुपस्थित कर दिया था। तप-त्याग-प्रेम एवं श्रद्धा की छाप उस समय के आर्य समाज पर अमिट रूप से अंकित है।

हमें यह कदापि नहीं भूलना चाहिए कि हम इस महान विरासत के उत्तराधिकारी हैं। आज के बदले हुए सन्दर्भ में अपनी गौरवमयी परम्परा एवं विरासत का बुद्धिसंगत तथा युगसंगत प्रस्तुतीकरण का दायित्व हम पर आ पड़ा है। आधुनिक वैज्ञानिक यातायात तथा संचार व्यवस्थाओं के कारण अपनी बात को विश्व तक पहुंचाना सुगमतर हो गया है।

इस बात से भी बड़ी आशा उत्पन्न होती है कि आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा को श्री सूरजभान जी महान शिक्षा शास्त्री, महर्षि भक्त एवं निष्ठावान आर्य समाजी का स्वच्छ तथा प्रेरक नेतृत्व उपलब्ध है। सभा को अन्य सहयोगी कार्यकर्त्ताओं की कार्य क्षमता तथा योग्यता में पूर्ण विश्वास है। आर्य जनता में भी प्रेम-श्रद्धा तथा त्याग की न्यूनता नहीं।

तो फिर यह आशा करना कोई दिवास्वप्न न होगा कि आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, महर्षि के मिशन को देश-देशान्तर, द्वीप-द्वीपान्तर में आगे आने वाले समय में प्रसारित-प्रचारित करनेमें सफल होगी।

अन्त में, परम पिता परमात्मा से विनम्र प्रार्थना है वह अपनी अपार अनुकम्पा से हम सब में साहस तथा पराक्रम भर दे ताकि प्रेम एवं बन्धुत्व, साहचर्य एवं मानवता के विश्व का निर्माण कर हम सब अपने जीवन को सार्थकता प्रदान करें।

धन्यवाद

सर्व प्रथम मैं सभा प्रधान आदरणीय लाला सूरजभान जी का बहुत ही आभारी हूं, जिनके मार्ग दर्शन में, मैं सभा का कार्य कर रहा हूं। यदि उनका कुशल नेतृत्व मेरे साथ न होता तो इस वर्ष मैं सभा की आर्थिक स्थिति, वेद प्रचार, महात्मा हंसराज साहित्य विभाग तथा आर्य जगत (साप्ताहिक) के कार्य में जो वृद्धि हुई है, वह न हो पाती। प्रधान जी के ही कुशल नेतृत्व में प्रचार तथा प्रसार विभाग द्वारा सभा के अनेक कार्यक्रम आकाशवाणी तथा देश भर के दैनिक पत्रों में समय-समय पर प्रसारित तथा प्रकाशित किए गए, मैं यह निःसंकोच कह सकता हूं कि सभा ने आज जो अपनी प्रतिष्ठा सम्पूर्ण आर्य जगत में बनाई है उसका एक मात्र श्रेय हमारे सभा प्रधान लाला सूरजभान जी को ही है। उनका प्रखर अनुभव तथा दूरदर्शिता हमारे लिए महान उपयोगी सिद्ध हो रही है।

मैं पूज्यपाद महात्मा अमर स्वामी जी का भी आभारी हूं जो प्रत्येक सप्ताह आर्य जगत (साप्ताहिक) के लिए सम्पादकीय लेख लिख कर हमारा मार्ग दर्शन करते हैं। स्वामी जी ने अपने अनथक परिश्रम तथा गहरी सूझ-बूझ से प्रादेशिक सभा का इतिहास भी लिखा है जो निकट भविष्य में प्रादेशिक सभा के द्वारा प्रकाशित कराया जा रहा है। स्वामी जी जहाँ कहीं प्रचारार्थ जाते हैं वहां पर सभा का भी प्रचार करते हैं।

मैं सभा के सह मंत्री श्री खेमचन्द जी महता का आभारी हूं जिन्होंने अपनी वृद्धावस्था में भी अनेक बार फिरोजपुर जा जा कर तथा वहाँ पर कई-कई सप्ताह रह कर आर्य अनाथालय फिरोजपुर के कार्य को आगे बढ़ाया है। इसके अतिरिक्त भी सभा के प्रत्येक कार्य में वह अपना क्रियात्मक सहयोग हमें प्रदान करते रहे। सप्ताह में दो-तीन बार सभा कार्यालय में आकर जिस लगन-परिश्रम तथा आत्मीयता के साथ सभा का कार्य देखते हैं, उससे मुझे बहुत ही सहायता मिलती है।

मैं इस अवसर पर आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की उप सभाओं के प्रधानों, मंत्रियों तथा अन्य अन्तरंग सदस्यों का भी हार्दिक आभारी हूं जिन्होने इस वर्ष सभा के वेद प्रचार के कार्य तथ उप सभाओं की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने में अपना अमूल्य सहयोग प्रदान किया

मैं मान्य श्री रामदास जी खोसला-सभा कोषाध्यक्ष का भी आभारी हूं जिन्हों ने अत्यन्त व्यस्त होने पर भी सभा के आय-व्यय का हिसाब सुचारु रूप तथा सु-व्यवस्थित ढंग से रखा। इस कार्य में उनका मेरे लिए अमूल्य सहयोग प्राप्त हुआ है।

श्री ब्रह्मदत्त शर्मा-संयोजक-आर्य अनाथालय फिरोजपुर, श्री रामचन्द्र आर्य अधिष्ठाता तथा उप समिति के अन्य समस्त सदस्यों का भी आभारी हूं जो आर्य

अनाथालय फिरोजपुर की प्रबन्धकीय व्यवस्था में अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करते रहे हैं, इन सभी लोगों के ही सहयोग से आर्य अनाथालय के कार्य में आशातीत वृद्धि हुई है।

मैं इस अवसर पर सभा के उप प्रधान श्री दरबारी लाल जी के प्रति भी अपना हार्दिक आभार प्रकट करता हूं जिन्होंने हमारी सहायता प्रत्येक अवसर पर अपनी गहन सूझ-बूझ तथा प्रशासनिक क्षमता के साथ की। किसी भी प्रकार की सभा के ऊपर जब-जब भी बाधाएँ आई, श्री दरबारी लाल जी ने बिना कुछ सोचे विचारे उन बाधाओं को दूर करने के लिए अपना तन-मन तथा धन सभा के लिए समर्पित कर दिया। अनेक समस्याओं को सुलझाने में भी उन्होंने मेरी भरपूर सहायता की है। इसी प्रकार सभा के पूर्व कार्यकर्त्ता प्रधान श्री मुलखराज भल्ला तथा श्री शान्ति नारायण जी उप प्रधान, प्रि० आर० एन० महता, प्रि० सी० एल० अरोड़ा उप प्रधान, राय बहादुर चौधरी प्रताप सिंह (करनाल), श्री अमृतलाल पुरी उप प्रधान, श्री विद्यासागर वैद्य मंत्री-उप सभा, कुमारी विद्या आनन्द उप प्रधान, प्रि० सी० एल० अरोड़ा जालंधर गणेश दास जी उप मंत्री, श्री गिरीशचन्द्र जी खोसला, प्रि० रमेशचन्द्र जी जीवन (कांगड़ा) – उप मंत्री, श्री मदन लाल तथा श्री प्रेम कृष्ण भारद्वाज (कार्यालयाध्यक्ष – डी० ए० वी० कालेज मैनेजिंग कमेटी) के प्रति भी मैं अपना हार्दिक आभार व्यक्त करना अपना कर्त्तव्य समझता हूं जिनका सहयोग मुझे सभा के कार्य संचालन में हर समय प्राप्त हुआ है।

मैं अपनी सभा के वयोवृद्ध नेता डा० जी० एल० दत्ता—पूर्व प्रधान-सभा का भी अत्यन्त आभारी हूँ जिन्होंने समय-समय पर मेरा मार्ग दर्शन किया तथा सभा के वेद प्रचार के कार्य में हमें अपना मूल्यवान सहयोग प्रदान किया। इसी प्रकार अपने नवयुवक साथी श्री तिलकराज गुप्ता (प्रधानाचार्य) तथा प्रिंसिपल श्री मोहन लाल जी मंत्री आर्य समाज, मन्दिर मार्ग–नई दिल्ली का भी आभारी हूं जिन्होंने सदैव मेरे साथ रह कर मुझे अपना सहयोग प्रदान किया।

मैं श्री ओ० पी० गोयल मैनेजिंग डाइरेक्टर—साउथ इस्टर्न रोडवेज का भी आभारी हूं जिन्होंने आर्य जगत के लिए अपने मूल्यवान विज्ञापन प्रदान किए तथा ग्राहकों की संख्या में वृद्धि करने के लिए अपना सहयोग प्रदान किया।

सभा के अन्तरंग सदस्यों, तथा प्रतिष्ठित सदस्यों का भी मैं आभारी हूं जिन्होंने सभा के प्रत्येक कार्य संचालन में हमें अपना सहयोग सदैव प्रदान किया।

यदि में डी० ए० वी० कालेज के प्रधानाचार्यों तथा स्कूलों के प्रधानाध्यापकों का भी धन्यवाद न करूं तो उनके प्रति में समझता हूं बहुत बड़ा अन्याय होगा। इन सभी बन्धुओ ने केवल हमारी अपीलों पर ही विपुल धनराशि सभा के लिए एकत्रित करने में सहायता की तथा सभा के प्रत्येक उत्सव में अपना अपना क्रियात्मक सहयोग

प्रदान किया । सभा की अनेक योजनाओं को कार्यान्वित करने में भी इन बन्धुओं का मुझे पूरा पूरा सहयोग प्राप्त हुआ है ।

सभा के वेद प्रचार अधिष्ठाता, आचार्य पुरुषोत्तम जी पंडित सत्यप्रकाश जी महोपदेशक, श्री श्याम नारायण जी, श्री मनोहर लाल जी भजनोपदेशक, श्री वेद व्यास जी भजनोपदेशक, तथा श्री हरिदत्त जी भजनोपदेशक का भी अति आभारी हूं जिन्होंने प्रचार कार्य में अपना सहयोग प्रदान किया ।

मैं कार्यालयाध्यक्ष श्री मगनानन्द जी के प्रति भी अपना हार्दिक आभार प्रकट करता हूं जो पिछले 0 सालों से सभा के कार्यालय का कार्य बड़े ही सुचारू तथा सुव्यवस्थित ढंग से करते चले आ रहे हैं । सभा के अन्य कर्मचारी श्री साधूराम जी, (लिपिक), श्री गजेन्द्र जी सेवक, श्री राकेश (सेवक) श्री सोहनलाल जी पार्ट टाइम टाइपिस्ट तथा श्री चिरंजी लाल जी पार्ट टाइम एकाउन्टेन्ट के प्रति भी अपना हार्दिक आभार प्रकट करना कर्तव्य समझता हूं ।

मैं श्री गिरीशचन्द्र जी खोसला प्रबन्ध सम्पादक आर्य जगत (साप्ताहिक) का भी आभारी हूं जिन्होंने आर्य जगत के प्रकाशन तथा अन्य अनेक कार्यों में हमारी सहायता की ।

आचार्य भगवान देव जी के प्रति भी मैं अपना हार्दिक आभार प्रकट करता हूं जो महात्मा आनन्द स्वामी स्मारक निधि के संयोजक के पद का कार्य भार बड़ी निपुणता के साथ सम्पन्न कर रहे हैं साथ ही सह सम्पादक आचार्य कृष्ण चन्द जी के पश्चात आर्य जगत के प्रकाशन में हमें अपना सहयोग प्रदान कर रहे हैं । आर्य जगत के समय समय पर प्रकाशित होने वाले विशेषाँकों में उनका जो हमें सहयोग प्राप्त हुआ है वह अकथनीय है ।

अन्त में मैं उदार दानवीर महानुभावों तथा विशेष कर डी० ए० वी० संस्थाओं के संचालकों, प्रबन्धकों, प्रमुख व्यक्तियों, प्राचार्यों एवं प्राध्यापकों के प्रति भी अपना हार्दिक आभार प्रकट करता हूं जिन्होंने सभा की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ तथा सम्पन्न बनाने में अपना अपना पूरा पूरा सहयोग प्रदान किया । इन सभी बन्धुओं का सहयोग सभा के प्रति अपनी सेवा, श्रद्धा, उदारता और क्रियात्मक रूप से अपनी महत्ता तथा त्याग का परिचय है । सभा उन सभी प्रेमी तथा श्रद्धालु सज्जनों के प्रति हृदय से कृतज्ञता एवं आभार प्रकट करती हुई उनका कोटिशः धन्यवाद करती है और परमात्मा से प्रार्थना करती है कि सर्वत्र इसी प्रकार सभा के प्रति सभी मित्रों में कर्तव्य एवं सहयोग निष्ठा की भावना जाग्रत रहे जिससे सभा कार्य रूप यज्ञाग्नि अबाध रूप से सर्वत्र प्रचण्ड रहे ।

हमारे कर्मठ नेता सभा के उप-प्रधान श्री जगन्नाथ जी कपूर तथा श्रीमती कमला जी वर्मा भूतपूर्व स्वास्थ्य मन्त्री हरियाणा सरकार एवं प्रि० एच० सी० भगत जी सरीखे कार्यकर्त्ताओं का अत्यन्त आभारी हूं जिन्होंने हर प्रकार से सभा की अमूल्य सहायता की।
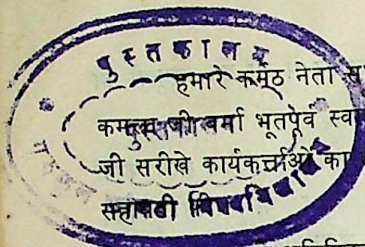
इन सबके अतिरिक्त मैं आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग नई दिल्ली के समाज पदाधिकारियों, प्रतिष्ठित तथा अन्तरंग सदस्यों का भी अत्यधिक आभारी हूं जिन्होंने सभा कार्यालय हेतु अपने भवन में स्थान प्रदान किया तथा सभा के प्रत्येक कार्य एवं योजनाओं तथा कार्य क्रमों में उनका अपेक्षित सहयोग हमें सदैव प्राप्त होता रहा है।

सूरजभान
प्रधान

रामनाथ सहगल
सभा मंत्री

महात्मा हंसराज साहित्य विभाग:-

	मूल्य
१. सन्धा पर व्याख्यान—महात्मा हंसराज जी	४-५०
२. महात्मा हंसराज जीवनी—महात्मा आनन्द स्वामी	६-००
३. डा० जी० एल० दत्त अभिनन्दन ग्रन्थ-	१२-५०
४. सामवेद भाष्य—आचार्य वैद्य नाथ जी	२०-००
५. स्वाध्याय संग्रह हिन्दी – प्रि० दिवान चन्द जी	२-००
६. स्वाध्याय संग्रह अंग्रेजी—प्रि० दिवानचन्द जी	२-००
७. दयानन्द एन इन्टरप्रीटेशन—प्रो० एच०एल० औलक	१-००
. दयानन्द शतक—प्रि० दिवान चन्द जी	३-००
मुण्डक उपनिषद—प्रि० दिवान चन्द जी	४-००
. वेदोपदेश – प्रि० दिवान चन्द जी	४-५०
जीवन ज्योति—प्रि० दिवान चन्द जी	३-००
महर्षि दर्शन—प्रि० दिवान चन्द जी	४-००
दयानन्द हिज लाईफ एण्ड वर्क -डा. सूरज भान जी	५-५०
भक्ति सुधा डा० सूरजभान जी	२-००
वैदिक सत्संग – सभा द्वारा प्रकाशित	१-७५
अमर स्वामी अभिनन्दन ग्रन्थ —श्री विक्रमसिंह	१२-००
ट्रैक्टमाला—ज्ञानी पिण्डी दास जी	६-००
वैदिक धर्म मुझे क्यों प्यारा है—श्री रामचन्द्र मेहता	१-५०
षड्दर्शन समन्वय—स्वर्गीय श्री बुद्धदेव मीरपुरी	१-२५
ईशोपनिषद – श्री खेम चन्द जी मेहता	०-६०
अमर सन्देश भाग-१—श्री रामचन्द्र थापर	२-७५
अमर सन्देश भाग-२, —-रामचन्द्र जी थापर	२-००
त्यार्थ प्रकाश भाष्य द्वितीय श्री वाचस्पति	०-५०
ोग मुक्त प्रकाश – आचार्य भगवान देव जी	३-००
ानव समाज व्यवस्था—पं० देवप्रकाश जी	०-५०
ऋषि गाथा—श्री विमल चन्द्र विमलेश	२०-००
योग मन्दिर विशेषांक—प्रकाशवीर शास्त्री	१५-००
पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री स्मृति ग्रन्थ	५१-००
नैरोबी विशेषांक सभा द्वारा प्रकाशित	४-००
महात्मा हंसराज स्मृति अंक	२-००
महात्मा आनन्द स्वामी विशेषांक	२-००
शिवरात्री विशेषांक सभा द्वारा प्रकाशित	२-००
अमृतसर शताब्दी समारोह अंक	२-००
चन्द्रगुप्त मौर्य प्रि० श्रीराम शर्मा	०-५०

ाभान	रामनाथ सहगल	प्रि० कु० विद्यावती आनन्द
प्रधान	सभा-मंत्री	अवैतनिक अधिष्ठाता

महात्मा हंसराज साहित्य विभाग

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग नई दिल्ली-११०००१

महात्मा आनन्द स्वामी स्मारक निधि

दिल खोल कर दान दें।

१-५-१०-१०० के नोट प्रकाशित हो गए हैं। निम्न योजनाओं को साकार रूप देने के लिए आपका सहयोग चाहिए।

१—विदेशों में सुयोग्य विद्वानों को वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार के लिए भेजने की व्यवस्था करने के लिए।

२—आर्य समाजों में सुयोग्य पुरोहितों की आवश्यकता की पूर्ति करने के लिए।

३—असहाय विद्वान संन्यासियों के रहने तथा भोजन आदि की व्यवस्था करने के लिए।

४—शिक्षा संस्थाओं में आर्य विचार के शिक्षकों की पूर्ति करने के लिए।

५—आर्य समाज में आध्यात्मिकता की ज्योति जलाने के लिए योग साधना शिवरों की व्यवस्था करने के लिए।

६—महात्मा आनन्द स्वामी के साहित्य को सुन्दर और सस्ता प्रकाशित करने के लिए।

७—वेद मंत्रों एवं अच्छे गीतों के रिकार्ड तैयार करने के लिए।

८—जनजाति, पिछड़े क्षेत्र में विद्यालय, अस्पताल, छात्रावास, रोगकेन्द्र आदि परोपकार के कार्य करने के लिए।

९—दिल्ली तथा तमाम प्रान्त के मुख्य केन्द्रों में आर्य विद्वानों के रखने, भोजन आदि के लिए मुफ्त केन्द्र खोलने के लिए।

विद्यार्थियों में धार्मिक परीक्षाओं का प्रचार करने आदि के लिए आपके तन-मन-धन की आवश्यकता है।

कृपया सभा कार्यालय से नोट शीघ्र मंगवाकर धन संग्रह का कार्य शुरू कर दें।

निवेदक

सूरजभान	दरबारीलाल	रामनाथ सहगल	भगवानदेव
प्रधान	उपप्रधान	मंत्री	संयोजक

महात्मा आनन्द स्वामी स्मारक निधि

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मन्दिर मार्ग नई दिल्ली-११०००१ दूरभाष-३४३७१८